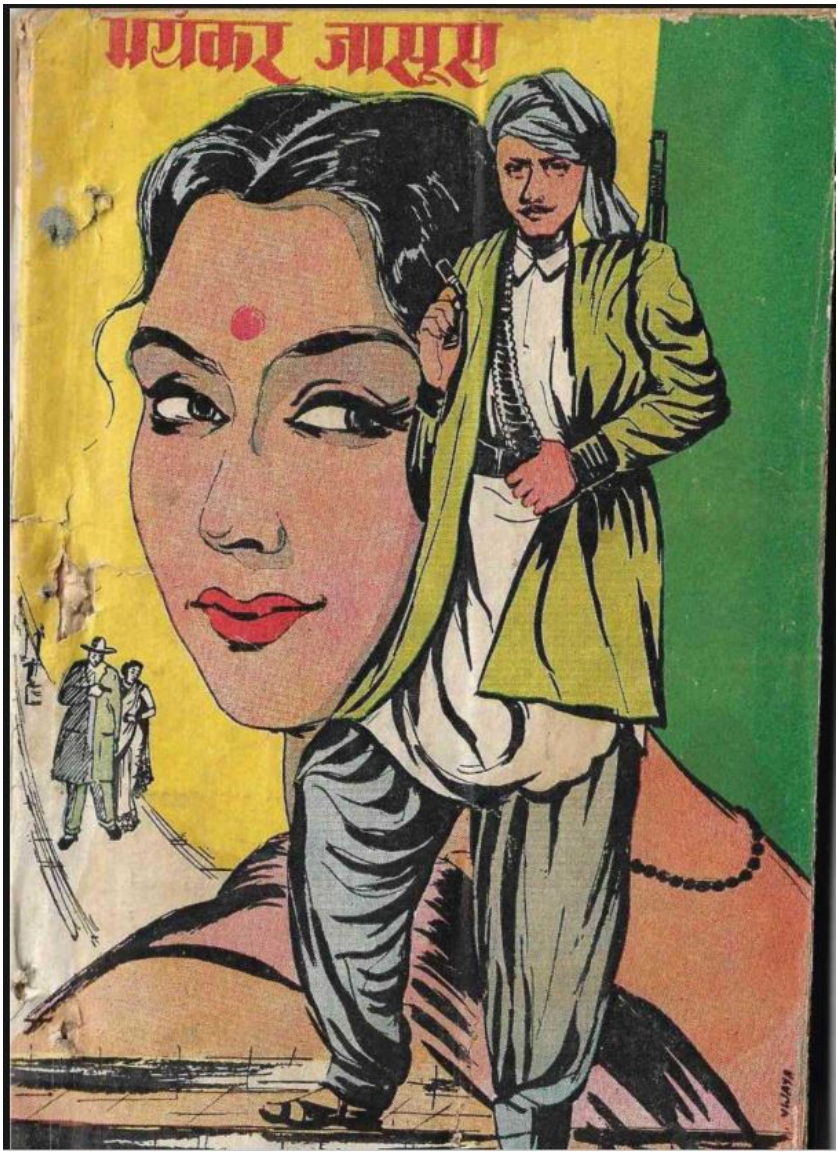
शंकर जासूस

रहस्य रोमांच व सनसनी-
खेज घटनाओं से पूर्ण
अंक

लेखक
श्रीनकाबपोशभेदी

इस अंक
में
-: पढ़िये :-

जासूस

सम्पादक
जगदंबा

जासूसी फंदा

वार्षिक — १२

अंक — ६

मूल्य ६० नया पैसा

जासूसी फन्दा

लेखक - श्री नकाबपोश भेदी

1963

उस रात इन्स्पेक्टर वर्मा को कुछ काम नहीं था। दो ही दिन पहले वे एक भयानक षड्यन्त्र का पता लगा कर निवृत हुये थे । उसी दिन उनका सहकारी रमेश १५ दिन की छुट्टी लेकर बाहर चला गया था। शाम को भोजन करने के बाद सिनेमा देखने चले गये थे। वहाँ से टहलते हुए वे अपने फ्लैट की ओर जा रहे थे । सिनेमा खत्म होते ही बड़े शहरों में कम से कम सुबह चार बजे तक के लिये सन्नाटा छा जाता है। जरूरी सामान लाने ले जाने वाली एक दो गाड़ियां आती-जाती हैं।

वर्मा जी अपने फ्लैट से करीब दो फर्लाङ्ग की दूरी पर थे जब कि एक बड़ी कार उनके पीछे से और कुछ आगे जाकर खड़ी हो गई । उसमें से एक आदमी उतरा और बोनट खोलकर इस तरह देखने लगा मानों इंजन में कुछ खराबी हो गयी हो। वर्मा जी ने इस पर ध्यान भी नहीं दिया और बेफिक्री के साथ उस आदमी के बराबर से निकले। जैसे ही एक कदम आगे गये कि किसी ने पिस्तौल उनकी पीठ में लगा कर कहा-

"आगे बढ़ने की कोशिश न करना ही तुम्हारे हक में अच्छा होगा। यह तो समझ गये होगे कि मेरे हाथ में क्या है और उससे क्या काम लिया जा सकता है ?"

"मैं सब कुछ समभता हूँ! सांथ यह भी समझता हूँ कि यह

६]

व्यवहार मेरे साथ क्यों किया जा रहा है। मगर किसी शरीफ आदमी के साथ बातें करने का यह कायदा नहीं।" कहते-कहते वे घूमकर उस आदमी के सामने हो गये। देखा वह एक भड़कीली सूट वाला नवयुवक है। पिस्तौल हाथ में लिये बड़ी निर्भीकता से मुस्कुरा रहा है। उसका आशय समझ कर भी वर्मा जी ने बड़ी सरलता से पूछा-

"कहाँ ले जाना चाहते हो मुझे ?"

"इतने दूरन्देश न होते तो आपकी तलाश ही क्यों की जाती ? कह कर वह आदमी पीछे हटा और बायें हाथ से गाड़ी की पिछली खिड़की खोलकर खड़ा हो गया। वर्मा जो बगैर हिचकि-चाये ही गाड़ी में बैठ गये। अन्दर दो आदमी बैठे थे। उन्होंने इनको अपने बीच में बिठा लिया। वह पिस्तौल धारी अगली सीट पर ड्राइवर के बराबर बैठ गया। ड्राइवर ने इन्जन स्टार्ट करके गाड़ी घुमाई और उसी रास्ते पर चला गया जिस तरफ से आया था। कुछ दूर जाने के बाद वह पिस्तौल धारी युवक बोला-

"हम लोगों ने आपको कोई तकलीफ नहीं पहुँचाई है न हमारा इरादा ही है। अगर आप हमारा काम कर देंगे तो हम यह वादा भी करते हैं कि बिना तकलीफ आपको वापिस पहुँचा भी देंगे। इस तरह ले जाने की इस माफी भी मांगते हैं मगर राजी से शायद आप जाने को तैयार भी नहीं होते।"

"यह नजूम कैसे लगा लो तुम लोगों ने। बहरहाल चलना कहाँ होगा। ले कहाँ जा रहे हो तुम लोग मुझे ?"

"बा० जंग शमशेर बहादुर आपसे मिलना चाहते हैं !"

यहं नाम उनके लिये बिल्कुल ही नया नहीं था। जंग शमशेर का असली नाम बुलबुल या बुलाकी दास था और वह एक नौक-रानी की जार सन्तान था। किसी प्रकार उसने बी० ए० की पढ़ाई पास कर ली थी। उसके बाद जर्मन युद्ध के समय पानी

[७

की तरह रुपया कमाया था। कितने ही आदमी लड़ाई में भर्ती कराये। उस कमाई में कितने कारो बार खोले। कितने आदमियों को नौकर रखा । कितने बदमाशों को शरण दी। शहर के कई शराब खानों और होटलों में भी उसका पैसा लगा हुआ था ।

वर्मा जी को यह भी याद आ गया कि किसी कारण से इस आदमी की फोटो भी एक दो अखबारों में छपी थी उस फोटो की एक-एक बात उनकी आँखों के सामने नाच रही थी। मगर इन सब बातों के होते हुए भी यह सोच रहे थे कि यह आदमी इतनी रात को मुझसे किस लिये मिलना चाहता है। मिलने का तरीका भी अजीब निकाला है बहरहाल मुलाकात होने तक अपनी उत्सुकता को रोक रखने के सिवा और कोई उपाय नहीं था। वे चुप बैठे रहे।

उस रात के सन्नाटे में गाड़ी एक दो ट्रक और टैक्सियों का सामना करती हुई तेजी से चली जा रही थी। थोड़ी दूर के बाद गाड़ी मिल ऐरिया की तरफ घूमी और कई बिल्डिगें पार करके एक फाटक पर जा खड़ी हुई। हार्न की आवाज सुनते ही. संतरी ने फाटक खोल दिया। गाड़ी अन्दर दाखिल हो गयी दाखिल होते ही तेल की गन्ध आई। मालूम हो गया कि यहाँ कई चीजों का तेल निकाला जाता है। लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम था कि यह तेल मिल भी जंग शमशेर की ही है। इस समय गाड़ी एक सीमेन्ट के रास्ते पर चल रही थी। कुछ दूर जाकर एक तरफ बने हुये गैरेज के सामने रुकी। वहाँ भी एक आदमी ने गैरेज का फाटक खोल दिया। गाड़ी गैरेज के अन्दर चली गई। गैरेज औसत दर्जे से बहुत ज्यादा बड़ा था। गैरेज के अन्दर सब लोग गाड़ी से उत्तरे । वर्मा जी को भी उतारा गया, पिस्तौल धारी युवक के हाथ में अब भी पिस्तौल तना हुआ था। उसी से उसने वर्मा जी को एक तरफ चलने का इशारा किया। वे उसी तरफ

८]

चलने लगे। जूतों की ऐड़ियां खटाखट बोल रही थीं। इससे अन्दाज यह हुआ कि रास्ता सीमेन्ट का ही बना हुआ है।

लगभग एक फर्लाङ्ग चलने के बाद ये पार्टी एक तिमंजिली बिलिङ्ग के हाल में आकर लिफ्ट के सामने खड़ी हो गई। उतनी रात को लिफ्ट चलने का कोई कारण नहीं था मगर ऐसा मालूम हुआ कि लिफ्ट वाले को खास तौर से रोका गया है। उसने इन लोगों को देखते ही लिफ्ट का दरवाजा

खोल दिया। सब लोगों के दाखिल हो जाने के बाद उसने दरवाजा बन्द किया और बटन दबाकर लिफ्ट को ऊपर जाने दिया। तीसरी मंजिल पर पहुँच कर लिफ्ट रुक गई, ये लोग बाहर निकले, गैलरी में हल्की रोशनी हो रही थी। उसी पिस्तौल धारी ने एक तरफ संकेत करके कहा- "इस तरफ चलिये।"

वर्मा जी चलने लगे ! दस-पन्द्रह कदम के बाद एक दरवाजा आया। वह बन्द था। वर्मा जी ने उस पर १ नम्बर की तख्ती लगी देखी। उसी व्यक्ति ने इनसे कहा- "वर्मा इसी दरवाजे के अन्दर चले जाइये।"

वर्मा जी हैन्डिल घुमा कर दरवाजा खोला और अन्दर चले गये उनके अन्दर जाते ही उस व्यक्ति ने पीछे से दरवाजा बन्द कर लिया। वर्मा जी ने एक बार पीछे देखकर फिर सामने की तरफ देखा। खिड़की के पास एक काफी बड़ी मेज लगी हुई थी उस पर दफ्तर का बढ़िया जरूरी सामान लगा हुआ था मेज के उस पार चमड़े की गद्दीदार कुर्सी पर एक मनुष्य का शरीर मौजूद है। वह जीवित नहीं है यह तो पहली ही नजर में पता लग गया कारण कि उस व्यक्ति के माथे में एक छेद साफ-साफ दिखाई दे रहा था जो किसी भी हालत में गोली के सिवा और किसी चीज का नहीं हो सकता था। अखबार वाली फोटो का ध्यान करते हुये उन्हें यह निश्चय भी हो गया कि यह मनुष्य जंग शमशेर तो नहीं है

[&

मगर चेहरे का काट साफ बता रहा था कि वह भी नैपाली ही है।

रात के दो बजे तीन मंजिल के ऊपर ! बन्द कमरे में एक बैठी हुई लाश के सामने अपने होश-हवास सही रखना भी मामूली काम नहीं था पर वर्मा जी को तो ऐसी बातों का सामना प्रायः करना ही पड़ता था। वे कुछ आगे बढ़कर लाश को ध्यान से देखने लगे, लाश जंग शमशेर की न होते हुये भी उससे बहुत मिलती जुलती थी। वे सोचने लगे, अगर यह व्यक्ति जंग शमशेर है तब तो कहने वाले ने झूठ कहा। मरा हुआ मनुष्य कैसे किसी से मिल भी सकता है, और अगर यह जंग शमशेर नहीं है तो मुझे बुलाया

किसने ! अलावा इसके यह ख्याल भी था कि मिलने के लिये मुझे एक मरे हुये व्यक्ति के पास क्यों भेजा गया ? क्या इसमें भी कोई रहस्य है।

इन्हीं विचारों में वे निमग्न हो रहे थे जब कि उन्हें ऐसा भास हुआ कि कमरे में सिर्फ वे और लाश ही नहीं है बल्कि कोई और भी है। वे मेज की तरफ बढ़ते-बढ़ते रुक गये और धीरे-धीरे नजर घुमाने लगे, कमरे में एक तरफ एक और भी दरवाजा था। जिस पर एक खूबसूरत पर्दा लटक रहा था, पर्दे के पीछे कमरे में होने वाली रोशनी दिखाई दे रही थी। उसमें इनको पर्दे के पास ही एक आदमी खड़ा दिखाई दिया। उसके स्थिर खड़े रहने से इन्होंने यह अनुमान किया कि वह एक टक इन्हीं की ओर देख रहा है। इन्होंने भी अपनी दृष्टि उसी पर जमा दी, कुछ क्षण के बाद पर्दा हटाकर वह मनुष्य बाहर आया और बड़े सधे हुये कदमों से इनकी तरफ बढ़ने लगा। इसे देखते ही वो पहचान गये कि जंग शमशेर यही है। उसी क्षण उस व्यक्ति ने कर्कश स्वर में कहा- "तुम हमको जानते होंगे जी ! हम हैं जंग शमशेर बहादुर और हम तुमको पहचानते हैं । तुम हो बम्बई का मशहूर जासूस इंस्पे० वर्मा और तुम्हारे सामने लाश मौजूद है हमारे पिता

२०]

अनंग शमशेर बहादुर की। यह ही है वह काम जिसके लिये तुमको इस वक्त यहाँ बुलाने की जरूरत पड़ी है जी। हमारे सामने यह बड़ी टेढ़ी समस्या खड़ी होकर रह गई है।"

वर्मा ने एक क्षण उसकी तरफ देखकर पूछा- "समस्या से मतलब क्या है तुम्हारी ?"

'मतलब भी बताये देता हूँ। जरा मुझे बैठ जाने दो जी !" छड़ी का सहारा लेकर वह एक कुर्सी की तरफ बढ़ा और उस पर बैठ जाने के बाद बोला ।

"यह तो तुम देख ही रहे हो जी कि मेरे पिता की मृत्यु हो चुकी है। उनका एक यानी दाहिना हाथ तुमको नहीं दिखाई दे रहा है जी, उसके अन्दर में

एक रिवाल्वर फंसा हुआ है । वो आज ही शाम को चलाया गया जैसा जान पड़ता है जी। उनके माथे पर का निशान, मेरा मतलब है गोली का छेद तो तुम देख रहे हो जी। ऐसा मालूम होता है कि इन्होंने आत्म हत्या की है लेकिन यह असल में हत्या की गई है जी, इनका किसी ने कतल किया है जी।"

कुछ क्षण तक दोनों चुप रहे, वह फिर कुहने लगा- "यहाँ बहुत से लोग हैं जी, जिनका हमारे पिता की मृत्यु देखने की बहुत बड़ी लालसा थी जी। वे बड़ी वेबसी से इस बात का इन्तजार करते थे जी और कुछ लोग उनको मारने की भी फिक्र में थे जी। आपको खूनी की तलाश करना है जी जिसके लिये आपको तीन दिन दिये जाते हैं। इतने समय के अन्दर खूनी का पता लगना ही चाहिये जी। मैं इस काम में जिस प्रकार से आपकी सहायता कर सकता हूँ उसके लिये बड़ी खुशी से तैयार हूँ जी।"

वर्मा जी क्रोध में तो शुरू से ही थे। इस समय इस प्रकार की बातें सुन कर और भी कुढ़ गये और बोले- "मगर मुझे ऐसे कामों से कोई दिलचस्पी होती नहीं है।"

[११

यह सुनते ही जंग शमशेर ने आंखें फाड़कर इनकी तरफ देखा फिर अपने कर्कश स्वर में बोला- 'ऐसी बातों से काम नहीं चलेगा जी तुमको दिलचस्पी लेनी ही पड़ेगी। तुम नहीं जानते जो मैं अपना काम अपने ढंग से कराया करता हूँ जी । मेरे खानदान में हमेशा से ऐसा ही होता आया है जी। मुझे जो कुछ तुमसे कराने का था मैंने एक बात तुमको बता दिया। तुम्हें वही करना पड़ेगा जी। इसके लिये तुमको बहुत अच्छी फीस दी जायेगी जी इससे ज्यादा मुझको कुछ नहीं कहना है।"

वर्मा आपे से बाहर हो गये और साहस के साथ बोले-"अभी तो तुमने कुछ कहा ही नहीं। जो कुछ कहा है उससे कई गुना ज्यादा कहना पड़ेगा। तुम कौन हो यह तुमने अपने हिसाब से बता दिया। लेकिन मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम क्या हो और जिसे तुम अपना बाप बताते हो वह क्या

था, कान खोलकर अच्छी तरह सुन लो। इस तरह हुक्म देकर मुझसे काम कराने का तुम्हें कोई अख्तियार नहीं है। इसीलिए मैं तुम्हारी एक-एक बात से साफ इन्कार करता हूँ।"

वर्मा जी ने बड़े गुस्से में एक सिगरेट जलाई और फिर बोले- "तुम्हारी शराफत का नमूना तो यहीं जाहिर हो गया कि रात को एक बजे जबर्दस्ती मुझे यहाँ बुलवाना और फिर अपनी हुकूमत दिखाना। जब कि मेरी मर्जी बिल्कुल इसके खिलाफ थी मैं काम करता हूँ अपनी मर्जी से। अपनी सहूलियत और तर-कीबों से। मगर इस तरह मुझसे न किसी ने काम लिया है न ले सकता है और ऐसे काम तो पुलिस करती है। उनको खबर क्यों नहीं भेजते ?"

वर्मा जी के दबंगपन का उस पर बड़ा असर हुआ। जरा हल्की आवाज में बोला - "आप नाराज मत हो जी। अगर मेरा आदमी ने आपको कुछ तकलीफ दी है तो बताओ मैं उसको सजा

१२]

दूँगा जी। पुलिस की बात मत बोलो, उनको इसकी खबर नहीं दी जा सकती है जी। खूनी जब तक हाथ में नहीं आ जाता मैं खबर करने को तैयार नहीं हूँ जी।"

"शायद तुम इस जगह को भी अपना नैपाली गाँव समझ रहे हो मगर यह है बम्बई ! यहाँ ऐसी बातों का छिपाना बड़ा मुश्किल है।"

जंग शमशेर तिलमिला उठा और नथुने फुलाकर बोला-"देखो वर्मा जी, मैं तुम्हारे साथ में बहुत रियायत कर रहा हूँ जी मगर इससे तुम मेरी ताकत का गलत अन्दाजा लगाने की भूल मत कर बैठना जी। मैं जिस खानदान का बेटा हूँ उसमें हर नाम के साथ शमशेर लगा रहता है। उस नाम का मेरे अन्दर पूरा असर है जी, जरूरत पड़ने पर मैं दिखा भी दूँगा कि मैं फकत कहता ही नहीं कुछ करके भी दिखा सकता हूँ जी।"

"तुम्हें जो कुछ करना है करो। मैं तुम्हारा केस हर्गिज नहीं लूंगा।"

"लोगे कैसे नहीं ! तुम्हीं को लेना पड़ेगा जी। इस काम के लिये मैंने सबसे लायक आदमी तुमको ही छांटा है जी। इसलिये तुम्हीं को यह काम करना पड़ेगा।"

"मगर मैंने कह दिया न तुमसे ?"

"हाँ-हाँ ! वह तो मैंने सुन भी लिया जी और बार-बार कहोगे तो मान भी लुगा मगर उसका अन्त तुम्हारे लिये बड़ा भयानक होगा जी। तुम्ही एक बाहरी आदमी हो जिसको मेरे मृतक पिता की बाबत मालूम हो गया है जी। इस रहस्य को जानने वाला कोई विश्वस्त ही होना चाहिये जी। तुम मेरा काम नहीं करने की जिद्द करोगे तो मैं तुम्हारा विश्वास नहीं कर सकूँगा जी और जब विश्वस्त नहीं रह गया तो मुझे तुम्हारा मुँह बन्द करना पड़ेगा जी। वह भी शायद हमेशा के लिये ।"

[१३

"तुम कुछ भी नहीं कर सकोगे। यह तुम्हारा शमशेर नाम सिर्फ कहने के ही लिये है। तुम्हारी हिम्मत मेरी तरफ उँगली उठाने की भी नहीं पड़ेगी।"

"आपको मेरे साथ कुछ पुराना बैर तो नहीं है जी। दुनिया का काम आप करते हो तो मेरा क्यों नहीं करते। एक बार पूरी तरह सारा मामला सुन के तो देखो जी।"

वर्मा जी कुछ सोचकर बोले- अच्छी बात है! तुम पहले केस की पूरी बातें मगर सचसच बताओ मुझे। साथ ही यह भी बताओ कि तुम्हारे पिता की मृत्यु का रहस्य किसी के लिये जानना क्यों जरूरी है इसे तुम छिपाना क्यों चाहते हो ?"

शमशोर हो-हो करके हंसता हुआ बोला- "तुमने बहुत अच्छा किया जी। मैं बहुत खुश हो गया हूँ तुमसे कि तुमने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया है जी

जो मेरा काम करने का निश्चय कर डाला।"

"तुम भूलते हो !" मैंने अभी कोई भी निश्चय नहीं किया है-पहले तुम मेरी बात का जवाब दो फिर मैं सोचूगा ।"

"बात कोई खास नहीं है जी। अगर है भी तो वह फक्त मेरे लिये। अगर झूठ को भी किसी को यह मालूम हो गया कि मेरे पिता ने आत्महत्या कर ली है जी तो स्टाक एकसचेंज के अन्दर में हमारी पोल खुलते देर नहीं लगेगी जी। उसी के साथ हमारी माली हालत की भी बुनियाद हिल जायेगी तुम जानते हो जी।"

वर्मा जी को इस बात पर कुछ विश्वास हो गया। सच मुच ही आज के संसार में पैसा ही सब कुछ है। आज शमशेर की बाजार में धाक बनी हुई है लेकिन जैसा वह कह रहा है पोल खुल जाने पर परिस्थिति भयंकर भी हो सकती है और उसका अन्त नाशकारी निकल सकता है। वे इसी विचार धारा में पड़े हुए थे कि शमशेर फिर बोला- "तुम अच्छी तरह सोच लो जो जिस कारण

से मैं यह बात प्रगट नहीं करना चाहता हूँ जी वह तुम्हारे सामने है। इसीलिये मैंने पुलिस को नहीं बुलाया जी। उनके बुलाने का मतलब ऐसा ही होता जैसा हाथी की सूड़ में गन्ना दे देने का । पुलिस के हाथ से खबर अखबार वालों के पास जाते देर नहीं लगती है जी मैं वही नहीं चाहता। यह मेरा भाग्य है जो मेरे सब आदमी एक से एक ज्यादा विश्वासी हैं जी। इस घटना के होते ही गुप्त रूप से मुझे सूचना दी गई। मैंने तुरन्त ही निश्चय कर लिया जी कि मुझे क्या करना चाहिये और मैं बही कर रहा हूँ। मेरे पिता का खून किया गया है जी यह यह तुम्हारे सामने है। किसने मारा ? क्यों मारा ? और इस हत्या को आत्म हत्या साबित करने की कोशिश क्यों की गई है जी यह मैं कुछ नहीं जानता मगर जानना जरूर चाहता हूँ मैं इस बात को ज्यादा से ज्यादा तीन दिन तक संभाल सकता हूँ जी उतना ही टाइम मैंने तुमको दिया है जी! पता लगाने के लिये। खून करने का

गरज ! तरकीब और खूनी, इन तीनों बातों का तुमको पता लगाना है जी:।"

"आखिर तीन दिन बाद भी तो तुम इनका मरना जाहिर करोगे।"

"जाहिर तो आज भी कर सकता हूँ जी लेकिन दो दिन का अन्दर में बाजार की हालत को भी सँभालना जरूरी है न । हत्या और आत्महत्या में बड़ा भारी अन्तर पड़ेगा जी बाजार के अन्दर आत्म हत्या कौन करता है जिसमें कुछ कमजोरी होती है जी ! आत्म हत्या सुनते ही बाजार वाले हमारी कमजोरियां तलाश करना शुरू कर देंगे जी, हर व्यापारी के साथ कुछ-न-कुछ कमजोरी हुया ही करती। है जी, हमारी भी है। उनके खुलते ही हमारा सर्वनाश हो जायगा जी ।"

वर्मा जी को उसकी बात न्यायपूर्ण लग रही थी।

[१५

वह फिर बोला- "और हत्या से लोगों की सहानुभूति हमारी तरफ बढ़ेगी जी। उससे लोगों को हमारे ऊपर दया आयेगी। बीमा कम्पनी भी कुछ ज्यादा झंझट नहीं पालेगी और माली हालत पर कोई असर नहीं पड़ेगा, समझ लो आप ।"

"तो तुमको पूरा विश्वास है कि आत्महत्या नहीं हत्या ही हुई है।"

"सौ फीसदी ! बिल्कुल पत्थर की लकीर समझो जी। खूनी का पता लगाने के लिये ही तुम पर दबाव डाल रहा हूँ।"

"लेकिन मैं असलियत को तो नहीं बदल दूँगा। अगर आत्म हत्या ही हुई है तो खूनी कहाँ से मिल जायगा ।"

"खूनी मिलेगा और हजार बार मिलेगा जी। चाहे तुमको कुछ भी करना पड़े। अगर जिन्दा नहीं मिलता तो मुझे उसकी लाश ही लाकर दे दो जी।

नहीं तो उसके हाथ से लिखवा कर ला दो कि उसी ने खून किया है। दूसरा कोई उपाय ही नहीं है जी ! सुन लिया न ?"

"सुन तो बड़ी देर से रहा हूँ अब समझने की कोशिश में हूँ।"

"जरूर करो जी ! मेरी तरफ से तुमको हर समय हर तरह की मदद मिल सकेगी। मेरा काम हो जाने के बाद मैं तुमको ईनाम भी इतना दूँगा जी जो आज तक किसी ने न दिया होगा। लेकिन देखो ! मुझे धोखा देने की कोशिश हर्गिज मत करना जी, वरना बम्बई शहर इतना बड़ा नहीं है जिसमें तुम मेरी नजरों से बच कर रह सकोगे जी। नतीजे पर किस तरह पहुँचना इसकी जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है जी।"

वर्मा जी कुछ देर के लिये मूर्ति के समान हो गये। उनकी समझ ही में नहीं आया कि क्या जवाब दें। और जवाब देते भी किसे ? सामने एक जिद्दी आदमी खड़ा है, जो अपनी बात के आगे दूसरे की सुनने को तैयार ही नहीं है। उनके कानों में शमशेर के वही शब्द गूंज रहे थे। चाहे मेरे पिता ने आत्म हत्या की या उनकी हत्या हुई मगर तुम्हें खूनी तलाश करना ही पड़ेगा ।"

वे सोच रहे थे अगर इस पागल की बात नहीं मानता तो न जाने यह क्या कर डालेगा। मैं इस वक्त पूरी तरह इसके कब्जे में हूँ। शायद बाहर की दुनिया को पता ही न लग सके कि जासूस वर्मा कौन से संसार में निवास कर रहे हैं। वे इसी सोच में डूबे हुये थे और शमशेर दृष्टि जमाये हुये उनके चेहरे के उतार चड़ाव को देख रहा था जैसे चीता अपने शिकार को मार डालने के बाद देखता रहता है। वह अपनी उसी कठोर आवाज में फिर कहने लगा- "तुम ठीक ही करोगे जी जो मैंने कहा है। और मैं जानता हूँ कि तुम मुझे किसी तरह की तकलीफ भी नहीं दोगे जी । बल्कि उसका इरादा भी नहीं करोगे, अब ठीक-ठीक बोलो । मेरा केस लेते हो न जी अपने हाथ में ?"

वर्मा जी बड़े पसोपेश में पड़े हुये थे। परिस्थिति तथा शमशेर की शक्ति को वे आंकने लगे, इस समय उनका मुकाबिला करना सरासर नुकसान देने वाला था। बाजार की हालत का ख्याल करके शमशेर जो कुछ भी कहता

है वह ठीक ही कहता है। मैंने न किया तो केस को हाथ में लेने वाले पचास तैयार हो जायेंगे ओर उल्टा-सीधा कुछ कर भी डालेंगे लेकिन व्यर्थ ही मेरा एक दुश्मन तैयार हो जायगा अन्त में उन्होंने केस लेने का निश्चय करके कहा- "अच्छा ! मि० शमशेर बहादुर ! मैं तुम्हारा केस लेता हूँ।"

मगर इतना कहते हुये भी उनका आंतरिक निर्णय यही था कि यदि आत्म हत्या की गई है तो जबरदस्ती किसी को खूनी बना कर वे किसी हालत में पसन्द नहीं करेंगे।"

"उधर शमशेर को वर्मा जी के जबाब से पूरी तरह संतोष तो हो गया और उसी त्योरी चढ़े चेहरे पर अब कुछ मुस्कराहट दिखाई देने लगी। वह धीरे-धीरे अपनी जगह से उठा और लकड़ी का सहारा लेता हुआ उस दरवाजे की तरक बढ़ा जिससे वर्मा जी अन्दर दाखिल हुये। उसे केवल इसी विचार से बड़ी खुशी हो रही थी कि अपने काम के लिये उसने बम्बई का सबसे अच्छा और समझदार आदमी नियुक्त किया था। अन्त में इसका परिणाम क्या हो सकता है यह प्रश्न तीसरे दिन सामने आयेगा। मगर इस समय इस काम का भार जिस योग्य आदमी के कंधे पर डाला गया है। उसका पुलिस तथा अधिकारियों से कितना सुन्दर सम्बन्ध है जिसके द्वारा आगे बहुत कुछ सहायता मिलने की सम्भावना हो सकती है इतना ही भाश्वासन क्या कम है। इस विषय में ये जो कुछ भी कह देंगे उन लोगों को मानने में कोई अपत्ति नहीं होगी और इनको वे ही करना पड़ेगा जो मेरी इच्छा होगी। दीवार में लगे हुए एक गुप्त बटन को दबा कर उसने कहा- "मेरे पिता की सेक्रेट्री एक ऐंग्लो इन्डियन लड़की है वह अभी यहाँ आ जायेगी और आपको हर तरह की सहायता देगी । हमारी मिल का मैनेजर भी आयेगा। वह एक पेन्सन याफ्ता अंग्रेज है। वे दोनों आपको वो बातें बता सकेंगे जो आपके लिये जानना जरूरी है।"

इतना कहते हुये उसने दरवाजा खोला। वर्मा जी ने देखा एक जवान ऐंग्लो इन्डियन लड़की खड़ी है। वह एक तरफ हट गई। शमशेर उसके पास जाकर खड़ा हो गया और घूमकर इनसे बोला- "मेरे सारे आदमियों को यह आज्ञा दे दी जायेगी कि वह तुम्हारे साथ पूरा सहयोग दें। कल दोपहर के बाद मैं यह जानने के लिये कि इतने समय में तुमने क्या किया ? तुमसे

इसी कमरे में मिलूँगा ! बस नमस्ते !"

इतना कहकर शमशेर चला गया। वह लड़की अन्दर आई

और दरवाजा बन्द करके बोली- "छोटे साहब को तो अपनी धुन में हमारा परिचय कराने का ध्यान नहीं रहा लेकिन मैं इसका हो जाना जरूरी समझती हूँ। मेरा नाम है अमेलिया कार्टर। मैं बड़े शमशेर साहब की सेक्रेट्री हूँ।"

"हाँ! यह तो मुझे बता दिया गया था। मेरा नाम है इंस्पे० वर्मा ! तुम्हारे छोटे साहब का ख्याल है कि उनके पिता का मर्डर किया गया है उसी का पता लगाने का काम उन्होंने मुझे सौंपा है। सबसे पहले तो ऐसी जगह बताओ जहां पूरी बेफिक्री के साथ बातें कर सकें। ऐसी एकांत की जगह होनी चाहिये जहाँ हमें हर तरह की....."

"जी हाँ ! मैं समझ गई! हर तरह की सहूलियन मिलेगी। चलिये सामने ही मेरा कमरा है। वहाँ हम लोग आजादी से बातें कर सकते हैं।"

वर्मा जी उसके साथ उस कमरे में गये। वहाँ की शानदार सजावट देख कर वह दंग रह गये। हर चीज कीमती और आला दर्जे की थी। न रहा गया तो पूछ ही बैठे- "यह आपका कमरा है ?"

"जी हाँ! आपको ताज्जुब तो हुआ देखकर....।"

"होना ही चाहिये ! ऐसी सजावट तो मालिकों के भी कमरे में नहीं देखी जाती जो मैं यहाँ देख रहा हूँ। इसका मतलब यही हो सकता है कि आप यहाँ किसी अच्छे ओहदे पर काम करती हैं।"

अपनी कुर्सी पर बैठते हुए उसने इनको भी एक बढ़िया कुर्सी पर बैठने का संकेत किया और बोली- "बात असल यह है कि मिल से मेरा कोई वास्ता नहीं था। मैं बड़े साहब की सेक्रेट्री थी। उनका सारा निजी काम मेरे हाथ में रहता था। यहाँ की चीजें जरूरत से ज्यादा कीमती और शानदार हैं। मगर

बड़े साहब को यही तरीका पसन्द था । अक्सर ऐसा होता था है कि उनसे मिलने वाले लोगों को इसी कमरे में इन्तजार करना पड़ता था । यहाँ की सजावट का उन लोगों पर काफी असर पड़ता था ।"

वर्मा जी ने मेज की चीजों पर एक नजर डाली और कुछ विस्मय से बोले- मगर इन चीजों के साथ टाइपराईटर नहीं है आपकी मेज पर ?"

"जी नहीं ! उसके लिये दूसरा क्लर्क है। मेरा काम था बड़े साहब की भेंट मुलाकात की तारीखें रखना, उनके व्यापारिक जीवन में आने वाली अड़चनों को रोकना। उनके मेहमानों का आदर सत्कार करना, टेलाफोन की खबरों को सुनाना जबाब देना ।"

"बहुत खूब मिस काटेर ! आप मुझे विल्कल सही-सही बता सकती हैं कि आज रात को क्या हुआ और जिस वक्त यह हुआ क्या आप यहाँ मौजूद थी ?"

"जिस वक्त भी वह यहाँ होते थे मेरा होना जरूरी था। आज इत्तफाक से जिस वक्त यह ऐक्सिडेन्ट हुआ मैं नीचे गई हुई थी। जिस दिन उनको देर तक बैठना होता था वे इसी कमरे में रहते थे। मैं उन्हीं के लिये कुछ चीजों का इन्तजाम करने गई हुई थी।"

"कितने बजे होंगे उस वक्त जब आप नीचे गई थीं ?"

"ग्यारह के करीब समझिये !"

"क्या उन्होंने कहा था आपसे उन चीजों को इन्तजाम करने को?"

"जी नहीं ! मगर उनका देर तक बैठने का मतलब ही था इन चीजों का इन्तजाम करना। चाहे कोई कहे या न कहे।"

"आप यहाँ बिल्कुल अकेली थीं ?"

"जी हाँ ! और होता ही कौन ?"

"वक्त क्या बताया आपने ग्यारह बजे का ?"

"जी हां !"

"फिर क्या हुआ ?"

"नीचे वाला कमरा मिसल इसके नीचे ही है। ११ बजे मैंने गोली चलने की एक आवाज सुनी। जल्दी से भागकर यहाँ पहुँची। दरवाजा खोलकर अन्दर उनके कमरे में गई और उन्हें उस हालत में पाया जिसमें आपने देखा होगा उन्हें ?"

"यानी आपने उनको मरा हुआ देखा ?"

"जी हाँ !"

"फिर क्या हुआ ठीक तरह सोच कर बतलाइएगा !"

"सोचकर बताने लायक कोई बात ही नहीं है वर्मा साहब ! क्योंकि वह सीन देखते ही मैं बेहोश हो गई थी। जब होश आया तो अपने को इसी कुर्सी पर पाया। हमारे चीफ क्लर्क मि० करडे ने मुझको यहाँ बैठा दिया था।"

"और दूसरे कमरे में क्या हो रहा था ?"

"वहाँ काफी आदमी जमा हो गये थे। मि० हार्वे ने उनको रोक रखा था। मि० हार्वे मिल के सिक्योरिटी ओफिसर हैं।"

"छोटे शमशेर को शायद उन्होंने ही खबर दी होगी।"

"जी हाँ !"

"वह उस वक्त यहाँ ही थे या कहीं बाहर ?"

"कही बाहर ! फोन से खबर पाने के १५ मिनट बाद आये थे।"

"आपने कहा कि उस कमरे में बहुत से आदमी थे। क्या इतनी रात तक रोज बहुत से आदमी काम करते थे ?"

"जी नहीं! ऐसा उसी दिन होता था जब बड़े साहब देर तक काम करते थे।"

"अब वे लोग हैं या चले गये ?"

"जी मौजूद हैं! मि० हार्वे हर एक से अलग-अलग बयान ले रहे हैं। यानी हर आदमी ११ बजे कहाँ था और क्या कर रहा था?"

एकाएक ही वर्मा जी के दिमाग में एक बात आई। उन्होंने पूछा- "क्या इन मि० हार्वे के दो असिस्टेन्ट हैं जिनमें एक कुछ व्यादा लम्बा और..

"ज्यादा क्यों पूछते हैं ? मि० हार्वे ने ही आपको यहाँ लाने का इन्तजाम किया था।"

"और अब वे लोगों के बयान भी ले रहे हैं। तब तो बड़े काम के आदमी मालूम पड़ते हैं और क्या-क्या किया उन्होंने इस मामले में ?"

"जहाँ तक मेरा ख्याल है उन्होंने लाश के कुछ फोटो भी लिये हैं, यानी लाश जिस हालत में पाई गई।"

"कोई चीज हटाई तो नहीं गई वहाँ से !"

"मैं जानती तो नहीं। लेकिन शायद नहीं ही हटाई गई।"

"बातें तो बड़ी मजेदार सुनने को मिल रही हैं। "

"मैंने बता दी ये बातें। न भी बताती तो आप मालूम कर लेते और कर ही लेंगे।

"लेते और लेंगे में बड़ा फर्क है मिस कार्टर ! क्या अभी भी कुछ बाकी रह

गया है जिसे मैं मालूम कर लूँगा।"

अमेलिया ने एक बार चारों तरफ देखा फिर जल्दी-जल्दी कहने लगी- "कल ही शाम को बड़े साहब से उसका बड़ा झगड़ा हुआ था। बड़ा सख्त झगड़ा। साइब बहुत बुरी तरह बिगड़ रहे थे उस पर !" कहते-कहते वह चुप हो गई क्योंकि उसी समय सामने का दरवाजा खोलकर एक भारी शरीर बाला व्यक्ति अन्दर आया। उसने बड़े ताने के ढंग पर कहा- "मिस का---

वर्मा ने घूमकर देखा। हाथी जैसा शरीर और चूहे जैसी आँखों बाला एक मनुष्य खड़ा हुआ बड़ी धूर्तता से मुस्कुरा रहा है। उसने फिर कहा- "कहती जाओ मिस कार्टर ! रुक क्यों गई ! बता दो मि० वर्मा को जो कुछ तुमने देखा है।"

अमेलिया का रंग बिल्कुल सफेद पड़ गया। होंठ कांपने लगे। वह मनुष्य फिर बोला "जो कुछ तुम्हें मालूम है तुम कह दो मुझे जो कुछ पता है मैं बता दूँगा।"

अमेलिया बेंत की तरह काँप रही थी। वह मनुष्य धीरे-धीरे आगे आया और वर्मा जी से बोला "मि० वर्मा मैं हूँ हार्वे, सिक्योरिटी मैनेजर !"

अमेलिया अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गई। हार्वे की तरफ देखते हुये उसने वर्मा से कहा- "शायद कुछ देर आपको मेरी जरूरत नहीं पड़ेगी।"

हार्वे फिर बीच में बोल उठा- "जरूरत तो पड़ेगी बाद में, मगर तुम अपनी कहानी खत्म नहीं करोगी? कितनी सुन्दर थी"

अमेनिया ने फिर भी उसकी बात अनसुनी कर दी और वर्मा से कहा- "मैं बिल्डिंग से बाहर नहीं जाऊँगी। जरूरत पड़े तो आप मुझे बुलवा सकते हैं।"

"बिल्डिग छोड़ने का ख्याल छोड़ ही दो तो अच्छा है।" कहता हुआ हार्वे घूमकर वर्मा के सामने आ गया। अमेलिया कुछ क्षण तो खड़ी रही फिर पैर पटकती हुई चली गई।

उसके बाद हार्वे बोला- "आप समझे कुछ मि० वर्मा ! यह सारा शोर 'शार किसलिये था। शाम को मेरा बुड्ढे के साथ कुछ झगड़ा हो गया था। झगड़ा कोई ऐसा खास नहीं था लेकिन मेरा ख्याल है वह उसे एक गहरा रंग चढ़ाना चाहती थी।"

"तब तो आपने शायद बहुत-सी बातें सुनी होंगी हम लोगों की।"

"नहीं-नहीं ! मुझे सिर्फ एक या डेढ़ मिनट हुआ होगा आये हुये। आप शायद नहीं जानते ऐसी बातों की खबर रखना भी मेरी ही जिम्मेदारी में शामिल है।"

"अगर बुरा न माने तो आप अपनी जिम्मेदारियों का पूरा चित्र खींच दें मेरे सामने। क्योंकि मुझे मालूम हुथ्य है आप बड़े ही बा-कमाल आदमी हैं।"

"इस तरह कपड़े में लपेटकर जूता मारने से आपका क्या मतलब हो सकता है यह मैं नहीं समझ रहा हूँ।" हार्वे कुछ घबड़ा-सा गया।

वर्मा जी समझ गये कि वह किसी खास बात को छिपाने के लिये ही यह नाटक कर रहा है। इतने ही में कुछ सँभलकर हार्वे ने फिर कहना शुरू कर दिया ।

"आपकी बातों ने तो मुझे चक्कर में ही डाल दिया मि० वर्मा ! अगर ऐसी बातें न करें तो अच्छा है। आपका मतलब शायद उन फोटो और लोगों के बयानों से है।"

'वेशक ! उनको क्या आप मामूली चीज समझते हैं। कहाँ से सीखी आपने यह पुलिस की तरकीबें ?"

"उसी जगह से जहाँ आप लन्दन से आने के बाद दाखिल हुये थे। आप मुझे भूल गये लेकिन मैं आपको खूब अच्छी तरह जानता हूँ बल्कि कुछ दिन आपके साथ काम भी कर चुका हूँ। शायद मि० बर्डवुड का नाम आपको याद होगा।"

वर्मा कुछ क्षण सोचकर बोले- "ओहो ! आप वह मि० हार्वे हैं यानी सार्जेन्ट हार्वे ! आपने तो बड़ी तरक्की कर डाली। कहाँ सर्जेन्ट कहाँ मैनेजर !"

"बड़े पापड़ बेलने पड़े मि० वर्मा इस दर्जे पर पहुँचने के लिये । आप तो जानते हैं यह दुनिया कैसी है ?"

"बेशक और दुनियाँ के झटकों को सहना भी किसी मामूली आदमी का काम नहीं है।"

"अब रही उन बयानों और फोटो की बात। मेरे आदमी इस

२४]

वक्त भी उसी काम में लगे हुए हैं। फोटो के नेगेटिव सुखाये जा रहे हैं तैयार होते ही प्रिन्ट निकलवा दूँगा। लग जायगा अभी और भी आधा पौना घंटा ।"

"अच्छी बात है। तैयार हो जाने दीजिये तभी देख लूगा । जब तक आप लाश को यहाँ से हटवा कर किसी ऐसे ठिकाने रखवा दीजिये जहाँ उसे कोई छेड़े नहीं। बल्कि उसको वर्फ पर रखवा दीजिये ।"

"अभी लीजिये।"

होम लाइन पर फोन करके हार्वे ने किसी को वर्मा जी की बताई हुई आज्ञा की सूचना दे दी। इसके बाद वर्मा जी ने उन से पूछा- "हाँ-मि० हार्वे। आपने कहा कि कल शाम को बड़े शमशेर से आपका कुछ झगड़ा हुआ था। मैं पूछ सकता हूँ बह झगड़ा किस बात पर हुआ ?"

"उनको मेरा कोई भी काम पसन्द नहीं आता था। हर वक्त यही कहा करते थे कि तुम आदमियों के साथ बड़ी नरमी के साथ पेश आते हो।"

"हूँ-तो इसी बात पर झगड़ा बहुत जबर्दस्त हो गया था ?"

"ऐसा जबर्दस्त होता तो मैं इस वक्त यहाँ थोड़े ही दिखाई देता।"

"मगर मिस कार्टर कहती थीं झगड़ा जबदस्त हो गया है।"

"मिस कार्टर को इसके सिवा काम ही क्या है उसकी तरफ से हमेशा एक न एक मुसीबत खड़ी रहती है। देखने के लिए वह बड़े मालिक की सेक्रेटरी थी। और इसीलिये उँगली पर नाचती थी रुपया ऐंठने के लिये वह थे और दिल लगाने के लिये थे मि० करडे । मैंने कितनी मर्तबा देखा दोनों को साथ घूमते फिरते । खुश किस्मती यही थी कि मालिक को इसका पता नहीं था वरना न जाने वे इन दोनों का क्या कर डालते। यह भी हो सकता है कि जानते हुए भी वह कुछ ध्यान नहीं देते थे।"

"गोली तो मार ली विचारे ने अपने और क्या करते।"

इस बात को सुनते ही हार्वे एक क्षण के लिये गड़बड़ा गया पर शीघ्र ही संभल कर बोला "नहीं-नहीं! ऐसा तो नहीं हुआ।

उनकी हत्या ही की गई। फिर आप भी जानते हैं कि खून को खुदकुशी में बदलना कुछ ज्यादा मुश्किल काम नहीं है। उनकी लाश भी सबसे पहले मिस कार्टर ने ही देखी थी।"

"और देखने के साथ ही बेहोश भी हो गई थी !"

"यह तो एक दिखावटी भी हो सकती है !"

"मगर गोली चलने की आवाज के सुनते ही आप भी तो आ गये थे। कितनी देर बाद आये होंगे ?"

"फौरन ही ! ज्यादा से ज्यादा एक मिनट बाद !"

"और इतने ही अर्से में मिस कार्टर ने खून को खुदकुशी बना दिया।"

"बनाया जा सकता था !"

वर्मा जी कुछ बोले तो नहीं मगर हार्वे की तरफ देखते हुये उनकी भौं ऊपर को पढ़ने लगी। भौं ऊपर चढ़ने का मतलब था अविश्वास । उन्होंने पूछा- "फिर क्या हुआ ?"

हार्वे कुछ घबड़ा गया था। कहने लगा- "जो कुछ हुआा वह आपको बताया जा चुका है। दूसरी बात यह कि नीचे के दो कमरे आपके लिये ठीक करा दिये गये हैं। आप जिस वक्त चाहें वहाँ आराम कर सकते हैं।"

"यह आप लोगों की मेहरबानी है। मगर मैं अपने घर ही जाकर आराम करना चाहता हूँ।"

"माफ कीजिएगा ! आपको अपना इरादा बदलना पड़ेगा । छोटे मालिक का हुक्स है कि इस काम के खत्म होने तक आप को हमारी देख-रेख में रहना होगा।"

"आपका मतलब है कि मैं अपने घर नहीं जा सकता ?"

"इस मामले से जितने लोगों का ताल्लुक है उन सबको यह तकलीफ तो उठानी हो पड़ेगी। नीचे जाकर देखिये । कितना आदमी रुका हुआ है। सबको कह दिया गया है कि जब तक आप इजाजत नहीं देंगे कोई भी बाहर नहीं जायगा।"

"मतलब यह कि आपने मुझे अपने फन्दे में फँसा लिया है।"

"मजबूरी है ! मैं आपसे भी दरख्वास्त करू गा कि इस बात की जिद करके हमारे लिये मुसीबत न बढ़ायें तो बड़ी मेहरबानी होगी।"

"वह आदमी आप ही के थे जो मुझे पकड़ कर लाये थे ?"

"जी हाँ !"

"और वह आदमी भी आप ही के होंगे जो रोकेंगे ?"

"और किसके हो सकते हैं।"

"सार्जेन्ट हार्वे ! कानून के दायरे में इतने दिन रहने के बाद भी आप उसके बाहर जाने की कोशिश कर रहे हैं,। पछताइयेगा मत ।"

कुछ जवाब न देकर हार्वे चला गया। वर्मा जी कुछ देर वहीं बैठे सोचते रहे। अमेलिया और हार्वे दोनों ही उनके लिये सोचने का काफी मसाला छोड़ गये थे। वे सोचने लगे यदि उन दोनों का कहना सच है तो खून करने के दो इरादे मुमकिन हो सकते हैं, हालाँकि उन इरादों में भी कोई खास पायेदारी नहीं हो सकती। मगर पहला सवाल है कि दरअसल खून हुआ भी या नहीं ! शमशेर चाहता है मैं यही ख्याल करूँ ? और यही मंशा हार्वे का भी है। क्या ये दोनों किसी अपराध की तरफ संकेत करते हैं। क्या ये बातें हार्वे के मुँह से इसका इरादा न होते हुये

[२७

भी निकल ही गई या उसका इस बात पर जिद्द करना ही उसके निर्दोष होने का प्रमाण है। खून हुआ या नहीं यह सवाल बिल्कुल ही. अलग है मगर कोशिश यही साबित करने की गई है कि आत्महत्या हुई। अगर हार्वे ने ही खून किया तो वह अपनी जबान पर काबू नहीं कर सकता था। उसे इस बात की जिद्द करने की क्या जरूरत थी क्योंकि इससे तो वही दोषी बन रहा है।

वर्मा जी उठे और धीरे-धीरे टहलते हुये लाश के कमरे में पहुँचे । लाश अभी तक कुर्सी पर ही मौजूद थी। उन्होंने सोचा इसके यहाँ से हटाये जाने के पहले ही सोच लिया जाय कि अगर खून हुया तो किस तरह हो सकता था। सबसे पहले उन्होंने लाश की आँखों पर नजर डाली जो खुली थीं और दरवाजे पर लगी हुई थी, लाश कुरसी पर सीधी बिठाई गई थी। बाई तरफ कुछ झुकाव था, दूसरी तरफ उन्होंने झुक कर देखा तो दाहिने हाथ में रिवाल्वर दिखाई दिया। जेब से रूमाल निकाल कर उन्होंने हाथ में लपेटा और लाश के हाथ से रिवाल्वर निकाल लिया और मेज पर रखकर सूँघना

शुरू किया। बारूद की गन्ध आ रही थी जिसका मतलब था कि बारह घंटे के अन्दर ही उसे इस्तेमाल किया गया है।

यह काम करके वे फिर लाश के पास जा खड़े हुये। उसके बराबर खड़े होकर उन्होंने कमरे की एक-एक वस्तु पर दृष्टि दौड़ाई। ताला बन्द खिड़कियाँ, आधी भरी हुई राखदानियाँ । एक अधजली बुझी हुई सिगरेट, यह सब देखकर फिर लाश की खोपड़ी की दाहिनी तरफ देखा। गोली जहाँ से अन्दर गई थी बारूद ने उस जगह के आस-पास की खाल जला दी थी। मोटे शीशे से देखने पर पता चल सकता था कि सिर से रिवाल्वर कितनी दूर रखकर गोली मारी गई है। वैसे अन्दाजा यही कह

रहा था कि बहुत हो पास से मारी गई है और सारे हालात साबित कर रहे थे कि आत्महत्या ही की गई है।

फिर सोचा बुड्ढे के बिना देखे खूनी का इतने पास आकर गोली मारना कुछ जंचता नहीं। यदि यह भी मान लिया जाय कि उसका खूनी पर पूरा भरोसा था तो भी जिस वक्त खूनी ने रिवाल्वर निकाला होगा, बुड्ढा बहुत कुछ कर सकता था । न तो चिल्लाया। न मेज में लगा हुआ घन्टी का बटन ही दबाया । किसी तरह की खींचातानी या पकड़ा धकड़ी के भी चिन्ह नहीं नजर आते। लाश के चेहरे पर भी घबड़ाहट या भय के कुछ चिन्ह नहीं नजर आते। इन अलामात से तो यह खुदकशी ही साबित होती है इसमें यों तो अब कोई सन्देह नहीं रह जाता मगर इस निश्चय में भी दो बातें रूकावट डाल रही हैं पहली तो यह कि खुदकुशी करने के पहले आदमी कोई पर्चा या खत लिख-कर रख देता है। वह नहीं है और दूसरी चीज है सामने रखी हुई अधजली सिगरेट ! इन दो बातों से मामला फिर वहीं पहुँच जाता है।

इन दो कारणों से यह मानना पड़ता है कि बुड्ढे को एकाएक आत्म-हत्या करने की सूझी और इतनी जल्दबाजी थी कि न तो बह पर्चा लिख सकता था न पूरी सिगरेट ही पी सकता था। यह भी माना जा सकता है कि

उसने कोई पर्चा लिखा हो और शम-शेर उसको ले गया हो। कुछ सोचकर उन्होंने अपने रूमाल लपेटे, हाथ से होम लाइन के फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाया, कुछ क्षण बाद ही किसी ने दूसरी ओर से पूछा- "क्या बात है मि० वर्मा !"

इन्होंने समझ लिया कि आपरेटर को मालूम है कौन किस जगह पर है, बोले- "क्या आप मिस कार्टर को बुला सकते हैं।"

[२६

"जी हाँ, जरा ठहरिये !" आपरेटर ने माउथपीस से मुँह हटाकर किसी से कार्टर के बारे में पूछा और वही जवाब वर्मा को सुना दिया- "मिस कार्टर उस रूम में गई हैं जो आपके ठहरने के लिये ठीक किये गये हैं। अगर आप ठहरें तो मैं वहाँ की लाइन आपको दिये देता हूँ।"

"धन्यवाद !" वर्मा ने लाइन मिलाने की आवाज तो सुनी अगर नीचे के कमरे से घंटी बजने की आवाज नहीं सुनी। इस सन्देह को उन्होंने आपरेटर पर प्रगट किया। उसने जवाब दिया- "यहाँ जितने कमरे हैं सब साउन्ड प्रूफ हैं, इसलिये इनसे आवाज बाहर नहीं जाती।"

यह जवाब सुनकर वर्मा जो चौंके। कमरे साउन्ड प्रूफ हैं फिर भी अमेनिया ने गोली चलने को आवाज सुनी। वह उस वक्त इसी कमरे में थी। इसी समय रिसीवर द्वारा उन्होंने दूसरी ओर का रिसीवर उठाया जाना सुना। अमेलिया बोल रही थी।

"मैं चाहता हूँ आप मेरा एक काम कर दें। जरा दो मिनट लाइन रोके रखियेगा, कट मत करिये।" उन्होंने जेब से दूसरा रूमाल निकाला और माउथपीस में ठूंस दिया फिर पुकारा -"मिस कार्टर ! उधर से कोई जवाब नहीं मिला । मगर अमेलिया का सांस लेना उनको साफ सुनाई दे रहा था। अब अपनी युक्ति पर उन्हें पूरा संतोष हो गया। रिसीवर धीरे से मेज पर रखकर वे उस मेज के पास आये जिस पर लाश के हाथ से निकाला हुआ रिवाल्वर रखा था। बड़ी होशियारी से उठाकर देखा कि चेम्बर में गोलियां हैं या नहीं। चार गोलियां थीं तब कुछ मुस्कुराते हुये उन्होंने दो गोलियां दीवार

में मारी। कमरा तो चारों तरफ से बन्द था ही। गोलियां चलाने के बाद वे कुछ मिनट तक इन्तजार करते रहे। फिर दरवाजा जरा-सा खोलकर बाहर की तरफ कान लगाकर सुना। किसी प्रकार की सनसनी या भागदौड़ कहीं से भी नहीं सुनाई दे रही थी।

३०]

सब प्रकार से संतोष कर लेने पर वे फिर पहले फोन के पास आये और ठूँसा हुया रूमाल निकाल कर पूछा- "मिस कार्टर कुछ सुना आपने ?"

"आपने कुछ कहा ही नहीं तो सुनती कैसे ?"

अब उन्हें निश्चय हो गया कि कमरे साउन्ड प्रूफ हैं और बन्द हो जाने पर इनसे आवाज बाहर नहीं जा सकती। के बोले- "मुझे आपसे कुछ जरूरी बातें करना है। फौरन ही यहाँ आइये और अपने साथ मि० कार्डे को भी लेतो आइये ।"

"मिस्टर कार्डे कौन हैं?"

"जी हाँ ! चीफ क्लर्क हैं न वे, उनको लेकर फौरन ही यहाँ आ जाइये।"

कुछ मिनट बाद अमेनिया एक लम्बे तथा हृष्ट-पुष्ट आदमी के साथ कमरे में दाखिल हुई। वर्मा एक ही नजर में समझ गये कि यह मनुष्य किस हद तक अमेलिया का गुलाम हो सकता है और वह किस तरह इसको नचाती होगी। यह देखते हुये हार्वे की बात सच माननी पड़ती है। उन्होंने बड़ी कठोर दृष्टि से एक बार उन दोनों को देखा और बोले- "बैठ जाइये आफ लोग!"

दोनों बैठ गये। वर्मा किसी विचार में कमरे के चक्कर लगाने लगे । लगाते-लगाते वे एकाएक अमेलिया के सामने खड़े हो गये और बोले- "आपको मेरे कुछ बातों का जवाब देना पड़ेगा।"

"क्यों ? क्या इसलिये कि मैं मि० करडे के साथ बातें कर रही थी।"

"बातें तो आप खून होने के पहले भी कर रही थीं।"

"फिर क्या हुआ ? कर रही थी तो ?"

"मगर आपने कहा कि जिस वक्त गोली की आवाज सुनी तो आप अकेली थीं?"

"क्योंकि मैंने सोचा आप उस बात को समझ नहीं सकेंगे और मैं समझ रही हूँ कि मेरा सोचना गलत नहीं था ।"

"उसमें समझने लायक क्या बात दिखाई दे रही है आपको ?"

"मि० वर्मा, आप यह न समझें कि ऐसी बातों से मैं चक्कर में आ जाऊँगी। मैं जानती हूँ हार्वे ने क्या कहा होगा ? अगर मैं बातें कर भी रही थी तो किसी को क्या ?"

"बेशक मि० वर्मा ! हमारे निजी मामले में आपको इस तरह दखल नहीं देना चाहिये" करडे ने भी कहा ।

"न मैं दखल दे रहा हूँ न मजाक कर रहा हूँ। मुझे एक काम सौंपा गया है। उसे पूरा करने के लिये जो कुछ भी जरूरी है उसे तो मैं करूँगा ही।"

"क्या आपको सन्देह है कि मालिक का खून अमेलिया ने किया है मगर यह भी तो सोचिये वह कर कैसे सकती है ? जिस वक्त गोली की आवाज हुई मैं उनके साथ था। इससे कुछ संतोष होता है आपको ?"

"कुछ, मगर पूरी तरह नहीं।"

"फिर कैसे होगा? क्या चाहते हैं आप, क्या करें हम लोग ?"

"ज्यादा मत बकिये, मैं बताऊँगा क्या करना होगा आप लोगों को ! जरा अक्ल से काम लीजिये। एक तरफ आप लोग कहते हैं कि कमरे साउन्ड प्रूफ हैं। दूसरी तरफ कहते हैं गोली की आवाज भी सुनी। दोनों बातें कैसे हो सकती हैं?"

फिर भी करडे वर्मा जी की बात न समझ कर मूर्खता से बोला - "साउन्ड प्रूफ होने से क्या हुआ ? हमने आवाज सुनी थी ?"

"सुनी थी ! इतना ही कहने से मैं आपकी बात का एतबार कर लूँगा। कि दूसरों ने भी सुनी थी। लेकिन जिस हालत में कमरा इस वक्त है उससे आप हर्गिज नहीं सुन सकते थे। वह देखिये आप लोगों को यहाँ बुलाने के पहले टेलीफोन करते वक्त मैंने दो गोलियाँ दीवार में मारी है। आप दोनों बिल्कुल इस कमरे के नीचे ही मौजूद थे मगर इन गोलियों की जरा भी आवाज नहीं सुनी।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"सिर्फ यही कि जिस हालत में कमरा इस वक्त है उस हालत में आप यहाँ होने वाली कोई आवाज नहीं सुन सकते थे। मैं फिर शुरू से सारा किस्सा समझाता हूँ मिस कार्टर ! आप मि० करडे के साथ उस वक्त नीचे के कमरे में थीं ?"

"जी हाँ !"

"आप दोनों ने गोली चलने की आवाज सुनी ?"

"जी हाँ !"

"और वहाँ से दौड़कर आप अकेली ही यहाँ आई। यहाँ आकर आपने लाश को देखा। मगर किसी तरह का खत या पर्चा लाश के पास नहीं देखा आपने क्योंकि खुदकशी करने वाले अक्सर अपना इरादा यानी खुदकशी करने की वजह कागज पर लिख कर रख जाते हैं।"

"जी नहीं ! मैंने ऐसा कोई कागज नहीं देखा। वैसे कुछ ही दिन पहले वह अपनी वसीयत लिख कर पूरी कर चुके थे।"

"उसकी बात पीछे करूँगा! आपने लाश देखी और बेहोश हो गई यही तो हुआ न ?"

"मैं बताता हूँ जो कुछ हुआ !" करडे बोला- "शायद उसे सुनकर आप हमारी जान छोड़ देंगे। हम दोनों नीचे के कमरे में थे। गोली की आवाज हुई। अमेलिया मुझे छोड़कर भागी। मैं उसके पीछे दौड़ा। जब दरवाजे पर पहुँचा तो यह बेहोश होकर गिर रही थी। उस वक्त तक हार्वे भी आ चुका था।"

[३३

"उस वक्त खिड़कियां खुली थीं या बन्द ?"

'बन्द ! कमरे की किसी चीज को हाथ नहीं लगाया गया है।"

"यह तो मुझसे भी कहा गया है मगर यह साउन्ड प्रूफ है, खिड़कियाँ भी बन्द की गई हैं। जिस वक्त वे मारे गये खिड़कियाँ खुली होनी चाहिये वर्ना गोली की आवाज बाहर नहीं जा सकती।"

"मगर इनको बन्द करने की कोशिश कौन करेगा और करेगा ही क्यों ?"

करडे की बात रखने के लिये अमेलिया भी बोली- "कम से कम मैंने जब लाश देखी उस वक्त खिड़कियाँ, बन्द ही थी।"

टेलीफोन की तरफ बढ़ते हुये वर्मा जी बोले- "सोच लीजिये, इस बात का निश्चय सब को ही हो जाना चाहिये।"

इसी समय कुछ फोटो लिये हुये हार्वे भी या गया। उससे भी पूछा गया तो उसने कहा- "मैं जब कमरे में आया तो खिड़-कियाँ बन्द थीं। ये लीजिये मि० वर्मा ! वे तस्वीरें जो मैंने कमरे में आने के साथ ही उतारी थी। इनके

उतरने से एक दो मिनट पहले मिस कार्टर कमरे में आ चुकी थीं।"

"मि० हार्वे ! व्यर्थ क्यों तिल का पहाड़ बना रहे हैं।" करडे ने कहा- "खिड़कियाँ खुली थीं या बन्द इससे फर्क क्या पड़ता है ?"

वर्मा जी बोले- "फर्क बहुत बड़ा पड़ता है मि० करडे ! किसी ने खिड़कियाँ बन्द की होंगी और बन्द करने की कोई बड़ी ही मजबूत बजह भी होगी अब सोचिये ! वह बजह क्या हो सकती है ?"

"आप ही बताइये, मेरी तो कुछ समझ में आता नहीं।"

"क्या बजह हो सकती है कि आपके अपने गोली मारी हो। सबसे पहला संदेह मालिक ने खुद ही खिड़की बन्द करने

का किया जा सकता है मिस कार्टर पर। इसके साथ ही दूसरी बात यह भी देखनी है कि जब खिड़कियाँ बन्द थीं तो खून हुआ कैसे और गोली की आवाज बाहर कैसे गई ?"

कहते-कहते वर्मा खिड़की के पास या गये। उसके शीशे से उन्होंने बाहर की तरफ देखा। एक छोटी छत बीच में थी। उन्होंने अनुमान किया बंद खिड़की बिल्कुल इस खिड़की की सीध में थी। तब पूछा- "इस खिड़की के अन्दर भी कोई कमरा है ?"

"जी हां ! स्टोर रूम है।" हार्वे ने जवाब दिया ।

"मैं जरा अन्दर से देखना चाहता हूँ इसे। देख सकता हूँ न ?"

"बेशक, मगर उससे फायदा क्या होगा ?"

"फायदा होगा या नुकसान। यह तो मैं अभी नहीं बता सकता । मगर देखना जरूर चाहता हूँ। क्योंकि मेरा अन्दाजा है कि आपके मालिक का खून उस सामने के कमरे से किया गया है जिसको आप लोग स्टोर रूम बताते हैं। किसी ने वहाँ से राइफिल से गोली मारी है। उस वक्त खिड़की खुली होनी चाहिये, मेरा ख्याल है वही आदमी यह जानकर कि वे मर चुके हैं यहां आया और..."

उसी क्षण अमेलिया फिर बेहोश होकर गिरने लगी तब वर्मा जी ने उसे संभालते हुये कहा ।

'आप इसे नीचे ले जाइये मि० करडे ! मैं थोड़ी देर बाद फिर आपसे बातें करूँगा ।"

करडे ने अमेलिया को दोनों हाथों पर उठा लिया और चले गये। वर्मा जी हार्वे के साथ उस स्टोर रूम में पहुँचे। घुसते ही हवा के झोंके के साथ एक प्रकार की गन्ध आई। तब उन्होंने पूछा- "कैसी गन्ध मालूम पड़ती है यह मि० हार्वे ?"

"मुझे तो बारूद जैसी लगती है।"

वर्मा आगे बढ़कर उस खिड़की के पास आये, देखा पेनेल के एक शीशे का थोड़ा कोना कटा हुआ है। हार्वे को पास बुला-कर उस कटी हुई जगह से बाहर देखने को कहा। देख लेने के बाद उन्होंने पूछा- "क्या दिखाई देता है।"

"बड़े मालिक का कमरा ! मेरे आदमी उनकी लाश उठा रहे हैं।"

"यह शीशे में कटी हुई जगह! इसमें से बन्दूक की नली तो निकल सकती है न?"

"आपका मतलब है गोली यहां से मारी गई। लेकिन यहां से मारी गई तो उनके हाथ के रिवाल्वर के लिये क्या समझा जायगा।"

"वह इसलिये दिया गया कि खुदकुशी समझी जाय।"

"मगर आपने देखा होगा, कनपटी पर बारूद से जलने के निशान भी मौजूद हैं।"

उसका मतलब है कि रिवाल्वर या राइफल जिससे गोली मारी गई। वह बहुत ही ताकतवर होनी चाहिये। दूसरे इतने करीब से गोलो मारी गई कि खाल जलने का निशान पड़ गया । उस जगह की खाल भी मुलायम होती है। मगर इन बातों के होते हुये भी यह जरूरी नहीं कि जो रिवाल्वर उनके हाथ में मौजूद है गोली उसी से मारी गई हो।"

हार्वे अकचकाकर उनका मुँह देखने लगा। वे फिर बोले-"अब तक मुझे कुछ और शुबहा था मगर अब तो सौ टके निश्चय हो गया कि यह खून ही हुआ। गोली यहीं से ही मारी गई। उसके बाद खूनी ने दो-चार मिनट खून को खुदकुशी बनाने में लगाये। क्योंकि अगर खून जाहिर हो गया होता तो शमशेर फौरन ही पुलिस को खबर दे देता मगर लाश की यह हालत

देखकर वह चकर में पड़ गया होगा। अगर खुदकुशी साबित हो जाती तो शमशेर बरबाद हो जाता और खूनी बेफिकी से पैर फैला कर सोता रहता। मौजूद हालात को देखते हुये किसी पर भी इसका दोष लगाना नामुमकिन नहीं तो मुश्किल तो है ही और अगर लाश और कमरे की बाकी चीजें हटा दी गई होतीं तब तो कुछ अन्दाज करना भी नामुमकिन हो जाता ।"

बातें करते हुये वर्मा जी की नजर जमीन पर पड़ी हुई किसी चीज पर पड़ी । उन्होंने बड़ी सफाई के साथ उसे उठा लिया। हार्वे ने कोशिश की मगर देख नहीं सका। वर्मा जी ने फिर कहना शुरू किया ।

"जो रिवाल्वर उनके हाथ में पाया गया है सुमकिन है वह उन्हीं का हो, लेकिन मेरा ख्याल है वह काफी दिनों से खूनी के कब्जे में होना चाहिये

जिससे कि उसे अपना इरादा पूरा करने के लिये पूरा बक्त मिल गया और अब तो यही कहना पड़ता है कि वह कामयाब भी हो गया।"

वर्मा जी कुछ रुककर फिर बोले- 'मेरा अन्दाज यह कहता है कि उस रिवाल्वर से एक गोली पिछले चौबोस घन्टों में एक मर्तबा ही चलाई गई है जिससे सिर्फ यह साबित करना था कि वह काम में लिया गया। खूनी बहुत होशियार है उसने अपनी उँगलियों के निशान वगैरह रिवाल्वर पर से साफ कर दिये। साथ ही मैं यह भी कह सकता हूँ कि जिस राइफत से खून हुआ उस पर साइलेन्सर लगा होना चाहिये। गोलियाँ चलीं तो दो मगर सुनने वालों ने एक ही की आवाज सुनी।"

इतनी देर के बाद हार्वे ने जबान खोली- "अगर आपका अन्दाजा सही है तो वह राइफिज यहाँ ही कहीं होनी चाहिये क्योंकि खून के बाद किसी को बाहर तो जाने दिया ही नहीं गया।"

"यह काम आपके आदमी अच्छा कर सकते हैं। बहरहाल मेरी बात पूरी तरह से सुन लीजिये। खून करने के बाद खूनी बेफिकी से लाश के पास आता है क्योंकि खून करने वाली गोली की आवाज तो सुनी ही नहीं गई। आवाज होती तो लोगों में खलबली फैलती । लेकिन आवाज न होने पर खूनी को अपनी तरकीब पूरी करने का काफी मौका मिला। यहाँ आकर उसने मर्द हो या औरत, अपना नक्शा बनाया जो

' यानी बह गोली चलाई जिसकी आवाज हम लोगों ने सुनी और जिसको बारूद से कनपटी को खाल जल गई?"

"जरा सब्रकरिये ! वह बात भी अभी बताता हूँ। खूनी ने यहां आकर सवसे पहले तो लाश को ठीक तरह से बिठाया, उसके बाद रिवाल्वर उसके हाथ में दिवा। फिर एक दूसरे पिस्तौल से बारूद का कारतूस गाल के पास रखकर चला दिया। इस तरकीब से यह जलने के निशान पड़ सकते हैं"

"और खिड़कियों के बारे में क्या सवाल है आपका ?"

"मेश ख्याल है अपना काम खत्म करने के बाद खूनी ने यहां से जाते वक्त

जल्दी-जल्दी में किया होगा ?"

"मेरी समझ में तो कुछ आ ही नहीं रहा है। अगर खिड़-कियां खुली भी रहती तो क्या वह कटा हुआ शीशा वहां से दिखाई दे सकता था।"

'मि० हार्वे ! इस वक्त इम लोगों को हर बात खूनी की नजर से देखनी चाहिये। इस खिड़की को देखकर यह तो आप भी मानेंगे कि यह मुद्दतों से नहीं खोली गई। खूनी ने एक टुकड़ा तोड़कर अपने काम लायक जगह बना ली। इसे देखकर ही यह शुब्हा होता है कि शायद खून ही हुआ हो। इस कटी हुई जगह को देखकर हमारी तरह खूनी भी तो सोच सकता है कि किसी ने देख लिया तो सन्देह हो जायेगा। इसलिये वह हर तरह से यही

कोशिश करेगा कि खिड़की पर किसी की नजर न पड़ने पाये । उसके लिये उसका सबसे पहला काम होगा उन खिड़कियों को बन्द करना और यही खूनी की सबसे बड़ी गलती है।"

हार्वे फिर आंखें फाड़कर बदहवास उनकी तरफ देखने लगा, वर्मा जी हँसकर बोले- "तुम वो मुझे जानते हो हार्वे ! अन्दाजा करते-करते मैं सारी वारदात की तस्वीर खींच डालता हूँ और भी सुन लो। अगर वह खिड़कियां खुली होतीं तो बहुत मुमकिन था कि मैं बाहर की तरफ न भो देखता या अगर देखता भी तो इस खिड़की या इसके कटे हुये शीशे पर इतना गौर न करता और कर भी लेता तो कोई खास ख्याल न होता। अक्सर लगाते वक्त भी शीशे टूट जाया करते हैं और इतने छोटे टुकड़े की किसी को पर्वाह भी नहीं होती। अगर खिड़कियां खुक्ती होतीं तो शायद मैं खुदकुशी पर ज्याता जोर डालता हालांकि उसमें भी दो बातों की कमी थी। एक मालिक के मेज पर अधजली सिगरेट का होना और दूसरा किसी पर्चे-पुर्जे का न होना..."

"जी हाँ, यह तो मैंने भी नोट किया। पर्चा। वगैरह कुछ नहीं था ।"

'हो भी कैसे सकता था जब इसकी तैयारी ही नहीं थी और होने के बावजूद भी ऐसी बातें आखीर में आकर उखड़ जाया करती है। उनसे कुछ हासिल भी नहीं होता। एक बात और भी है, उसे शायद आप नहीं देख रहे हैं मगर मैं यह कतई तौर पर समझ रहा हूँ कि खूनी आखिर वक्त में बहुत ही ज्यादा परेशान और उलझन में था। शुरू से उसने बड़ी होशियारी और दूरन्देशी के साथ सारा काम किया। काम का नक्शा भी बड़ी अक्लमन्दी से बनाया और उसी के मुताबिक चलकर पूरी सफलता भी हासिल कर ली मगर मि० हार्वे ! बड़ों की कही हुई यह कहावत बिल्कुल सही है कि पाप सिर चढ़कर बोलता है। इसका मतलब यह है

[३९

कि हर तरह की होशियारी और खबरदारी रखने पर भी कोई भूल ऐसी हो ही जाती है जो सब किये कराये पर पानी फिर जाता है। खूनी ने खिड़कियां बन्द तो कर दीं सगर यह नहीं सोचा कि कमरा साउन्ड प्रफ है, बस! उसकी यही गलती मेरे लिये बहुत बड़ा सूत्र है।"

हार्वे के मुँह पर हवाइयां उड़ रही थीं। वह बार-बार जबान से चाटकर होठों की खुश्की दूर कर रहा था। बड़ी मुश्किल से बोला- "जब आप वाकये की सारी फोटो ही खींच चुके तब तो मैं समझता हूँ खूनी को पकड़ने के लिए ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ेगा।"

"जी हां ! ख्याल तो मेरा भी यही है।" वर्मा जी की नजर वहां रखे हुए टीन के डिब्बों पर घूम रही थी जिनमें चीनी के बर्तन भरे थे। कुछ डिब्बों को इधर-उधर हटाया भी फिर शुरु कर जमीन पर से कोई चीज उठाई। हार्वे इस मर्तबा भी उसे देखने में असफल रहा। उसले रहा न गया तो साहस करके पूछ ही बैठा - "क्या जो कुछ आपको यहाँ मिला है मुझे नहीं दिखा सकेंगे ?"

"आपको दिखा सकूँगा? शायद नहीं। लेकिन जो कुछ मुझे मिला है उससे मैं यह अन्दाजा लगाता हूँ कि खूनी ने गोली मार ने के पहले बहुत देर तक इस जगह इन्तजार किया। इसमें कोई शक नहीं कि सारा काम उसने बड़ी

सफाई से किया है। उस चीज को दिखाने से मैं मजबूर हूँ।"

"मि० वर्मा मैं यहाँ का सिक्योरिटी मैनेजर हूँ। मुझसे कोई बात आपका छिपानी नहीं चाहिये।"

"अगर मि० हार्वे आपको भी यह नहीं भूलना चाहिये कि जिन लोगों पर मेरा शुब्हा है उनमें आप भी शामिल हैं।"

वर्मा की बात सुन कर हार्वे हक्का-बक्का उनकी तरफ देखने

लगा। कुछ क्षण बाद बोला- "क्या कह रहे हैं मि० वर्मा आप ! मालिक का खून मैंने किया होगा ?"

"हो सकता है-शाम को आप का झगड़ा तो हुआ ही था उनके साथ।"

"मगर मैं कसम खा कर कहता हूँ-मैंने ऐसा नहीं किया। बहरहाल अपने अन्दाजे के मुताबिक आप इस फैसले पर तो पहुँच ही चुके हैं कि खून इस जगह से किया गया। और उस मनहूस घड़ी में मैं यहां मौजूद नहीं था।"

"अपनी गैरहाजिरी आप साबित तो कर सकेंगे न ?"

"जी हाँ, उम्मीद भी है और यकीन भी।"

"और वह मनहूस घड़ी किस वजह से थी।"

"आप मेरी बात पकड़ रहे हैं ?"

"जी नहीं, मैं सिर्फ असलियत पर पहुँचने की कोशिश कर रहा हूँ।"

"यही तो मैं भी बवा रहा हूँ आपको। उस वक्त कुछ देख भाल के काम में लगा हुआ था।"

"यानी उस वक्त देख भाल जव कि आप के मालिक का खून हो रहा था।"

"मगर यह मुझे क्या मालूम था कि खून होने वाला है ? सिक्योरिटी मैनेजर को और तमाम बातों की उम्मीद हो सकती है मगर खून की नहीं। मेरी समझ से तो आप बेकार वक्त बरबाद कर रहे हैं आपकी जगह मैं होता तो फौरन ही मिस कार्टर और करडे को हिरासत में लेकर किसी भी तरह उनसे सारी असलियत कबुलवा लेता। कब तक चुप रह सकते थे वे लोग।"

"मतलब यह कि आपके ख्याल के मुताबिक उन्हीं लोगों ने ऐसा किया। अब यह भी बताइये कि अकेले या मिल कर?"

"यह मैं कैसे बता सकता हूँ। वैसे मेरा अन्दाज यह है कि

[४१

काम किया करडे ने और मदद दी कार्टर ने। मगर है दोनों का ही काम ।"

"हो सकता है ! मैं एक मर्तवा फिर मिस कार्टर से बात करूंगा फिर शमशेर को फोन से खबर दूँगा। उस वक्त तक आपने अपने आदमियों के जो बयान लिये हैं उनको तैयार रखियेगा ।"

जवाब का इन्तजार न करके वर्मा जी बाहर निकल गये और खून बाले कमरे के सामने पहुँचे। बाहर बरामदे में कुछ आदमी और औरते खड़े थे। वे शायद मिल में ही कामे करने वाले थे एक अफसर कुछ कागज हाथ में लिये हुए शायद उनके बयान ले रहा था। वह वर्मा जो को एक तरफ ले जाकर बोला- "इन लोगों से वक्त वगैरह की बाबत जो कुछ मालूम किया जा सकता था वह मैंने नोट कर लिया है लेकिन इनके बयानों में मुझे तो कोई ऐसी बात दिखाई नहीं देती जिससे किसी खास नतीजे पर पहुँचा जा सके। फिर भी मुझे जो हुक्म मिला है उसकी तामील कर रहा हूँ।"

वर्मा ने एक बार उन सब को नीचे से ऊपर तक देखा फिर अफसर से कहा - "ठीक है। इन लोगों को जाने दो।"

कुछ देर बाद वर्मा जी अमेलिया के कमरे में पहुँचे और उसी की कुर्सी पर जा बैठे। खबर पाकर जब वह आई तो उनको अपनी कुर्सी पर बैठे देखा। लाचार उसको उनके सामने की कुर्सी पर बैठना पड़ा। बैठते ही बड़ी तिनक कर उसने पूछा- "अब क्या चाहते हैं आप?"

जवाब में वर्मा जी ने दो सिगरेट के टुकड़े उसके सामने सरका दिये। टुकड़ों में लिपस्टिक का रंग लगा हुआ था। वह रंग कार्टर की लिपस्टिक के रंग से मिलता था। उसके देख लेने पर उन्होंने कहा- "आपके मालिक का खून हुआ है अब इसमें कोई शक भी नहीं हैं और उसको साबित भी कर सकता हूँ, कि ये टुकड़े मुझे स्टोर रूम में मिले हैं।"

४२]

अमेलिया बिल्ली की तरह घुरघुराती तो रही पर कुछ बोली नहीं तब वर्मा जी फिर शुरू हो गये ।

"साइलेन्सर लगी हुई राइफल से उनका खून किया। स्टोर रूम से उनको गोली मारी गई और खून को खुदकुशी साबित करने की पूरी कोशिश की गई है। वारदात के कमरे में आने वाली सबसे पहली व्यक्ति आप ही हैं। और लाश को भी सबसे पहले आप ही ने देखा था। इन टुकड़ों में आपके ही रंग की लिपस्टिक लगी हुई है। ये मुझे स्टोर रूम के फर्श पर मिले हैं। इसका मतलब है किसी ने इन सिगरेटों को पीकर वहाँ खून करने तक इन्तजार किया है और वह इन्तजार करने बाला खूनी ही तो हो सकता है।"

"क्या आपको शक है कि मालिक का खून मैंने ही किया है और ये सिगरेट के टुकड़े भी मैं ही वहाँ छोड़ आई थी ?"

"आप ही बता दीजिये छोड़ आई थीं या नहीं।"

"जी नहीं ! न मैंने उनको मारा ही है !"

"मगर वजह तो थी जिससे मजबूर होकर आप मार सकती थीं।"

"इसका मतलब है हार्वे ने आपके कान अच्छी तरह भर दिये हैं।"

"लेकिन उसने गलत कान नहीं भरे ! आपका क्या ख्याल है ?"

"मैं ख्याल कैसे बताऊँ ! जब यही नहीं जानती कि उसने कहा क्या? जरा एक सिगरेट दीजिये।" वर्मा जी से लेकर जलाती हुई वह बोली- "हालांकि मैं सिगरट पीती नहीं लेकिन इसको पीकर आपको देती हूँ ताकि आप दोनों लिपस्टिक का मुकाबिला कर सकें।"

वर्माजी कुछ बोले नहीं। वह चुप सिगरेट पीती रही फिर एकाएक बोल उठी "मि० वर्मा शायद आप मेरी बातें सुनकर मेरी तकलीफों का अन्दाजा न कर सकें। उसकी दो वजह है। एक

तो कि आप औरत नहीं हैं। दूसरे आपने वह गलतियां हर्गिज नहीं की होंगी जो मैंने की है जिनकी वजह से मेरे ऊपर ऐसी मुसीबतें आई कि मैं एक दिन जान तक देने को. तैयार हो गयी थी। और मुझे यह मानने के लिये मजबूर होना पड़ता है कि मेरा यहाँ आना जिन्दगी की सबसे बड़ी गलती हुई।"

"मैं इस बारे में उस वक्त तक कुछ भी नहीं कह सकूंगा जब तक कि आपकी पिछली जिन्दगी की कुछ बातें न मालूम हो जायें।"

"पिछली जिन्दगी ?" एक ठंडी सांस लेकर अमेलिया बोली-"आाग क्यों न लग जाय ऐसी जिन्दगी को। सुनिये उन दिनों सिनेमा कम्पनी का बड़ा जोर था। बहुत सी ऐंग्लो इंडियन लड़-कियों को कम्पनी वाले भरती कर रहे थे। कई लड़कियाँ हिरोइन और साइड हिरोइन बन गईं उनके ठाठ-पाठ देखकर मेरे मन में भी हिरोइन बनने की खत्राहिस जाग उठी। रूप था, जवानी थी, जिस्म था, मतलब यह कि मेरे हिसाब से सब ही कुछ था लेकिन न जाने क्या कमी थी जो डायरेक्टरों की नजर में मैं न चढ़ सकी। हर तरह की कोशिश की। यहाँ तक कि उस ख्वाहिश को पूरी करने के लिये मैंने दो-

चार डाइरेक्टरों को अपनी इज्जत तक उतार कर दे दी मगर..."

"उससे भी कोई कामयाबी नहीं मिली !"

"कामयाबी मिलना तो दर किनार मैं उसके पास तक नहीं पहुँच सकी तब इज्जत बेचने का सौदा मुझे मंहगा मालूम होने लगा। अपने से मुझे नफरत होने लगी। खुलासा तौर पर अपने गुनाहों की दास्तान सुनाकर मैं आपका वक्त नहीं बरबाद करती। मुख्तसर में इतना ही कह देना काफो होगा कि ऊँचे चढ़ने की बजाय नीचे गिरना शुरू हो गया। गिरने की रफ्तार, भी हद से व्यादा तेज थी। अब मैं भी जिन्दगी से उकता गई आखिर मैंने

इस जिन्दगी को खत्म कर डालने का कतई फैसला कर डाला।"

कुछ ठहर कर वह फिर कहने लगी- "जिस रात को मेरी मुलाकात बड़े मालिक से हुई वह रात वह थी जब कि मैं अपनी जिन्दगी के आखिरी पर्दे कोगिरा देने का पूरा इरादा कर चुकी थी। इस इरादे को पूरा करने के लिये मैं बांदरा क्रीक पहुंची थी क्योंकि गरीबी में खुदकुशी करने के लिये मुझे सारी बम्बई में कोई जगह नहीं दिखाई दी। बड़े शहर में खुदकुशी करने के लिये भी पैसा चाहिये यह तजुरबा मुझे उसी दिन हुआ। मेरे पास पैसा था नहीं। दो आने का टिकट लेकर बांदरा स्टेशन पहुँची। वहां से धीरे-धीरे टहलती हुई जिन्दगी के उन मंजरों का ख्याल करती हुई जो मेरे सामने से गुजर चुके थे। रात को साढ़े दस बजे के करीब क्रीक के बिल्कुल ऊपर पहाड़ी पर जा पहुँची। वहाँ से करीब २४० फीट की निचाई पर समुद्री किनारा है। सोच लिया वहाँ से गिरने भर की देर है नीचे पहुँचने के पहिले काम खत्म हो जायगा। उसी वक्त यह भी समझ में आया कि मरना आसान नहीं है। दो-तीन मर्तबा हिम्मत करके आगे तो बढ़ी पर कूदा नहीं गया।"

अमेलिया की आंखें भर आई। उन्हें पोंछकर उसने फिर कहा-"शायद इस दो तीन बार के आगे पीछे हटने को ये ही मालिक कहीं से देख रहे थे। उन्होंने मेरा इरादा समझ लिया। अब जो मैं कूदने को चली तो उन्होंने पीछे

से आकर मुझे पकड़ लिया । पहले मैंने अपने को छुड़ाने की कोशिश की। उनके हाथों का नोचा-खसोटा शायद काटा भी मगर उन्होंने मुझे छोड़ा नहीं और धीरे-धीरे बहलाते समझाते अपनी मोटर तक ले आये। रोशनी में मैंने उनका लिबास देखा। गाड़ी देखी। बोल-चाल सुनी। तब यह इतभीनान तो हो गया कि आदमी अच्छे हैं, हैसियत और तबियत्त दोनों ही अच्छे हैं। उसी वक्त एक गश्ती सिपाही या गया। मुमकिन है दूर से हम लोगों को देख कर

उसने कुछ शक किया हो लेकिन पास आकर जब उसने इनकी शक्ल देखी, सलाम करके एक तरफ चला गया। इससे मुझे और भी तसल्ली हुआ कि मैं गलत हाथों में नहीं पड़ो। वे वहाँ से मुझे सोटर में बिठा कर ले आये।"

'रास्ते में जिस तरह की बातें उन्होंने मेरे साथ की उससे मेरे दिल पर इतना असर हुआ कि अपने को पूरी तरह उनके हवाले कर देने में मैंने कोई बुराई नहीं समझो। मुद्दतों के भूखे को रोटी मिलने पर जो 'हालत है वही हालत मेरी भी हुई फिर मुझे इनकी बात में सीधापन और सच्चाई भी मालूम हुई।"

'मगर आपने उनसे सच नहीं बोला होगा ?"

"बह कैसे?"

"वह ऐसे कि जब उन्होंने खुदकुशी की वजह पूछी होगी वो आपने कोई मन गढ़न्त कहानी सुना दी होगी।"

"ओह ! आप बहुत खतरनाक आदमी हैं वर्मा जी! सचमुच मैंने ऐसा ही किया और उस वक्त बही करना मुनासिब भी था। अगर मैं सच बात कह देती तो मुमकिन था उनकी नजरों में मेरी वह इज्जत नहीं रहती । अपनी कहानी सुनाने के साथ ही मैंने उनसे यह भी कह दिया कि मेरे ऊपर थोड़ा सा कर्ज भी है। उन्होंने पूछा कितना है। मैंने बता दिया। अपने ख्याल से

मैंने बहुत ज्यादा बताया मगर उनके लिये वह कौड़ियों के बराबर था। मेरी बात सुनकर वे हँस पड़े। बोले बस ? चलो उसका भी इन्त-जाम हो जायगा ।"

"कितना कर्ज बताया आपने ?"

"पांच सौ रुप्या ! ज्यादा बताने से जाने उनको एतबार होता या न होता । फिर मुझे अपनी हैसियत का भी ख्याल रखना था।"

"बहरहाल जो कुछ किया आपने अच्छा ही किया फिर क्या हुआ ?"

उसी रात उनके फ्लैट में जाकर मैं उनकी हो गई। दूसरे दिन यह कमरा मेरे लिये तैयार कर दिया गया। मैं उनकी सेकेट्री कह-लाने लगी । उनके मामलों के सिवा और मुझे किसी से वास्ता नहीं था। उन्होंने पूरी सजावट और सामान के साथ एक फ्लैट भी मेरे लिये ठीक करा दिया। पांच सौ रुपये भी मुझे दिये ताकि मैं अपना कर्ज चुका हूँ। यह मैं पहली हीं रात में समझ चुकी थी कि वे खुशामद पसन्द हैं। इन व्यवहारों के बदले वे दिन में दो-चार बार मुझसे सुनना पसन्द करते थे कि आपने जो कुछ किया वह आज तक किसी ने नहीं किया और अगर सच पूछिये तो यह था भी बिल्कुल सही। उनकी खुशी के लिये मैं ऐसा करने भी लगी। लोगों के चरके-धोखे सह कर, उनकी हवस का शिकार होकर मेरे दिल की हालत बिल्कुल बंजर जमीन जैसी हो गई थी। न उसमें कोई पौधा उगता है न मेरे दिल में मोहब्बत का फूल खिल सकता था फिर भी उम्र का लिहाज करते हुए मि० करडे की तरफ मेरा दिल खिंचने लगा है।"

"तब आप यह नहीं कह सकती कि पत्थर नहीं पसीजता हाँ, इसके बाद ?"

"धीरे-धीरे मेरा और करडे का व्यवहार ज्यादा गहराई पकड़ने लगा और यह

बात लोगों को भी जाहिर हो गई। और चार दिन हुए जब कि मालिक के कानों में भी पहुँच गई। ऐसी बातों को जिस तरह मिर्च मसाला लगा कर लोग कहते सुनते हैं यह तो आप जानते ही हैं। मालिक को किसी तरह यह इतमीनान हो गया कि मैं उन्हें भुलावे में रख रही हूँ। वह बड़े नाराज हुए मुझ पर। होना चाहिये भी था।"

"और करडे का क्या हाल था ?"

"वह भी मेरी मोहब्बत में कलाबत्तू हो रहा है। मगर उसको मेरी जिन्दगी के हालत नहीं मालूम। न वह जानता है कि सेठ जी से मेरे क्या ताल्लुकात हैं और मेरा ख्याल है कोई उसे बता भी दें तो शायद एतबार नहीं करेगा। है वह इसी उम्मीद में कि एक-दिन लैला भी मजनू के लिये मजनू बन जायगी। मगर मैंने आज तक सिवा हंसने बोलने के करडे को और कोई मौका ऐसा नहीं दिया है जिससे वह मेरी मोहब्बत का दम भरने लगे और यकीन मानिये कभी दूँगी भी नहीं। उधर हार्वे ने भी कम पैर नहीं पीटे मेरे पीछे, मगर वह मालिक से डरता बहुत है इसलिये ज्यादा हाथ पैर नहीं फैलाये। दुनिया वर्मा जी क्या है हबस के गुलाम भेड़ियों से भरा हुआ एक जंगल है जिसको देखिये। जबान ही चंटखाता हुआ नजर आता है।"

"हूँ।" तो यह है तुम्हारी जिन्दगी की दास्तान । अच्छा । इन सिगरेट के टुकड़ों के लिये क्या जवाब है तुम्हारे पास ? स्टोर रूम मैं कैसे पहुँच सकते हैं ये ?"

"कोई तो पीता ही होगा। मगर मैं नहीं पीती और न में वहाँ गई ही थी। आप मेरा यकीन करिये।"

"शाम को जब आप थीं वहाँ करडे बराबर साथ ही था आपके ?'

अमेलिया पहले कुछ झिझकी फिर एकाएक बोली- "जी नहीं ! बराबर तो नहीं था। मगर उसने मारा भी नहीं। इतना मैं जरूर कह सकती हूँ।"

'और जिस वक्त तुमने गोली की आवाज सुनी वह था तुम्हारे साथ ?"

"जी नहीं !" अमेलिया ने एकाएक कह दिया ।

वर्मा जी उठकर उसके पास आये और कन्धे पर हाथ रखकर बोले- "मुझे इत्मीनान है कि तुम मुझसे सच बोल रही हो। मैं हर तरह से तुम्हारी मदद करूँगा। डरना मत ।"

"शुक्रिया!" अमेलिया ने उनकी तरफ देखकर कहा ।

४८]

"अब एक बात का जवाब और दे दो, दोगी न ?"

"अगर जानती हूँ तो जरूर दूँगी। आप जैसे नेक आदमी से झूठ बोलने का मन नहीं करता।"

"मुझे भी तुमसे यही उम्मीद थी। उस वक्त जब मैं तुमसे और करडे से बातें कर रहा था तब तुमने कहा था कि मालिक ने कोई वसीयत लिखी थी। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं ! उसके जैसा मालदार आदमी अगर न लिखता तो शायद ताज्जुब होता । उस वक्त मुझे ऐसा लगा कि तुमने जिस ढंग से कहा था उससे यह जाहिर होता था कि उसकी निस्वत तुम्हें कोई खास बात मालुम है। क्या सचमुच ही कोई बात है ऐसी ?"

"इतना तो मैं जानती ही हूँ कि उन्होंने एक वसीयत लिखी जरूर जिसको लिखे हुये भी करीब १५ दिन का अर्सा हो चुका । शायद यह दूसरी वसीयत थी।"

"क्या मतलब ? दूसरी। तो पहली का क्या हुआ जो दूसरी की जरूरत पड़ गई?"

"मुझे ठीक तरह नहीं मालूम पर ऐसा समझ में आया कि उनकी गैरहाजिरी में छोटे मालिक ने उसको फाड़ कर फेंक दिया था।"

"गैरहाजिरी से क्या मतलब? क्या वे कहीं बाहर गये थे ?"

"जी हाँ ! नासिक की तरफ कहीं गये थे दो-तीन दिन के लिये। शायद कोई प्राइवेट काम था। जिस दिन वापिस आये उस दिन इत्फाक से मैं भी जल्दी पहुँच गई थी यहाँ और छोटे मालिक भी आ गये थे। शायद बड़े मालिक ने उनको आदमी भेजकर बुलवाया था."

"क्या किया दोनों बाप बेटे ने मिलकर ?"

"छोटे मालिक यहाँ करीब साढ़े नौ बजे आये थे। १५ मिनट बैठे होंगे बाप के पास। उसके बाद बड़बड़ाते हुये बाहर निकले ।

कि फजूल वक्त खराब करने के लिये बुला लेते हैं ऐसी बातों में। बुढ़ापे में आदमी का दिमाग खराब हो ही जाता है। इसी तरह की बकझक करते हुए वे चले गये तब मालिक ने मुझे बुलाकर कहा कि फौरन ही उनके सोलिसीटर मुल्ला एन्ड बलवी को फोन करके यहाँ आने के लिये कह दो।"

"फिर तुमने फोन किया। आये उनके सालिसीटर ?"

"जी हाँ ! करीब आधे घंटे बाद आ गये थे। मालिक ने वसीयत का मजमून पहले ही से लिख रखा था। मुझे और हार्वे को बुलाया गया। हम दोनों ने गवाह बन कर उस पर दस्तखत कर दिये।"

"किस बात के गवाह बन कर ?"

"कि उस पर दस्तखत हमारे सामने साथ-साथ किये गये।"

'मगर उसमें लिखा क्या था यह आपको नहीं मालूम ! न आपने उसको टाइप किया जो कुछ पता लगता ।"

"मेरा ख्याल है उसको किसी ने भी टाइप नहीं किया। सारा काम मालिक ने अपने ही हाथ से किया था।"

"दस्तखत करते वक्त भी आपने कुछ नहीं देखा ?"

"देखने का मौका ही कहाँ दिया उन्होंने। सारा कागज मोड़ रखा था। सिर्फ दस्तखतों की जगह खुली थी।"

"वह वसीयत होगी कहाँ इस वक्त ?"

"जहाँ तक मेरा ख्याल है वकील के ही पास होनी चाहिये।"

"तुम इस वक्त बहुत थकी हुई जान पड़ती हो। इस वक्त मुझे जो कुछ पूछना था पूँछ चुका। अब शायद जल्दी तुम्हारी जरूरत भी नहीं पड़ेगी। तुम घर जा सकती हो।"

अमेलिया के जाते ही हार्वे आ गया। उसने बाहर अमेलिया को जाते तो देखा था मगर यह नहीं जानता था कि वर्मा जी ने उसे घर जाने की इजाजत दे दी है। अन्दर आते ही उसकी नजर

५०]

उन सिगरेट के टुकड़ों पर पड़ी जो अभी तक मेज पर ही पड़े हुये थे। उनकी तरफ इशारा करके वह वर्मा से बोला-

"शायद यह है वह चीज जो आपको स्टोर रूम में मिली थी इन पर तो वैसी हो लिपस्टिक है जैसी कार्टर लगाती है आपने कुछ जवाब-तलब नहीं किया उससे ?"

वर्मा जी चुप मुस्कुराते रहे। कुछ बोले नहीं। तब हार्वे बिगड़ कर कहने लगा- "मि० वर्मा, यहाँ का मैनेजर होते हुये मुझे पूरा अख्तियार है इन बातों को पूछने और जानने का। आखिर उसने कुछ तो कहा ही होगा। बताते क्यों नहीं आप, गई कहाँ वह ?"

"मैंने उसे घर जाने की इजाजत दे दी है।"

"कमाल है, घर जाने की इजाजत दे कैसे दी आपने ?"

"मगर मैं रोक कैसे सकता हूँ, सबूत क्या है ?"

"सबूत ? ये सिगरेट के टुकड़े सबूत नहीं तो क्या हैं ?"

"ये टुकड़े ! ऐसा मालूम तो जरूर होता है कि इनमें वैसी ही लिपस्टिक लगी है जैसी कार्टर लगाती है मगर..।"

"अगर मगर रहने दीजिये। समझ लिया कि आप भी उसके चाहने वालों में शामिल हो गये।"

"क्या ? क्या कहा ?"

"जो कहा वह सुना नहीं आपने! खूबसूरत जवान लड़की चीज ही ऐसी होती है जो बड़े बड़ों को..."

"तड़ाक !" वर्मा जी ने उल्टे हाथ का भरपूर तमाचा हार्वे के मुँह पर मारा और दांत पीसकर चोले "विलायती कुत्ते ! इतनी हिम्मत कि मुझे भी बदनाम करने लगा। जाओ, जो कुछ करते बने सो कर लेना ।"

हार्वे की नाक और मुंह से खून बहने लगा। उसे पोंछता हुआ वह बोला- "यह खून बहना भूलेगा नहीं मि० वर्मा ।"

वर्मा जी आगे बढ़ते हुये बोले- "अगर याद ही रखना है तो कुछ और भी लेते जाओ। वरना जल्दी भूल जाओगे ।"

हार्वे पीछे हट गया। वर्मा जी ने फोन करके आपरेटर से कहा कि शमशेर से लाइन मिला दो। फिर वे हार्वे से बोले-"इन्हीं हरकतों की वजह से तुम्हें पुलिस से बर्खास्त किया गया । इतने दिन साथ रह कर भी अगर तुमने मुझे नहीं पहचाना है तो मैं तुम्हें अच्छी तरह समझाना भी जानता हूँ। जानते हो न मुझे।"

"अब इस वक्त आप जो चाहे कह लीजिये। मगर मौका आयेगा तो मैं भी जवाब दूँगा ।"

"बह मौका इस जिन्दगी में नहीं आयेगा । ठीक-ठीक बताओ बड़े मालिक की वसीयत के बारे में तुम क्या जानते हो ?"

"मैं ज्यादा कुछ नहीं जानता। अमेलिया के साथ गवाह बन कर उस पर दस्तखत किये थे बस ।"

"उसमें लिखा क्या था यह कुछ नहीं जानते ?"

"नहीं, मुझे जानने की जरूरत ही क्या थी ?"

"इसलिये कि हर बात को जानने के ठेकेदार जो बनते हो ।

भले ही तुम्हारा वास्ता उस बात से हो या न हो इसीलिये मैंने सोचा शायद जानते होंगे।"

इसी समय फोन पर शमशेर के क्लर्क ने कहा कि देर ज्यादा हो गई है वो सो गये हैं।

"सो गये हैं तो वो कोई टीपू सुल्तान नहीं हैं जो जगाये न जा सकें। तुम जगा दो उनको और कह दो कि मैं बातें करना चाहता हूँ।".

कुछ मिनट के बाद शमशेर की आवाज सुनाई दी - "हेलो !" तब वर्मा जी ने कहा- "मैंने आपको इस वक्त सिर्फ यह इतला देने के लिये फोन किया कि यहाँ जो कुछ हुआ है उसे कतई तौर पर खून माना जा सकता है। खुदकुशी किसी हालत में नहीं की गई।"

"और उसके लिये इस तरह खुले आम बोल रहे हैं आप। अखबार वालों को जानते हैं न ?"

"मैं सबको जानता हूँ। आपको डरने की जरूरत ही क्या रह गई अब । पुलिस को बेफिक्री के साथ खबर करिये।"

"मगर मैंने आपको दोपहर में खबर देने के लिये कहा था।"

"उस वक्त तक मैं ठहर नहीं सकूँगा। मैं जा रहा हूँ अपने फ्लैट में आराम करने के लिये। इसी बजह से यह खबर अभी दे दी आपको !"

"लेकिन मैंने कहा था।"

"मैं भूला नहीं हूँ जो कुछ कहां था आपने और आधे से ज्यादा वह काम मैंने कर भी दिया है। वह आधा ही कितना जरूरी है यह आप भी समझ सकते हैं। यह खबर अब बाहर जा सकती है आपको इससे कुछ नुकसान नहीं पहुँच सकता ।

"हाँ-हाँ, मगर मेरी बात तो सुनिये ?"

"बहुत सुन चुका ! आप सिवा धमकियों के और तो कुछ सुनाने वाले हैं नहीं। मगर मेरे ऊपर अब उनका कुछ असर नहीं हो सकेगा, ये आपके सजे हुये कमरे आप ही को मुबारक । मेरा फ्लैट आपके इन कमरों से लाख दर्जे बेहतर है आपको शायद अपने मैनेजर हार्वे साहब का घमंड है उनसे भी कह दीजिये । अगर मुझे रोक सकते हैं तो कोशिश कर देखें, एक तमाचा तो खा चुके हैं बिचारे अपनी बदतमीजी पर। अब उन्हें पुलिस लोक-अप में भिजवाना ही बाकी रह गया है, बाकी सब आदमियों को मैंने अपने हुक्म से घर जाने दिया है। आप या आपका मैनेजर किसी को रोकने की कोशिश भी न करें वरना पछताना पड़ेगा। आपके मैनेजर को मैं फोन दे रहा हूँ, आप उन्हें मेरे रोकने का हुक्म दे सकते हैं मगर यह सोचकर ही दीजि-येगा कि दो घन्टे बाद मिल में सरकारी ताले पड़ जायेंगे। आज की रात अच्छी तरह आराम कर लेने के बाद कल अगर आप चाहेंगे तो मैं आपसे बातें करने का समय निकाल सकता हूँ।"

शमशेर जोर से चिल्लाकर बोला- "मगर वर्मा जी आप हर्गिज ऐसा नहीं कर पायेंगे, यह न भूलिये कि मेरा नाम जंग शमशेर है।"

"बको मत बेवकूफों की तरह !" हार्वे को रिसीवर देते हुये उन्होंने कहा- "हार्वे ! तुम्हारे मालिक शायद तुमसे कुछ बातें करना चाहते हैं यह लो रिसीवर...?"

रिसीवर मेज पर पटक कर वर्मा जी तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़े । हार्वे ने चाहा कि उनको रोके मगर हिम्मत न पड़ी। उधर रिसीवर मेज पर पड़ा था, यह भी डर था कि शमशेर गालियाँ सुनायेगा। एक ही तमाचे से अभी तक सिर भन्ना रहा था, डरता था कि अगर दो-चार हाथ और पड़ गये तो चार-वै दिन की छुट्टी हो जायगी। उसने चुपचाप रिसीवर उठा लिया और देखत्ता रहा कि वर्मा मेज पर से वह फाइल समेट रहे हैं जिसमें सारे आदमियों के दिये हुये बयानों के कागज मौजूद थे। फाइल लेकर जब वे बाहर निकल गये तब उसने रिसीवर कान से लगाया। शमशेर कुँझला रहा था, इसकी आवाज सुनते ही बोला- "कहाँ गया वह जासूस का बच्चा ? है किं नहीं वहाँ ?"

"जी ? जी नहीं! वह तो चला गया। अँग्रेज हूँ तो क्या करूँ ? बाकी सब कारबार तो हिन्दोस्तानी ही है, जो हो, यह ठीक है। मगर अब तक तो वह बाहर टैक्सी पर भी पहुँच गया होगा। जी हाँ, और मैं समझता हूँ अब तो उसकी जरूरत भी खत्म हो गई है। अब उसे बुलाना फिजूल है मैंने सब कुछ देखने के साथ समझ भी लिया है। जिस सबूत पर उसने सारी बन्दिश

बाँधी है वह भी मेरे ही पास मौजूद है आप कल सुबह जरा जल्दी जाइये । आपके आते ही मैं खूनी को गिरफ्तार करा दूँगा ।। सबूत मेरे ही पास मौजूद है। शायद गलती से उन्हें यहाँ छोड़ गया है।"

"सबूत है किसके खिलाफ वे ?"

"अमेलिया के सिवा और किसके खिलाफ हो सकते हैं !"

"अमेलिया ? बाबा की सेक्रेटरी।" माशूका ! और उन्हीं की खूनी ? सोच समझ कर जबान खोलना, पछताना न पड़े बाद में।"

"बेफिक्र रहिये ! ऐसी नौबत नहीं आयेगी। वह बड़े साहब की सेक्रेटरी जरूर थी मगर माशूका नहीं थी। हां एक मानों में आप उसे रखैल कह सकते हैं। असली माशूका तो वह करडे की है। यह बात कल ही शाम को

बड़े साहब को मालूम हुई थी। वैसे मालूम तो और लोगों को भी थी मगर किसी को क्या गरज थी जो खामखा झगड़े में पड़ता। हालांकि कितनी ही मर्तबा लोगों ने उन दोनों के अकेले-दुकेले देखा मगर बड़े साहब से कहने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। कल अचानक ही यह बात उनके कान में पड़ गई और पता लगाने पर सच भी साबित हुई। तब तो बहुत बुरी तरह फटकारा उन्होंने अमेलिया को। औरत की बाद को तो आप जानते ही हैं न बनते देर न बिगड़ते । थोड़ी देर बाद ही उसने मौका पाकर स्टोर रूम से उनको गोली मार दी। बाकी इन्तजाम करने में करडे ने उसकी मदद की।"

"इस वक्त तुम इतनी मजबूती से ये बातें कह रहे हो मगर मुझे डर है कि वर्मा के सामने तुम्हारी बन्दिश ऐसे ही उड़ जायगी जैसे आंधी के सामने बादल !"

"देखिये ! मेरा और वर्मा का न तो कोई मुकाबिला है न ऐसा होने का कभी कोई मौका आया है। मगर इस मत वे मैं आपको दिखा दूँगा कि वर्मा को शर्मिन्दा होना पड़ेगा। मैं पुलिस को फोन कर रखूँगा। कल आपको आते ही वे लोग यहां पहुँच जायेंगे। खून के जुर्म में अमेलिया को और उसकी मदद करने के जुर्म में करडे को गिरफ्तार करा दिया जायगा ।"

"अगर इतनी मुस्तैदी दिखा सकते थे तो कल क्या हो गया था ? कल तो तुम्हीं ने वर्मा को बुलाने की राय दी थी। अब जब कि वह सारी मुश्किलें आसान कर गया तो तुम अपने सिर सेहरा बँधवाने का दावा करने लगे।"

"मि० शमशेर ! हर वक्त इन्सान का दिमाग हाजिर नहीं रहता । कल ताजी परेशानी थी। बात खुल जाने का डर था । वर्मा को बुलाना जरूरी मालूम हुआ। मगर अब सारा काम मैं सँभाल सकता हूँ।"

"अच्छी बात है कल देखा जायगा। क्या तीर चलाओगे ?"

***

पुलिस अफसर चिन्तामग्न अपने दफ्तर में बैठे बाम्बे आयल मिल के

हत्याकांड की रिपोर्ट देख रहे थे जब कि सब इंस्पेक्टर यशवन्त ने आकर खबर दी कि वर्मा जी आये हैं। चिन्तामन के हाथ पैर फूल गये । वे जानते थे सारा मामला सुनकर वर्मा उनकी हँसी उड़ायेगा। जो कुछ अब तक हुआ है उसमें दस कमजोरियां दिखाकर सारी मेहनत पर पानी डाल देंगे मगर यह जानते हुए भी उनकी हिम्मत न पड़ी जो किसी तरह से इन्कार करवा देते । बल्कि यशवन्त से बिगड़ कर बोले- "तुम्हारे मुँह में। जबान नहीं थी जो कह देते कि इस वक्त बहुत जरूरी काम कर रहे हैं अभी किसी से नहीं मिल सकेंगे।"

"कहूँ तो उससे जो कोई सुने और उस पर अमल करे । जो

कुछ आप मुझसे कह रहे हैं जरा उनसे कहकर देखियेगा क्या जवाब मिलता है।"

"जवाब देने से भो कोई फायदा नहीं होता यशवन्त !" कहते हुये वर्मा अन्दर आ गये और हँसकर बोले- "मि० चिन्तामन की आदत ही पड़ गई है कि काम हो चाहे न हो मगर मेरा नाम सुनते ही इनको काम की याद आ जाती है।"

कुर्सी खींचकर वर्मा चिन्तामन के सामने ही बैठ गये और चिन्तामन सिटपिटा कर लगे जबर्दस्ती होंठों पर हँसी लाने की कोशिश करने। उनकी वह हालत देखकर वर्मा तो उतना नहीं हँसे मगर यशवन्त से नहीं रहा गया। ठठाकर हँस पड़ा। चिन्तामन उस पर बिगड़ कर भी कुछ करते नहीं थे लेकिन इस समय वर्मा के सामने अपनी पोजी-शन का ख्याल करके बोले-

"वह कहावत सही है कि गधे को गंगा नहला देने से वह पंडित नहीं हो जाता। इसको मैंने सब-इंस्पेक्टर तक बनवा दिया मगर अक्ले न आनी थी वो नहीं ही आई।"

"जाने भी दीजिये इन बातों को। लड़का है शुरू से आप ही के पास रह रहा है तो हँसने बोलने के लिए किसी और के दरवाजे पर तो जायगा नहीं और

सुनाइए, ताजे हाल-चाल क्या हैं, क्या कोई नया केस देख रहे हैं।"

"दाई के आगे पेट छिपा रहे हो वर्मा ! जिस मतलब से आये हो उसे क्यों नहीं बयान कर डालते ।"

"चोर की। दाढ़ी में तिनका ! न तो मेरा पेट है न मैं किसी मतलब से आया हूँ। मगर आप दाई कब से बन गये। मुझे तो ताज्जुब हुआ सुनकर । बहारहाल अब दाई बन गये हैं तो यह भी कह डालिये कि मैं किस मतलब से आया हूँ ?"

"तुम आये हो बाम्बे आयल मिल के मर्डर के सिलसिले में । मगर आने की तकलीफ न की होती तो अच्छा था। तुम आये

होगे अपना ख्याल जाहिर करने ! मगर मैं समझता हूँ अब उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि मैं किसी फैसले पर पहुँच कर उस आदमी का पता लगा चुका हूँ जो इस खून का जिम्मेदार है।

"क्यां ? क्या कहा आपने? पता लगा चुके हैं? किसका ? खूनी का ? सच ?" वर्मा जी ने बड़ी तेजी से पूछा ।

"मैं जानता था इस बात को सुनते ही तुम परेशान हो जाओगे हालाकि जाहिरा उसकी कोई वजह नहीं मालूम होती ।" मौके पर पहुँच कर मुझे मालूम हुआ कि सारे वाक्यात तुम्हारी नजरों के सामने यानी उँगलियों पर नाच रहे थे मगर तुमने उनकी परवाह नहीं की और उनको ठुकरा कर चले आये । खून के मामलों में ऐसे सबूतों का मिलना हमेशा नहीं हुआ करता।"

" और आपने इसके जुर्म में गिरफ्तार किसको किया है।"

"सिवा अमेलिया कार्टर के और किसको करता। खूनी वही है।"

"और इस पर भी आप कह रहे हैं कि खूनी का पता लगा चुका हूँ।"

'बेशक ! तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"मेरा ख्याल ? सही पूछना चाहते हैं तो मेरा ख्याल यह है कि आप वाकई ऐसा कर चुके हैं तो बेशक आपने ईनाम पाने लायक बेवकूफी की है। आपही जैसे लोंगों की वजह से पुलिस के महकमें की लोगों की नजरों में कोई कीमत नहीं रह गई है। आफरीन है आपकी अक्त को।"

वर्मा जी की बात सुनकर चिन्तामन हँस तो पड़े मगर अन्द्र ही अन्दर उन्हें बड़ा धक्का लगा। तब भी उसे दबाकर कहने लगे "मैनेजर हार्वे ने ठीक ही कहा था कि उस लड़की ने तुम्हारे ऊपर भी अपना जादू चला दिया है। अगर सचमुच ही ऐसा हो गया है तब तो कोई किसी तरह भी नहीं समझा सकता तुमको।"

"मगर हार्वे ने यह तो शायद नहीं बताया होगा कि इस बात के कहने पर उसे मिला क्या था और आपको भी लिहाज तो नहीं आया मेरी निस्बत ऐसी बात जबान से निकालने में । पहले भी किसी लड़की ने फँसाया है मुझे जो आज यह फंसा लेती।"

"अरे भाई यह औरत का चक्कर है। बड़े-बड़े देवताओं की भी नियत बिगाड़ देती है और फँसाया या नहीं मुझे इससे वास्ता भी क्या ? तुम्हें मालूम है जिस राइफल से गोली मारी गई है बह कार्टर की गाड़ी में ही गद्दी के नीचे मिली है।'

"ओहो ! तब तो मामला बहुत आगे बढ़ गया जान पड़ता है। मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि उसके पास कोई गाड़ी है भी या नहीं। बहरहाल आप मुख्तंसर में यह बता दीजिये कि आपने उसे गिरफ्तार कर लिया या करने वाले हैं। सीधा जवाब देने में कुछ तकलीफ तो होती नहीं।"

"मेरा जवाब सुनकर तुम्हें तकलीफ होगी। सुनो ! मैंने उसे कर लिया है गिरफ्तार । मगर इस जुर्म में नहीं दूसरे में।"

"दूसरे में? यानी खून के अलावा भी कोई जुर्म है उसके ऊपर । जरा वह भी बता डालिये।"

"उस राईफल का चुराना जिससे खून किया गया। वह राईफल वहाँ के शो रूम की है जो किसी तरह उसके हाथ लग गई। उससे अपना काम पूरा कर लेने के बाद वह उसे मिल से बाहर ले जाने की कोशिश कर रही थी। तुम नहीं जानते, बहुत्त ही चलती हुई रकम है वह ! उसने नहीं किया तो किसी से कराया होगा। बहरहाल खून तो हुआ ही।"

"बह राइफिल शो रूम में क्यों रहती थी? वह तेल की मिल है या बन्दूकों की दूकान !"

"इसलिये कि वह खास तौर से बनी हुई थी। उसके इतने

[

छोटे टुकड़े हो जाते थे कि कोई आसानी से उसे थैले में डालकर ले जा सकता था।"

"तो शायद उसने भी उन टुकड़ों को अपने पर्स में डाल लिया होगा ।"

"वर्मा जी! खामखा बहस मत करो। एक राइफिल ही क्या वहाँ और भी कितने सबूत ऐसे हैं जिन पर मुकदमे की सारी बुनियाद कायम हो सकती है। मगर तुमने तो आँख उठाकर देखा ही नहीं उनको।"

"वह आपकी नजरों में सबत होंगे मि० चिन्तामन ! जरा एक-दो का नाम तो लीजिये किनको सबूत कहते हैं आप ?"

"उन सिगरेट के टुकड़ों के लिये क्या ख्याल है तुम्हारा ? उन में ठीक कार्टर के ही जैसी लिपस्टिक लगी हुई है। तुमने खुद ही वहां यह कहा है कि खूनी ने उनका स्तेमाल किया है।"

"आप की बातों से मैं यह अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि हार्वे ने खूब जहर

भरा है आपके कानों में।"

"यह तुम कह सकते हो। पर मुझे तो उससे बात करनी ही थी वह वहां का मैनेजर है। कुछ दिन पुलिस में भी काम कर चुका है। तुम क्यों उसे बेवकूफ समझते हो ?"

"अगर मैं समझता हूँ तो गलती नहीं करता। उसकी बात छोड़िये, मैं आप ही से पूछता हूँ। आपको उन सिगरेट के टुकड़ों से क्या साबित होता है ?"

"यही कि खूनी लिपस्टिक का इस्तेमाल करता है और अपना काम करने के लिये उसको कुछ देर स्टोर रूम में ठहरना पड़ा। उसी दौरान में उसने वो सिगरेटें पीं।"

"जीते रहिये मि० चिन्तामन। मेरे ख्याल से आप ज्यादा वक्त बह पगड़ी सिर पर मत रखा करिये। इससे दिमाग को ताजी हवा नहीं लगने पाती। मैं आपकी इन्हीं दो बातों को दूसरे

तरीके से समझाता हूँ। शायद आपने उन टुकड़ों को ध्यान से तो देख ही लिया होगा।"

"बेशक ! हार्वे ने उनको संभाल कर रख छोड़ा था। तुमने उनकी कुछ जरूरत नहीं समझी मगर वह तो समझता था कि वह कितने काम की चीज है।"

'वह जितने काम की है वह मैं खूब समझता हूँ और इसी लिये मैं उनको जान बूझ कर छोड़ आया था कि आप जैसे लोग उससे क्या फायदा उठाते हैं। सबसे पहले यह बताइये कि लिप-स्टिक होती कितनी तरह की है।"

"उनके रंग हलके गहरे होते हैं और कितनी तरह की होती हैं।"

"जरा अपनी मैडम से पूछियेगा। बहरहाल इस वक्त मैं बताता हूँ रंगों के

अलावा भी वह दो तरह की होती है। एक होती है पानी की तरह पतली जो थोड़ी देर बाद अपना हल्का रंग छोड़ कर गायब हो जाती है और दूसरी होती है परिवर्तनीय और ग्रीज से बनी जो होठों पर भी काफी देर तक जमी रहती है और किसी चीज पर भी होठों के लगने से उसका रंग उस चीज पर लग जाता है।"

"मान लिया ! इसी लिये उसका रंग सिगरेट के टुकड़ों पर लगा हुआ है।"

"मगर उन पर लगने से पहले बह किसी मर्द के होंठों से भी तो लग सकती है।"

चिन्तामन ने ऐसे चौंककर वर्मा जी की तरफ देखा मानो साँप ने काटा हो फिर वे बोले- "बाल की खाल निकालने की तो पुरानी आदत है तुम्हारी ।"

"और आप जब किसी मार्के की बात का जवाब नहीं दे सकते हैं तो इस तरह से अपना बचाव करते हैं। दूसरी बात यह बात , जिस राईफल से आप खून होना मानते हैं उसकी नली तो

और राईफलों की ही तरह होगी या नली के भी टुकड़े हो जाते हैं।"

"नली के टुकड़े कैसे हो सकते हैं और होने न होने से फर्क क्या पड़ता है।"

"आदमी अगर गधे की बजाय खुद घास खाने लगे तो भी फर्क क्या पड़ता है। वाह मि० चिन्तामन ! फर्क यह पड़ता है कि नली इतनी छोटी नहीं होती जो थैली में छिपाई जा सकती हो।"

"तुम तो खामखा की बातें करते हो। मैं कहता हूँ औरत चाहे तो सब कुछ कर सकती है।"

"मगर इसके छिपाने की तरकीब औरत से ज्यादा आसान एक मर्द निकाल सकता है। वह पतलून के अन्दर यानी टांग से बांध कर राइफल का लाना,

ले जाना दोनों ही कर सकता है।"

"मगर हमें जरूरत ही क्या कि सामने मौजूद खूनी को छोड़ कर दूसरे खूनी की तलाश करते फिरें। आप भी ऐसी उल्टी बहस करेंगे ऐसा तो मैं कभी समझता भी नहीं था ।"

"इस मामले में शुरू से ही सारी बातें उल्टी होती चली जा रही हैं। इसीलिये मैंने नालायकों से कहा था कि पुलिस को खबर दे दो। मगर अक्ल के दुश्मनों ने पर्वाह ही नहीं की।"

"अपना-अपना तरीका है। मुझे तो मि० शमशेर ने हर तरह की मदद दी। उन्हीं की वजह से हम लोग इतनी जल्दी और इतनी आसानी से किसी नतीजे पर पहुँच गये।"

"जी हाँ ! वह तो बिल्कुल साफ नजर आ रहा है।"

"वर्मा जी ! तुम इस तरह की तानेकशी क्यों किया करते हो ?'

"इसलिये कि मुझे आपके इस मोटे जिस्म से ज्यादा तरस आपकी मोटी अक्ल पर आता है। उस पर भी तुर्रा यह कि अपनी गलती आप कभी मानते नहीं। शमशेर और हार्वे ने

आपको जो कुछ समझा दिया आपने उसी पर सारा केस कायम कर डाला। उन्होंने ऐसा क्यों किया यह मैं अभी तो नहीं बता सकता मगर किया जरूर। उन लोगों ने शायद आपको वह सबूत भी पेश कर दिये होंगे जो मेरे हाथ पड़ नहीं सके या पड़ने लायक ये नहीं लेकिन मैं फिर भी यही कहता हूँ कि सबूत वहाँ मौजूद वे उनके बल पर कोई बड़ा बेवकूफ भी कार्टर को गिरफ्तार करने का इरादा नहीं करेगा। मैं आपको समझा रहा हूँ कि सिगरेट के टुकड़ों पर लिपस्टिक का लगा होगा इतना जबर्दस्त सबूत नहीं है जिनकी ताकत पर किसी को खूनी ठहराया जा सके। आपने सुना होगा। करडे से उसका लव है। मान लीजिये करडे ने उसको किस किया ।

लिपस्टिक उनके होठों पर लग गई। जिसकी उसे खबर तक भी नहीं हुई।".

चिन्तामन हँसकर बोले- "मैं इसको सनक के सिवा और क्या कह सकता हूँ।"

"सनक ही सही ! मगर ऐसा हो तो सकता है न । किसी भी तरह से देखिये। अगर खून करने का कोई मकसद कार्टर का हो सकता है तो करडे का भी हो सकता है। फिर वह मर्द है। मैं पहले कह चुका हूँ कि यह काम औरत की बजाय मर्द आसानी से कर सकता है। मैं क्या कर चुका हूँ। क्या करने की तैयारी में हूँ यह अभी आपकी इस पगड़ीदार खोपड़ी में नहीं आ सकता। फिर भी आप एक मर्तबा सोच लीजिये। कार्टर के खिलाफ आपके पास कोई सबूत नहीं है।"

"और वह राईफल ?"

"बह तो कोई भी रख सकता था ।"

"ओह ! यह हो सकता था। बह हो सकता था। फिर हो क्या नहीं सकता था ?"

"मि० चिन्तामन ! ऐसा फडीचर केस लेकर अदालत में

खड़े हो जाना, जो वकील सफाई एक ही जिरह में उड़ा कर फेंक दे।"

इस इशारे का चिन्तामन को तजुर्बा था। वे सहम गये और कुछ सोच कर बोले - "तब क्या मैं यह मान लूँ कि तुम्हारी बालों में कुछ दम है।"

"अगर ऐसा करेंगे तो आपका ही फायदा होगा ?"

"मगर यह मत समझना कि तुम्हारे कहने से मैं कार्टर के सामने झुक जाऊँगा ! अदालत जो चाहेगी फैसला करेगी।"

"न मालूम आपने खुद कार्टर से बातें की है या नहीं! मैं कर चुका हूँ, मुझे पूरा विश्वास है कि वह बेगुनाह है और मैं उसके और शमशेर के बारे में अपने खर्च और जिम्मेदारी पर पता लगाने का भार लेता हूँ। यह इसलिये कह रहा हूँ ताकि आप बाद में खबर न होने की शिकायत न करें। इसके अलावा एक बात और भी बताता हूँ आपको यह लीजिये ।"

"क्या है यह ?"

"यह ऐसा सबूत है जिसका आपको गुमान तक नहीं है।"

"मगर यह तो खाली डिबिया है कागजी मैचेस की।"

"इसी अक्त पर तो मुझे तरस आता है जरा उसे उल्टा करके देखिये।"

उल्टा कर के देखने पर एक अधजली मैचेस की तीली निकली तीली पर कारखाने का नाम छपा था। जो उन्हें इश्तिहार की शकल में बांटता था । वर्मा जी बोले- "ऐसी डिबिया बम्बई के एक ही क्लब में मिलती है। यह भी मुझे स्टोर रूम में उन सिग-रेट के टुकड़ों के साथ ही मिली है। अपनी रिपोर्ट में मैं इस डिबिया का जिक्र भूल गया था।"

"ठीक है मगर मेरी समझ में नहीं आया इस टुकड़े और डिबिया में ऐसी क्या खास बात दिखाई दे रही है तुमको।"

"जब मैंने यह बता दिया कि यह कहाँ मिली तब आपको यह मानने में कोई एतराज नहीं होना चाहिये कि खूनी ने इसे काम में लिया। मैंने यह भी पता लगाया है कि इस क्लब में औरतों के जाने की मुमानियत है। इसका मतलब है यह डिबिया वहाँ से किसी मर्द के जरिये आई है। इससे क्या समझते हैं आप ?"

"यही कि डिबिया किसी मर्द ने ही कार्टर को दी।"

"शुक्र है ! तब आप उस देने वाले का भी पता लगाइये मि० चिन्तामन ! आगे चल कर आपको इसकी खास जरूरत पड़ेगी।" इतनी बात कह वर्मा जी उठ कर बड़ी तेजी से बाहर चले गये । सड़क पर आकर एक होटल से उन्होंने मिल को फोन करके शमशेर के लिये पूछा। जवाब मिला- "आज सुबह से ही वे
यहाँ नहीं हैं।"

"आयेंगे भी या नहीं लौट कर ?"

"यह भी नहीं कहा जा सकता।"

"आप मुझे उनके घर का नम्बर बता सकेंगे ?"
"मैं माफी चाहता हूँ ऐसा करने का मुझे हुक्म नहीं है।"

"अच्छी बात है. कोई हर्ज नहीं!" फोन बन्द करके वर्मा जी ने एक प्याला चाय मँगाया और पीते-पीते कुछ सोचने लगे ।

५

रात का एक बज रहा था। मगर सिविल मिलेटरी क्लब के हाल में उतनी ही भीड़ थी जितती शाम को रहती थी। तमाम मेजें भरी हुई थीं। काफी तादाद में लोग इधर उधर टहल रहे थे। उन्हीं में वर्मा और क्रानिकल का सम्वाद दाता तुलसीदास भी थे। दोनों के हाथ में एक-एक बियर का गिलास था। तुलसी बोला- "लोगों का कहना है कि इस क्लब के अब

इने-गिने मेम्बर रह गये हैं। आज की भीड़ क्या उसी का सबूत है।"

वर्मा जी चारों तरफ नजर दौड़ाते हुये बोले- "यह जमाव तो जैसे लोगों का है उनकी तारीफ के लायक मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। एक वक्त था जब इस क्लब से ताल्लुक रखने वालों की शहर में कुछ इज्जत थी। जिन्दगी कैसे गुजरनी चाहिये वो लोग यह तो जानते ही थे मगर जिन्दगी का लुत्फ

भी उठाते थे । ऐश-आराम के साथ अपनी जिम्मेदारी को भी खूब समझते थे।"

"जी हाँ और आज कल के इन नौजवानों को देखिये । बाप दादों की कोशिश खुशामद से अगर सौ रुपये की नौकरी मिल गई है तो बेटा जी कमाई से ज्यादा का बिल शराब का बनवा लेते हैं बाकी सारा खर्च घर वालों के ऊपर। यह है भारत माता के होनहार सबूत जिनके ऊपर देश की भलाई बुराई का सारा दारमदार है। जरा इनकी तन्दुरुस्ती, इनकी सुरत सकल के साथ इनकी हरकतें देखते जाइये।"

"ओहो तुम तो बहुत बुरी तरह जले हुये हो इनके ऊपर !"

"आप जलने को कहते हैं। मेरा बस चले तो इनको बैलों की जगह गाड़ियों में जुतवाऊँ ।"

"न ऐसा हो सकता है न तुम कर सकते हो। हफ्ते में दो-चार तो आर्टिकिल निकलते ही हैं अखबारों में इनके बारे में। वह क्या इनके मां-बाप नहीं पढ़ते होंगे। मगर वह भी क्या कर सकते हैं? और ये लोग तो उस प्लास्टर के बने हुये हैं ही जिन पर पानी ठहर ही नहीं सकता।"

"कब तक नहीं ठहरेगा। आखिर तो सच्चाई रंग लायेगी ही।"

"अरे बाबा ! रंग वंग कुछ नहीं लायेगी। पढ़ने वालों को थोड़ी देर का मजाक मिल जाता है बस, लेकिन तुम चाहो कि इन बातों से कोई नतीजा निकले यह नामुमकिन है।"

"तम तो जो बात करोगे नशा उखाड़ ही करोगे। मैं तुम्हीं से तुम्हारा परसों रात बाला केस पूछता हूँ अगर पब्लिक को यह पता लग जाय कि वह बुड्ढा कैसा सूरत हराम था तो क्या लोगों को उससे नफरत नहीं होगी ?"

"मान लिया हो भी गई नफरत ! पर इससे उसका क्या बिगड़ेगा ?"

"अब नहीं बिगड़ सकता क्योंकि मर गया। वर्ना अगर जिन्दा रहता तो मैं उसकी ऐसी धूल उड़ाता जो वह भी याद रखता।"

"मिस्टर ! यह तो तुम अब कह रहे हो जब मैंने उसके बारे में तुम्हें बहुत कुछ बता दिया है। मगर एक बात याद रखना कि सिर्फ दौलत ही नहीं थी जिससे वह हर तरह की खुशी खरीद सकता था। खुशी और चैन अक्सर दौलत के साथ चलते हुये नहीं पाये जाते । उसके पास रुपया जरूर था मगर उससे उसको सची खुशी नहीं हासिल होती थी। यह भी सुनकर तुम्हें ताज्जुब होगा कि उसकी कुछ आदतों को छोड़कर बाकी बातों के लिये मैं उससे हमदर्दी रखता हूँ।"

"तुम्हारी तो माया ही निराली है। हमदर्दी के ठेकेदार तुम्हीं तो हो!"

"मैं असल में शमशेर की तलाश में आया था। दो मर्तबा फोन किया उसको पर मिला ही नहीं।"

"उससे तुम्हें मिलना किसलिये था।"

" उस दिन उसने सरसरी तौर पर एक बात कही थी। उस वक्त तो मैंने कुछ ख्याल नहीं किया मगर बाद में ऐसा मालूम हुआ कि वह बात भी कुछ मतलब रखती है।"

"और बात क्या थी वह ?"

"उसने कहा कि बहुत से लोग मेरे बाप को मारना चाहते थे। वह लोग उनकी मौत से खुश हुए होंगे। अब मैं उससे यह पूछना चाहता हूँ कि जिस वक्त मर्डर हुआ वे लोग कहां थे। उनमें से एक भी उनके आस-पास थे या नहीं।"

"पहले यही क्यों नहीं मालूम करते कि वे लोग हैं कौन-कौन ? उनमें ज्यादा लोग ऐसे हो सकते हैं जिनके साथ उसने कोई उल्टा सीधा व्यवहार किया होगा और वे लोग मील में ही काम करते हैं।"

"इसका पता लगाना क्या तुम इतना आसान समझते हो । इसमें तो. सारी जिन्दगी भी खत्म कर दोगे महाराज तुलसीदास तो भी कुछ नतीजा नहीं निकलेगा।"

"मगर इतना तो होगा ही कि जिसने भी नौकरी की अर्जी दी होगी उसमें उसकी असल नसल तो लिखी होगी। फिर उनके पास हार्वे मैनेजर है। उसने बगैर जरूरी बातें मालूम किये कैसे किसी को नौकर रखा होगा।"

वे तमाम चीजें करीब-करीब मैं देख ही चुका हूं। नौकरों की लिस्ट उनके कैरेक्टर शीट। कल रात को दिये हुये उनके बयान मगर उससे मामले पर कोई खास रोशनी नहीं पड़ती। तुमसे भी इसीलिये भेंट की कि शायद बुढ्ढे के बारे में कोई खास बात का पता चलेगा क्योंकि लन्दन के एक बड़े मशहूर और तजुर्बेकार जासूस का कहना है कि ऐसे पेचीदे मामलों में खूनी से ज्यादा उस आदमी की पिछली जिन्दगी का पता लगाओ जिसका खून हुआ हो ! बहुत मुमकिन है कि उसका पता लगाते-लगाते खूनी अपने आप ही सामने आ जाये।"

"शायद यह तरकीब इस मामले में कारगर न साबित हो क्योंकि उसकी जिन्दगी के साथ कोई खास भेद लगा हुआ नहीं है। गिनी-गिनी बात है। वह बेरहम सख्त था। पैसे और पोजी-शन का लालची था। मौके का पूरा फायदा उठाता था और हमेशा उसकी तलाश में रहता था। हर चीज उसे मिलती थी ।

अपनी हबस को पूरी करने के लिये वह पैसा खर्च करने में पीछे नहीं हटता था।"

"क्या इस आखिरी बात को कहने में तुम्हारा कोई मतलब है?""

'मतलब तो है ! मगर इस मतलब को समझाने के लिये कहीं बैठना चाहिये। वह देखो। सामने की मेज पर से लोग उठ रहे हैं। आओ जल्दी।

किसी के कब्जा करने से पहले ही हम लोग वहाँ डट जायें।"

दोनों लपके और उस मेज के आदमियों के उठते ही कुर्सियों पर जम गये । बाय को बुलाकर दो बोतल बियर के साथ कुछ खाने की चीजों का आर्डर दें दिया गया। कुछ ही मिनट बाय सब चीजें लाकर रख गया। इन लोगों ने खाना शुरू कर दिया । कुछ क्षण बाद तुलसीदास बोला- "तुम्हें तो शमशेर के इंतजार में रात खराब करना ही है।"

"तुम भी पूरे बजर बट्ट ही हो। मैं पूछ रहा हूँ बाप की बाबत तुमने बेटे की निस्वत शुरू कर दिया।"

"अरे भाई बेटा भी तो बाप से हुआ या आसमान से टपक पड़ा । तुम बिगड़ो मत ! मैं बाप की बाबत भी कहूँगा और उसके साथ योरोप के एक हुकमरान का भी किस्ता सुनाऊँगा। जरा बैठे तो रहो तसल्ली के साथ ।"

"मगर यह योरोप के हुक्मरान की क्यों ऐसी तैसी की जायेगी। बह क्या शमशेर का मौसा लगता था। कहाँ योरोप कहाँ हिन्दुस्तान । तुम्हारा दिमाग तो है न ठिकाने पर।"

"ज्यादा अक्लमन्द आदमी अच्छी खासी मुसीबत होता है। तुम छींकते ही मेरी नाक मत पकड़ो और सबके साथ जो कुछ मैं कहूँ उसे सुनते जाओ। उस बुढ्ढे शमशेर की बाबत यह है कि वह एक औरत को चाहता था। औरत को इसमें कुछ एतराज नहीं था मगर बीच में एक दीवाना ऐसी टांग अड़ा देता था जिससे

बना बनाया सारा काम गड़बड़ हो जाता था। वैसा ही किस्सा उस हुक्मरान यानी राईबीरियां के ड्यूक कार्ले का है।"

"है से क्या मतलब क्या वह ड्यू क अभी जिन्दा है !"

"हाँ ! और तुम क्या समझे कि मर गया !"

"मरे या जिये मुझे क्या ! राईबीरिया पुर्तगाल में है न?"

"हाँ ! और किसी हद तक उसके साथ उसकी पिछली पुश्तों का भी हाल सुनना पड़ेगा।"

"इस वक्त तो तुम जो कुछ भी कहोगे झखमार कर मानना पड़ेगा इतनी रात को जाऊँगा भी वहाँ। और जा ही कैसे सकता हूँ। शमशेर से मिलना जरूरी है अगर वह यहाँ नहीं आया तो यह तो बताना ही पड़ेगा कि कहाँ गया था।"

"जब वह मिलेगा तो पूछ लेना ! मगर अब मेरी कहानी ध्यान से सुन लो । शुरू करता हूँ। यह ड्यूक कार्ले शुरू से कुछ झक्की तबियत और चिड़चिड़े दिमाग का था। बल्कि तवारीख देखने से पता चलता है कि इस खान्दान के ७० पुश्त पहले से लोग इसी दिमाग के होते थे। हिन्दुस्तानी रिवाज के मुताबिक तो ऐसे पागल आदमी को हुकूमत की जिम्मेदारी कभी नहीं दी जाती मगर वह योरोप है। वहाँ इन बातों की पर्वाह नहीं की जाती । अपने आखीर वक्त पर कार्लो के पिता ने पब्लिक से राय मांगी कि गद्दी का मालिक किसको बनाया जाय। लोगों ने सोचा जैसा बाप वैसा बेटा । खामखां दूसरे का नाम लेकर बुराई क्यों ली जाये। सब ने कार्ले के ही लिये सिफारिश की और उसे ही बादशाह बना दिया गया।"

कार्लो को खानदानी उसूल और रिवाज के मुताबिक एक औरत से शादी करना जरूरी था। बहुत से अमीर उमराओं ने अपनी बहन बेटियों के लिये कोशिश की मगर कार्लो राजी नहीं हुआ । जिद्दी स्वभाव का होते हुये भी वह पूरा पागल नहीं था

जब उसका दिमाग ठन्डा होता था तो बड़े कायदे की बातें करता ।"

"मगर तुम थोड़ी देर ऐसी ही बातें करते रहोगे तो मेरे पागल होने की तैयारी हो जायेगी। आखिर मुझे इस दास्तन के सुनाने से फायदा ही क्या

होगा ?"

"हर जगह फायदा ? मारवाड़ी हो यहूदी ! कभी-कभी बेकाम की बातें सुनने में भी वृक्त लगाया करो।"

"नहीं लगाऊँगा तो तुम जैसे आदमी मेरा काम नहीं करेंगे ठीक है गरज पर गधे को भी बाप बनाना पड़ता है आज की रात तुम भी मनमानी कर लो कभी मेरा भी मौका लगेगा, हाँ ! आगे कहो तुम्हारे कार्ले काका ने शादी की या नहीं।"

"कर डाली ! एक मामूली फ्रांसोसो लड़की से मगर छैः महीने बाद ही कार्लो ने उस बेचारो पर -ऐसी बन्दिशे लगानी शुरू कर दी कि उसके नाकौंदम आ गया। न औरत से मिलने दे न मर्द से। वह धार्मिक विचार की। यह पूरा चांडाल। उसको आठवें दिन गिरजे जाना। इसने उस तरफ कभी मुँह भी नहीं करना आखिर यह हुआ कि कार्लो ने एक निर्जन स्थान में कोठी बनवा कर कुछ नोकरों के साथ उसको वहाँ पहुँचा दिया । कुछ दिन बाद उसे पता लगा कि वह गर्भ से है यह खबर किसी तरह पब्लिक को भी पता लग गई लोगों ने बड़ी मिन्नत और कोशिश करके गद्दो के होने वाले हमदार को बेहतरी ओर हि फा-जत का ध्यान दिलवा कर उस के पारी को हवा बदलने के लिये स्विजर लैन्ड भिजवा दिया।"

"वहाँ से लौटकर वह आई ही नहीं होगी;"

"बिल्कुल सही और यही हालत तुम्हारे इस मिल मालिक की है। बहुत दिन हुये नैपाल से ये दोनों बाप बेटे यहाँ आये थे । छोटे-मोटे काम करते हुए इनको मिलेटरी के कन्ट्रैक्ट मिलने लगे, एक खास अफसर इनके ऊपर बहुत मेहरबान था। फिर भला कमी क्या रह जाती ? बुड्ढे की भाग्य लक्ष्मी बत्तीस पैरों से भागने लगी। यहां कोठी, महाबलेश्वर में कोठी, पूने में बँगला मोटर वर्कशाप, साबुन की फैक्टरी, होटल, सेनिमा-चार, आयल मिल मुख्तसर यह कि ज्यों-ज्यों कमाता गया उसी तरह काम भी बढ़ाता गया। स्टोक एक्सचेंज, शेयर बाजार, कोटन मार्केट सब जगह उसके नाम की तूती बोलने लगी। उसकी जबान को लोग दस्तावेज मानने लगे।

लेकिन जैसा तुम अभी कह रहे थे रुपये से सची खुशी नहीं मिलती। बुड्ढा धनपति तो बेशक बन चुका था मगर उसका जिस्मानी जोश ठंडा पड़ गया था। फिर भी रुपया ऐसी चीज है जिससे अक्सर इन्सान झूठे सपने देखा करता है।"

"मतलब यह कि बुड्ढे ने ज्यादा उमर में एक कम उम्र लड़की से शादी कर डाली। शमशेर की मां शायद मर गई होगी। वह थी भी गरीब घर की बेटी !"

"मर गई थी या क्या हुआ इसका तो कुछ पता नहीं । मगर यहाँ ये दोनों बाप-बेटे ही आये थे। दोनों में से एक ने भी कभी उसका जिक्र नहीं किया। बुड्ढे को एक ईरानी औरत से इश्क हो गया यह तो तुम मानोगे ही कि जात के बाहर किसी से मोहब्बत करने वाली औरतें हमेशा दौलत की तरफ झुकती हैं। चुनांचे उस औरत ने भी बुड्ढे की दौलत देखकर उसकी सारी शर्तें मंजूर कर लीं। कुछ दिन तो वह बम्बई में रही। उसके बाद इसने कहां ले जाकर रखा उसको आज तक किसी को इसका पता नहीं लगा। मगर इसमें शक नहीं कि बुड्ढा उससे मोहब्बत बहुत करता था ।"

"क्या इस बात को शमशेर नहीं जान सका?"

'जहां तक मेश ख्याल है उसे नहीं ही मालूम हुआ ?"

"उस ईरानी लड़की का कोई रिश्तेदार नहीं था ?"

"उसका बाप था । ईश्वर जाने असली या नकली और मजे की बात यह है कि उसने ही बुड्ढे की जान पहचान लड़की से कराई। उस जान पहचान का सिलसिला धीरे-धीरे गहराई पकड़ता गया। बुड्ढे को लड़की के बहुत से खानदानी राजों का पता लग गया। उन्हीं से कुछ ऐसी कमजोरियां भी थीं जिनकी बजह से दोनों बाप बेटी ईरान छोड़कर यहां भाग आये थे।"

"इन दोनों की बाकायदे शादी तो हुई नहीं होगी। उसके लिए एक को दूसरे

का मजहब अख्तियार करना जरूरी था । सिवा सिविल मैरेज के और कोई रास्ता नहीं था।"

"ऐसा ही हुआ ? मगर उसमें भी शर्त थी कि किसी भी हालत में एक दूसरे को तलाक नहीं दे सकेंगे।"

"उस वक्त शमशेर कहां गया था ?"

"विलायत पढ़ने के लिये।"

"उसके आने के बाद कोई बात नहीं खड़ी हुई ?"

"नहीं ! मगर खुफिया तरीके से कुछ दिन बाद मुझे यह मालूम हुआ कि लड़की अब यह कहने लगी है कि अगर यह पता होता कि यह जान पहचान ऐसा रंग लायेगी तो भीख माँगती, मर जाती मगर ऐसी शादी हर्गिज न करती।"

"वाह दोस्त ! जवाब नहीं है तुम्हारा भी। कहां तो सारी जिन्दगी एक दूसरे से अलग न होने का ख्याल और कहां ऐसे इरादे !"

"वर्मा जी, जहां रुपये के लालच से शादी की जाती है वहां बाद में ऐसी ही बार्ता का होना ताज्जुब नहीं। फिर बुड्ढे ने इस मामले में ऐसी सुनहरी चाल चली जिसका पता मुझे काफी दिनों बाद लगा। मगर उससे मेरा कुछ नफा नुकसान तो होता नहीं था इसीलिए मैं भी चुप लगा गया। लेकिन इस शादी के कुछ ही दिन बाद ईरान से एक आदमी आया था जो अपने को उस लड़की का शौहर बताता था ।"

"देख लो ! मजा तो आया बात कहने और सुनने का । इतनी देर तक तुमने बेकार की बातें' कहकर दिमाग खराब कर डाला था। अब कुछ आई बात समझ में, हाँ ! फिर आगे क्या हुआ ?"

"वही जो होना चाहिये था ! उस आदमी ने आते ही एक तूफान सा उठा दिया। हालाँकि इसमें बुड्ढे का कोई कुसूर नहीं था मगर भाई आंधी चलती

है तो सबको ही समेटती जाती है। शहर में बच्चे बूढ़े सबकी जबान पर यही चर्चा घूमने लगा । उसमें लोगों ने ज्यादा क्यों बल्कि सारा कुसूर लड़की का बताया। क्योंकि उसने जानबूझ कर झूठ बोला था।" नतीजा यह हुआ कि चार ही दिन में लड़की के नाम से थू-थू होने लगी ।"

"बह तो होनी ही थी ! उसके बाप का क्या हुआ ?"

"पहले तो वह भी घबड़ा गया। मगर आदमी समझदार और इन्साफ पसन्द था। उसने एक दिन इन तीनों को इक्ट्ठा किया। हर एक को सारी बातें समझा कर राय मांगी कि कोई ऐसी तरकीब होनी चाहिये जो साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। उस आदमी की पहली कमजोरी तो रुपये की थी, दूसरे उसने परदेश का ख्याल किया, और तीसरी सबसे बड़ी बात यह हुई कि उसे डर हो गया इतने ठाठ में रही हुई औरत को वह कैसे रख सकेगा ?"

"स्वाभाविक ही है वह समझदार था जो खुद ही समझ गया।"

"बाप ने बड्ढे से भी खुशामद की वह लड़की का पीछा छोड़ दे, हालांकि दोनों ताजिन्दगी एक दूसरे से अलग न होने का वादा अपनी कलम से कर चुके थे फिर भी बुड्ढे ने कहना मान लिया और छोड़ने को तैयार हो गया। मगर उस शौहर नालायक ने एक शर्त पेश कर दी और यह कहा कि अगर उसकी शर्त मान ली जायगी तो अपना दावा बह वापिस ले लेगा। वह शर्त थी कि बुड्ढा ताजिन्दगी उसको ५००) माहवार देता रहेगा । बुड्ढे ने इसे भी मानते हुए कहा। अगर वह लिख कर दे दे तो ऐसा भी किया जा सकता है।

"मैं समझता हूँ उसने दे दिया होगा। बैठे बिठाये ५०० रु० माहवार मिलना थोड़ा नहीं होता। औरत तो उसके हाथ से यों भी गई थी यों भी जाती ।"

"५००) मिलना तो आसानी से हो गया मगर उसका हजम करना बड़ा मुश्किल हो गया। एक-दो महीने खामोशी के साथ गुजारने के बाद उस आदमी ने गिरगिट जैसा रंग बदलना शुरू किया और आये दिन नई-नई जरूरतें उसके सामने रख कर रुपया ऐंठना शुरू कर दिया बुड्ढा इन

चालबाजियों को समझता तो खूब था मगर औरत नाराज न हो जाय इस ख्याल से चुप-चाप रुपया देता जाता था मगर हर बात की हद होती है। आखिर एक दिन औरत ने ही बुड्ढे को रुपया देने के लिये रोक दिया। फिर क्या था अन्धा चाहे दो आँखें ? लेकिन एक दिन कस्टम हाउस की मीटिंग थी। बुड्ढे को भी उसमें जाना था। वह कम्बख्त भी वहीं पहुँच गया और नशे की हालत में बाहर सीढ़ियों पर खड़ा होकर लगा बेहूदा गालियाँ बकने । लोगों ने बहुतेरा समझाया । पर वह क्यों किसी की सुनता आखिर एक आदमी ने उसको धक्का दे दिया। वह सँभल न सका और सीढ़ियों पर से लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा। वहाँ की सीढ़ियां भी कितनी हैं। नीचे आते-आते उसका दम निकल गया। पुलिस ने बहुत कोशिश की किसी खास आदमी के सिर यह इल्जाम रखने की मगर कोई सबूत शहादत न मिलने से मामला चल नहीं सका। सबने यही कहा नशे की हालत में अपने आप

लुढ़क गया । बुड्ढे ने कुछ लेदेकर डाक्टर से भी यही लिखवा दिया।"

"और इस तरह यह तोता मैना का खेल खत्म हो गया।"

'खत्म तो होना ही था। मगर होते-होते भी एक तो भेंट हो ही गया। इधर इनका रास्ता साफ हो गया। यह मानना पड़ेगा कि औरत बहुत ही शरीफ निकली। उसने बुड्ढे को काफी सीधा कर लिया था।"

"शायद मैं इस बात को नहीं मानूँगा। जानते हो सांप काटना तो छोड़ सकता है मगर फुफकारना नहीं छोड़ सकता। यह तो बिल्कुल ही नामुमकिन है कि बुड्ढे ने दूसरी औरतों से ताल्लुक रखना छोड़ दिया। ज्यादा दूर जाने की क्या जरूरत है। अमेलिया उसकी रखी हुई औरत है ही। जब एक के बाद दूसरी हो सकती है तो तीसरी के लिये क्या लायसेन्स थोड़े ही लेना पड़ेगा। मेरा ख्याल है उस ईरानी औरत को उसने नासिक की तरफ किसी दूसरे नाम से रख छोड़ा था। मरने के दो या तीन हफ्ते पहले वह वहाँ जाकर आया था।"

"मगर उसके रहने का इन्तजाम क्या इतने बड़े बम्बई शहर में नहीं हो

सकता था जो वहाँ ले जाने की जरूरत पड़ी।"

'मैं समझता हूँ शमशेर के आने के कुछ दिन पहले या बाद में यह इन्तजाम हुआ होगा। जवान बेटे के सामने इस तरह की औरत को रखना उसकी हिम्मत से बाहर होगा। इसलिये उसको हटा देना ही उसने मुनासिब समझा। अमेलिया के लिये उसके पास खुला बहाना था ही कि सेक्रेटरी है।"

'मगर मैं फिर भी कहूँगा कि जहाँ तक सच्ची मोहब्बत का सवाल है बुड्ढा उस ईरानी लड़की का गुलाम था। बाकी जो भी थीं सब दिलबस्तगी का सामान थीं। कोई कम कोई ज्यादा !"

"उस लड़की से भी उसे सच्ची मोहब्बत कैसे हो गई मुझे

इसका ताज्जुब है। जिसके मुंह एक मर्तबा ऐय्याशी की हराम लग जाती है वह मरते दम तक नहीं छूट सकती और जबकि रुपया पास में हो। उस लड़की ने भी इसके नेक और पारसा होने का एतबार कैसे कर लिया ? यह भी समझ में नहीं आता ।"

"यह तो उसी हालत में पता लग सकता था जब कि मुझे या तुम्हें उस लड़की से बातें करने का मौका मिलता। फिर भी मेरा ख्याल है या तो ये तमाम बातें उसकी नजर से बिल्कुल ही दूर रखी गई या वह यह समझ कर खामोश हो गई होगी कि मुसलमान बादशाहों की तरह हिन्दू भी आठ औरतें रखने का हकदार है। इसके अलावा बुड्ढे की तरफ से उसे कभी किसी तरह की तकलीफ भी नहीं होती थी। वक्त से उसके पास आता जाता था, ऐसी हालत में कोई वजह नहीं थी कि वह किसी भी तरह का एतराज उठाती। किसी खास ही दिमाग की औरत हो तब तो बात अलग है वरना हर समझदार औरत मर्द से अपने हक की अदायगो चाहती है। जब तक उसमें फर्क नहीं पड़ेगा कोई झगड़ा हो ही नहीं सकता ।"

अचानक ही वर्मा जी की नजर घड़ी पर गई। पांच बजने वाले थे। वे

एकदम खड़े हो गये और बोले- "सारी रात तुम्हारे साथ खराब करके सिर्फ एक काम की बात मालूम हुई कि बुड्ढे की कोई औरत भी थी।"

"यह तो तुम्हें भी मालूम था। अभी तुम कह रहे थे कि मरने के कुछ दिन पहले वह वहाँ गया था।"

"मुझे मालूम नहीं था अमेलिया ने बताया था। वहाँ से लौट कर उसने एक वसीयतनामा लिखा था जिस पर हार्वे और अमेलिया ने गवाह बन कर दस्तखत किये थे। वह वसीयंत दफ्तर में तो है नहीं। आज उसके वकील से मिल कर मालूम करता हूँ कि उनके पास भी है या नहीं। चलो अब तो उठो ।'

[७७

"चलो ! मगर मुझे अफसोस ही रहा कि इतना वक्त लगा कर भी मैं तुम्हारा कुछ भला न कर सका।"

"तुम्हारी वजह से वक्त कट गया यह कुछ कम भला हुआ । मैं खुद भी थोड़े अर्से के लिये अपने दिमाग को इन तमाम झंझटों से अलग रखना चाहता था।"

वर्मा काउन्टर पर गये और बिल चुका कर बाहर निकले। तुलसी पहले ही गाड़ी के पास पहुँच चुका था। दोनों बैठकर चल दिये। रास्ते में वर्मा बोले- "तुम एक आर्टिकिल यहाँ की बातों का जरूर निकाल देना। मेरा नाम न हो वरना जिनके लिये मैं आता हूँ वे आना बन्द कर देंगे।"

****

नित्य कर्म से छुटी पाकर वर्मा जी मुल्ला ऐन्ड बलबी सोली-सिटर के दफ्तर जा पहुँचे। सूचना मिलते ही उन्होंने इनको अन्दर बुलवा लिया । बड़े तपाक से हाथ मिला कर उन्हें अपने पास ही बिठा लिया । साधारण शिष्टाचार के बाद मि० मुल्ला बोले-"मि० वर्मा ! नाम तो मैं आपका अक्सर अखबारों में देखा करता हूँ मगर मिलने का इत्तफाक नहीं हुआ था। आज

हालात ने वह ख्वाहिश भी पूरी कर दी।"

"मैं आपकी इस नेक ख्याली का शुक्रिया अदा करता हूँ।"

"तब तो मैं भी इस शुक्रिये का शुक्रिया अदा कर सकता हूँ। सुनाइये। कैसे तकलीफ की कोई कानूनी खिदमत ?"

"जी नहीं! और न करे परमात्मा उसकी नौबत भी आये कभी ।"

"तब किसी बात के सिलसिले में कुछ मालूम करने आये होंगे। वकील, डाक्टर पुलिस ये दरवाजे ऐसे हैं जहाँ कोई बिना वजह नहीं जाता।"

"मैं आपकी साफ बयानी और तजुर्बे की तारीफ करता हूँ इसमें शुक नहीं कि मैं इस वक्त एक बात मालूम करने ही आया हूँ।"

"और शायद मैं उस बात को किसी हद तक जानता भी हूँ। मगर अफसोस यही है कि मैं उसको किसी हद तक ही बता सकूँगा। उससे ज्यादा के लिये मजबूरी हो जायगी। आपको शायद मेरे किसी मुवक्किल के बारे में कुछ मालूम करना है।"

"जी हाँ ! बात तो यही है। मगर जो कुछ आप बतायेंगे उससे मेरा मकसद पूरा होगा या नहीं इसका क्या भरोसा ? मैं सोचता हूँ कहूँ या न कहूँ। क्योंकि कह कर बात खाली गई तो फायद भी क्या कहने का।"

"मेरा अन्दाजा है कि आप मिल मालिक अनंग शमशेर बहा-दुर के बारे में कुछ बातें मालूम करने आये हैं।"

"जरूर आया हूँ मगर आप कैसे जानते हैं इस बात को ?"

"कैसे जानता हूँ ! यह तो बहुत सीधी-सी बात है। कल रात को उसका मर्डर हुआ है। वह एक बहुत पुराना दोस्त और मुवक्किल था मेरा । जब कभी हम दोनों मिलते बड़ी गहरी छनती थी। वह कोई भी बात छिपाता

नहीं था मुझसे । आज सुबह पुलिस भी आई थी। उन लोगों ने उल्टे-सीधे सवाल करके खांमखां मेरा वक्त खराब किया। कोई-कोई सवाल तो उन्होंने ऐसा गुस्ताखाना किया कि जबाब के बदले तमाचा मार देने का मन हुआ मगर कुछ सोच कर मैं अपने को संभाल गया। अब अगर मैं अन्दाज लगाता हूँ कि आप भी उसी सिलसिले में आये होंगे तो ताज्जुब क्या और आपको काम भी क्या हो सकता था।"

"ठीक है ! अब में पूछता हूँ! आप मुझे कुछ बता सकेंगे ?"

"मैं सवाल के जवाब में सवाल ही करता हूँ आपसे । कोई हर्ज न हो तो आप सबसे पहले यह बता दीजिये कि इस मामले में आपको क्यों दिलचस्पी है। आपको किसी ने अपना पैरोकार बनाया है? आप इससे क्या हासिल होने की उम्मीद रखते हैं।"

[७६

"मैं सिर्फ यह मालूम करना चाहता हूँ कि उनका खून किया किसने । इससे कम या ज्यादा कुछ भी नहीं। अब रहा यह सवाल कि मैं किसका पैरोंकार हूँ वह भी सुन लीजिये। खून की रात तो मैं शमशेर की तरफ से काम कर रहा था। और जितना वह चाहता था उतना काम करके मैं अपनी जिम्मेदारी से अलग हो गया हूँ।"

"क्या मैं पूछ सकता हूँ वह चाहता क्या था !"

"कहना तो नहीं चाहिये मगर आप उसके वकील हैं इसीलिये कहे देता हूँ। वहाँ किसी की समझ में यह नहीं आ रहा था, कि खून हुआ या खुदकशी ! खुदकशी साबित होने से उन लोगों का नुकसान होता था। मैंने किसी तरह यह तो मालूम कर ही लिया कि हुआ खून ही मगर खूनी ने उसे खुदकशी साबित करने के पूरे सामान पैदा कर दिये थे। मुझे थोड़ी-सी परेशानी जरूर हुई शुरू में लेकिन हम लोगों को सिर्फ ढांचा खड़ा करने में जरा देर लगती है। मकान तो आनन-फानन बन जाता है।"

"तब मैं यह समझ कर गलती नहीं करूंगा कि अब आप शमशेर का काम

नहीं कर रहे हैं। और दूसरे मानों में यह भी माना जा सकता है कि आप बिना वजह ही इसमें उलझे हुये हैं ।'

"मुमकिन ही समझिये !"

"मुमकिन समझना तो उस हालत में हो सकता है जब कहीं शक-शुब्हे की गुंजाइश हो। मयर यहाँ तो साफ जाहिर है। आप यह तो हर हालत में जानना ही चाहते हैं कि खून किसने किया उसके लिये आप अपना वक्त और पैसा दोनों ही खर्च करेंगे। मगर क्यों उसकी कोई वजह तो होनी चाहिये ।"

"दो वजह हैं ! पहले तो मेरा उसूल है कि किसी भी काम को अधूरा नहीं छोड़ता । दूसरी बात यह कि जितने केस मेरे हाथ से होते हैं उन सबका पूरा फाइल मेरे दफ्तर में मौजूद रहता है।

अक्सर इन पुराने फाइलों को देखकर नये मामलों को सुलझाने में बड़ी मदद मिलती है।"

"बड़ी दूरन्देशी से काम लेते हैं आप! अच्छा पुलिस के बारे में क्या ख्याल हैं आपका। क्या वे लोग उतना काम नहीं कर सकते जितना आप करते हैं। मैंने सुना है उन लोगों ने किसी को हिरासत में भी ले लिया है।"

"मगर खून के लिये नहीं! वह गिरफ्तार एक बनावटी कुसूर पर की गई है और उसे गलत जानते हुए भी मैं यह समझता हूँ कि अच्छा ही हुआ। वरना उस बिचारी की जान खतरे में हो गई थी। लाकअप के अन्दर कोई उसको कत्ल करने तो नहीं जायगा । हालांकि मौजूदा पुलिस एस० पी० मेरे बड़े गहरे दोस्त हैं। हम दोनों ने बहुत दिनों तक साथ ही काम किया है। खाने पीने में साथ रहे हैं मगर उनकी गलतियाँ देखकर मुझे बड़ा अफ-सोस होता है। जल्दबाज वो इतने हैं कि पूछिये मत, आ भर जाये कोई बात उनके दिमाग में। फिर क्या मजाल जो एक मिनट भी उसका नतीजा या कुछ आगा-पीछा सोचें। कितने ही मामलों में मैंने उनकी मदद की। ऊँचा-नीचा समझाया भी मगर वे अपनी चाल बदलने को तैयार ही नहीं होते। रावण के दस इंसानी खोपड़ियों के ऊपर गधे का सिर भी तो था

ही।"

मुल्ला हँस पड़े पूछा- "इस गिरफ्तारी के मुत्ताल्लिक क्या ख्याल है ?"

"बिल्कुल गलत ! बिना वजह! जिस लड़की को उन्होंने गिफ्तार किया है मुझे यकीन है कि इस मर्डर से उसका कोई ताल्लुक नहीं है।"

"लड़की यानी औरत ! मि० वर्मा अगर मैं यह कहूँ कि औरतों के मामले में वह शख्स कुछ अजीब ही सा था तो नामु-नासिब तो न होगा। लड़की, पूरी औरत !"

"आपका सवाल इस सिलसिले से कतई अलग है। मगर मैं

[८१

शर्तिया कह सकता हूँ कि इस लड़की ने खून नहीं किया और किसी औरत ने किया हो उसकी जिम्मेदारी मैं नहीं ले सकता।"

"शायद आप नहीं जानते पिछली जिन्दगी में औरतों के हाथ से कत्ल होने के कितने खत्तरे आये उसकी जान पर मगर वह बाज नहीं आया। ज्यादा क्या कहूँ ! वह मेरा दोस्त था और अब मर भी गया। बहरहाल आप फरमाइये। मैं आपकी खिदमत करने की कोशिश करूंगा।"

"शुक्रिया ! मुझे मालूम हुआ है कि २०-२२ दिन पहले आपके दोस्त ने कोई वसीयत लिखी थी। मुझे ताज्जुब होता है।"

"होता है क्यों कहते हैं? यह कहिये कि ताज्जुब है। आपकी जगह मैं होता तो यही कहता। कहिये क्यों? इसीलिये कि लिखे जाने के बाद उस वसीयतनामें की मैंने शकल तक नहीं देखी । मैंने उसके बेटे शमशेर से दर्याफ्त किया मगर वह कहता है मुझे कुछ नहीं मालूम है। दफ्तर में है नहीं और किसी को उससे वास्ता ही क्या ? फिर इसके सिवा और क्या कहा जा सकता है कि बुड्ढे ने ही उसे बरवाद कर डाला ?"

"बरबाद ही करना था तो उसे लिखने की क्या जरूरत थी ?"

"इसका जवाब तो वही दे सकता था। मैंने दफ्तर के अलावा उसके फ्लैट और बाकी कई जगहों में भी तलाश करवाया मगर उस बसीयत का कहीं निशान तक नहीं मिलता। इससे मैं इस नतीजे पर पहुँचता हूँ कि शमशेर ने बाप से माफी मांग कर झगड़ा खत्म कर दिया होगा और बाप ने उसे फाड़ कर फेंक दिया होगा । और शर्मिंदा होने के ख्याल से किसी के सामने इसका जिक्र भी नहीं किया। अब जरूरत के वक्त मुझे वह पहला ही वसीयतनामा इस्तेमाल करना पड़ेगा।"

"क्या यह माना जा सकता है कि नये वसीयतनामें का हाल किसी तरह शमशेर को मालूम हो गया हो और इसीलिये उसने

आयन्दा नफे का ख्याल करके माफी मांग ली। बुड्ढे ने भी अकेली औलाद के दुलार में फस कर उसे फाड़ डाला हो।"

"कुछ भी समझिये ! मगर मैं आपकी कुछ खिदमत न कर सका इसका अफसोस है ?"

"मगर मैं जो कुछ आपने नहीं बताया उसका भी शुक्रिया अदा करूंगा। अब इजाजत चाहता हूँ, फिर किसी वक्त हाजिर होने की कोशिश करूँगा। नमस्ते !"

यहाँ से निकल कर वर्मा जी एक रेस्टोरां में जा बैठे। और सिगरेट जला कर इसी मामले को सोचने लगे। वे जितना चाहते थे उलझन घट जाय उतनी ही बढ़ती जाती थी। वे सोचते थे अगर थोड़ी देर के लिये यही मान लिया जाय कि बाप ने उस वसीयत में बेटे को बिल्कुल ही अलग कर दिया था तो भी कुछ बात जमने पर नहीं आती क्योंकि जाहिरा और कानूनन ! शमशेर ही तो उसकी एक औलाद है। हर हालत में सारी जाय-

दाद का मालिक वही होगा। बुड्ढे ने कोई दूसरा वारिस तो बनाया ही नहीं था।

इस ख्याल पर वर्मा जी को अटक जाना पड़ा। यह बात दुबारा जबान से निकल गई कि बुड्ढे ने कोई दूसरा वारिस तो बनाया ही नहीं था। यह बात पहले भी किसी ने कही थी, याद भी आ गया तुलसीदास ने कहा था। अगर कोई होता तो बह जरूर मुझे बता देता। अब सारे किस्से को फिर से सोचना पड़ेगा। वहीं से एक कागज लेकर उन्होंने सारी बातों को सिल-सिले वार नोट करना शुरू कर दिया। सब से पहलो बात थी कि-

वसीयतनामा बड़ी जल्दी में लिखा गया। इससे कुछ ही दिन पहले बुड्ढा कहीं बाहर नासिक या पूना जाकर आया था। लौट कर आने पर उसने शमशेर को बुलाकर उससे बातें की लेकिन कुछ तेजी तुरशी से नहीं। थोड़ी देर बाद शमशेर यह कहता हुआ चला जाता है कि फिजूल वक्त खराब करने के लिये बुला लेते हैं। उसके बाद बाप ने नई वसीयत लिखी। जैसा कि सोलिसिटर का ख्याल है वह वसीयत जरूर शमशेर को उसके हक से गिरा रही थी जिसकी वह उम्मीद करता था या जिसका बह हकदार था। तब क्या यह माना जा सकता है कि नई वसीयत का ताल्लुक वड्ढे के उस सफर से होना चाहिये जो उसने कुछ ही दिन पहले किया था। जरूर होगा ऐसा हो, वरना लौटते ही ऐसी उजलत के साथ उसे लिखने की जल्दी क्या पड़ी थी ?

शमशेर को इस नये वसीयत नामे की बिल्कुल खवर नहीं दी गई। कम-से-कम दस्तखत होने के वक्त तक तो उसे हर्गिज पता नहीं दिया गया । लेकिन यह खबर ज्यादा दिनों तक उसके कानों से दूर न रह सकी। ऐसा माना जा सकता है अमेलिया तो इस बात को छिपा सकती हैं मगर हार्वे से उम्मीद नहीं। वह तो हमेशा मौके से फायदा उठाने वाला आदमी है। इसी खबर को देकर शमशेर से दो-चार हजार ऐंठ लेना उसके लिये बहुत सुम-किन है और उसको गायब करने या बरबाद करने की कोशिश शमशेर हर सूरत से किये बगैर रह नहीं सकता । उसे ऐसा करना भी चाहिये। यह शक पहले भी उनके मन में कई बार उठ चुका था कि शमशेर को भी अपने बाप का खून करने की कई वजह हो सकती है।

अब उन्होंने चाय और नाश्ता मंगाया। उसे खत्म करके फिर अपनी सेक्रेटरी प्रतिमा को फोन किया। जवाब मिलने पर पूछा- "क्या रमेश का पता है कहीं?"

"आप काम नहीं लेंगे तो उसका पता कैसे लगेगा ? होगा कहीं दोस्तों में दिल्ली की खबरें सुनाता। काम क्या है? मैं नहीं कर सकती।"

"तुम्हीं करोगी ! फौरन ही पुलिस कमिश्नर से मिलो जाकर ।

उनसे कहना मैं अमेलिया कार्टर से मिलने की खास इजाजत चाहता हूँ।"

"क्यों ? क्या उसे गिरफ्तार कर लिया गया ?"

"हाँ ! चिन्तामन ने अपनी अक्ल का नमूना दिखाया है न ! मगर तुम्हें कमिश्नर से किसी के खिलाफ कुछ कहने की जरूरत नहीं है। सिर्फ इजाजत ही लेकर चली आना। मैं जाऊँगा तो वह मजाक शुरू कर देंगे और मैं आसानी से लौट भी नहीं पाऊँगा । जाओगी न ?"

"पूछने की क्या जरूरत है। काम है तो जाना ही पड़ेगा। मैं तो वैसे भी इन्तजार कर रही थी आपके फोन का, मिल मैनेजर हार्वे आया था। वह आपसे फौरन ही मिलना चाहता था मगर आप मिले ही नहीं घर पर। तब यहाँ पूछने आया, वह अपने घर बुला गया है।"

"घर का पता बता गया तुमको? ऐसी क्या जरूरत पड़ गई उसको ?

"जरूरत तो नहीं बताई मगर पता बता गया है। आप लिख लीजिये वह था भी बड़ी घबराहट में। कह गया है जैसे ही आप आयें आप से वहाँ जाने के लिये कहा जाय ।"

"अभी जाता हूँ तुम पता लिखवा दो।"

प्रतिमा ने पता लिखवा दिया। उसे लेकर वे फौरन ही गाड़ी पर बैठ कर चल दिये। रास्ते भर सोचते गये। हार्वे ने क्यों बुलाया। पर कोई कारण समझ में नहीं आया, जितनी जल्दी हो सकती थी वे गाड़ी भगाकर हार्वे के घर जा पहुँचे । फ्लैट के दरबाजे की घंटी बजाई । दरवाजा खुला, हार्वे सामने ही खड़ा था। मगर उसको देख कर वर्मा जी निश्चय ही न कर सके कि उसी को देख रहे हैं या उसी की शकल का कोई दूसरा आदमो है। उसका चेहरा खून से तर था। सिर से बहा हुआ खून चेहरे को भिगोता हुआ नीचे के कपड़ों तक पहुँच गया था । कुछ क्षण के लिये वर्मा जी सन्नाटे में आ गये और एकटक उसकी तरफ देखते रह गये। इसी समय उसने टूटी आवाज से कहा- "आइये, अन्दर आइये । मुझे बहुत कुछ कहना है आपसे ।"

"मुझे भी बहुत कुछ पूछना होगा तुमसे ! यह तुम्हारी हालत क्या हो रही है? नीचे से लेकर ऊपर तक खन-ही-खून। आखिर हुआ क्या ? कौन आया ? ऐसा क्यों कर गया ? तुम्हारे तो बहुत काफी चोट आई आन पड़ती है।"

"आप अन्दर तो आइये फिर मैं सुनाता हूँ सारा किस्सा !" वर्मा जी अन्दर जाकर एक कर्सी पर बैठ गये। हार्वे दरवाजा बन्द करके उनके सामये बैठ गया और कहने लगा-

"विछले चौबीस घन्टों में जैसी परेशानी रही वह तो आप भी जानते हैं। बड़ां का काम खत्म करवा कर में थका मांदा यहां आया । दरवाजा खोलकर जैसे ही अन्दर दाखिल हुआ तो देखा कोई कुछ तलाश कर रहा है। उसने मेरे संभलने के पहले ही किसी भारी चीज से मेरे सिर हर वार किया। पहली ही चोट पर मेरा सिर फट गया और मैं कुछ देर के लिये बेहोश हो गया और वह आदमी फिर अपने उसी काम में लग गया।"

"जब तुम बेहोश हो गये तो कैसे मालूम कि वह फिर भी तलाश कर रहा था।"

"कायदे से मुझे जख्मी कर लेने के बाद उसे भाग जाना चाहिये था। लेकिन

होश में आने पर मैंने देखा कि वह उसी तरह अपने काम में लगा हुआ है जैसा मेरे आने पर था ।"

"तुमने देखा नहीं उसे ? था कौन ?"

"कमरे में घुसते ही जब उसने मेरे सिर पर वार किया तो मैं कैसे उसे पहचान सकता था ।"

"वह बार हुआ किधर से था सामने से या पीछे से।"

"बगल से और उसने इतनी फुर्ती दिखाई कि बस कमाल

[८७

ही कर दिया। कुछ देर बाद जब मुझे होश आया तो..."

"कितनी देर लगी होगी आपको होश आने में ?"

"ज्यादा से ज्यादा दस मिनट समझिये।"

वर्मा उठकर उसके पास आये और जख्म की हालत देख कर बोले- "इतनी जल्दी होश आना तो नहीं चाहिये मगर आप तन्दुरुस्त आदमी हैं इसलिये चोट बर्दाश्त कर गये। कोई कमजोर होता तो मौत हो जाने में कसर क्या रह गई थी। हां, फिर क्या हुआ ?"

"होश आने पर मैंने हिम्मत की और किसी तरह उठकर उसे पकड़ने को झपटा मगर एकदम ही आंखों के आगे अँधेरा छा गया और मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा। उस वक्त मेरा सिर कुर्सी से टकरा गया। यह दूसरा निशान आप उसी का देख रहे हैं। इससे इतना खून गया कि मेरी आंखें बन्द हो गई। कुछ मिनट बाद फिर होश आया तो मैंने देखा बह दरवाजा बन्द करके बाहर जा रहा है।"

"तुम चिल्लाये भी नहीं कमाल है। अरे भाई तुम कुछ नहीं कर सकते थे तो प थे।"

"यह बम्बई है वर्मा जी! यहाँ कोई किसी के फटे में पैर नहीं डालता। दूसरी बात यह कि मैं उस वक्त कुछ डर गया। जब वह पहला वार इतना खतरनाक कर सकता था, तो दूसरे बार में मुझे खत्म भी तो कर सकता था। फिर भी मैंने गिरते-पड़ते खिड़की पर पहुँच कर उसे जाते वक्त देखा और अच्छा तरह पहचान भी लिया ।"

"तसल्ली के लिये ही इतना गनीमत है। कौन था वह ?"

"शमशेर!"

यह सुनते ही वर्मा जी तो जैसे आसमान से गिरे । उनके संदेह को इस बात से बड़ी मजबूती मिल रही थी। हार्वे के लिये डाक्टर का इन्तजाम करके उन्होंने गाड़ी पूरी तेजी से दौड़ाई और शमशेर के घर जा पहुँचे। वहाँ पता लगा कि अभी दफ्तर से नहीं आये हैं। दफ्तर भी ज्यादा दूर नहीं था। दस ही मिनट में वहाँ भी पहुँच गये। खबर भेज कर अन्दर गये और हार्वे का सारा किस्सा सुना दिया। उसे सुनकर शमशेर ने बड़ी डिठाई से कहा- "मि० वर्मा, आप जैसे तजुर्बेकार आदमी से ऐसी बात सुन कर मुझे ताज्जुब होता है। यह तो किताबों जैसी एक कहानी सी जान पड़ती है।"

"हाँ ! आपको कहानी लग सकती है मगर जिसकी खोपड़ी टूटी है, ढेरों खून बह गया है उसके लिये तो यह घटना ही है। उस पर किसी ने बड़ी बेरहमी से हमला किया है। उसका जख्म इस बात का सबूत है।"

"मगर वह हमला मेरी तरफ से नहीं हुआ। किसी ख्याल में उसने मेरा नाम ले दिया होगा वरना आप ही सोचिये मुझे ऐसा करने की जरूरत ही क्या हो सकती है?"

"इस बात का मैंने अभी पता नहीं लगाया है वरना हाथ के हाथ आपको जबाब भी दे देता। हार्वे ने जो कुछ कहा मुझसे मैंने वही आपको सुना दिया। हालांकि वह यह भी कहता है कि उसे नहीं मालूम ऐसा क्यों हुआ ? क्योंकि आप तो उससे कभी नाराज भी नहीं होते थे।"

"जब उसे ही नहीं मालूम तो मुझे कैसे मालूम हो सकता है। और मैं तो यहाँ से कहीं गया भी नहीं। बाबा के अचानक मर जाने से यहाँ की हालत कैसी डावांडोल हो गई है यह तो आप भी जानते हैं।" शमशेर ने मेज में लगी एक घन्टी बजा दी। एक मिनट बाद एक बिल्कुल ही नई लड़की अन्दर आई। शमशेर बोला- "मिस पाल ! जरा इन साहब को बता दो कि मैं पिछले कितने घन्टों से यहाँ मौजूद हूँ।"

"यस सर ! बहुत अच्छा साहब।" लड़की ने तेजी से कह दिया ।
सुनते ही वर्मा जी हँस पड़े और बोले- 'मि० शमशेर, अगर बुलाना ही था तो किसी समझदार को बुलाते। इस मैना की बोली सुन कर तो मुझे सन्तोष नहीं होगा। अगर यह मामला बढ़ा तो इसकी जबाबदारी आपके ऊपर होगी, तैयार रहियेगा।"

जवाब का इन्तजार न करके वर्मा जी तेजी के साथ दरवाजा खोल कर बाहर चले गये। वह लड़की बोली- "कितना खराब दिमाग है इस आदमी का ।"

"फिर भी आदमी बड़े काम का है। लोग उसकी कद्र करते हैं।"

७

बम्बई शहर का एक मोहल्ला डोंगरी भी है। मिलीजुली घनी बस्ती है। उसी के बीच में एक छोटी सी जेल भी बनी हुई है जहाँ एक साल की सजा भोगने वाले कैदी और एक-दो हफ्ते के हवालाती आसानी से रखे जाते हैं। चिन्तामन ने वर्माजी की वजह से अमेलिया को अपने लोकअप में न रख कर डोंगरी जेल में भिजवा दिया था। प्रतिमा को भेज कर उन्होंने अमेलिया से मिलने की इजाजत मंगाई थी। उसे लेकर वे शाम के वक्त जेज पहुँचे और जेलर से मिलकर अपना उद्देश्य प्रगट किया।

जेलर बोले- "जब आप इतने मशहूर जासूस हैं तो जेल मैनुएल में क्या लिखा है यह आपको बताने की जरूरत नहीं है। कैदियों से भेंट मुलाकात का टाइम सुबह आठ बजे का है। आप कल तशरीफ लाइये। मैं इन्तजाम करा दूँगा ।"

वर्मा जी भला यह कैसे बर्दाश्त कर लेते। फिर भी साधारण बोले- "जेलर साहब ! जेल मैनुएल में जो कुछ लिखा है आपने शायद उसे ठीक तरह से नहीं पढ़ा। अगर पढ़ा तो मतलब ठीक तरह नहीं समझे। सबसे पहले तो आप इस कागज को देखिये । इसमें लिखी हिदायत के मुताबिक मैं अपने क्लाइन्ट से किसी वक्त भी मिल सकता हूँ। दूसरी बात यह कि मेरा क्लाइन्ट सजा-याफ्ता कैदी नहीं हवालाती है। आप फौरन उसके वुलवाने का इन्तजाम कीजिये वरना मैं यहीं से डी० सी० को फोन करता हूँ।"

जेलर सिटपिटा गये। अभी हाल ही में विचारे ने तरक्की की थी। अफसरों की नजरों में बुरा बन कर उन्हें नुकसान के सिवा फायदा होने की उम्मीद तो थी नहीं। उधर यह भी ख्याल था कि जो आदमी इतनी बेफिक्री के साथ डी० सी० को फोन कर सकता है, न जाने उसके ताल्लुकात कितने गहरे होंगे। मन मार कर बोले- "बैठिये बुलवाये देत्ता हूँ! मगर आप लोग ऐसा करके पब्लिक को सर उठाने का मौका देते हैं। हवलदार !"

एक वर्दी वाला अन्दर आया और सलाम करके खड़ा हो गया। जेलर बोले - "जनाने वार्ड के बार्डर से कहो कि अमेलिया कार्टर नाम की लड़की को लेकर मुलाकात के कमरे में आ जाये। थोड़ी देर के लिये वहाँ और किसी की डयूटी लगा देना । याद रखना अमेलिया काटेर ।"

दूसरे कमरे में बैठने के दस मिनट बाद दरवाजा खुला और एक मोटी औरत के साथ अमेलिया अन्दर आई। वर्मा जी उसकी हालत देखकर सकते में रह गये। कहाँ वह हँसता हुआ गुलाबी चेहरा और कहाँ यह पीलापन ! एक ही दिन में आँखों के नीचे गढ़े दिखाई देने लगे थे। होंठ रह-रहकर कांप उठते थे । आँखों में बार-बार आंसू भर आते थे। वर्मा जी को बड़ा सदमा हुआ जेल जगह ही ऐसी है जहाँ बड़े बड़े हिम्मत वाले भी पस्त हो जाते हैं। अमेलिया मेज का सहारा लेकर चुपचाप खड़ी थी। वह मोटी औरत बोली- "मैं बाहर बैठती हूँ तुम बात कर लो साहब के साथ । जरा जल्दी छुट्टी पाने की कोशिश करना ।"

उसके जाने के बाद वर्मा जी ने बड़े स्नेह से कहा - "बैठ जाओ मिस कार्टर

!"

वह जमीन देखती हुई बैठ गई ।

"मिस कार्टर ! क्या मैं तुम्हें यह विश्वास दिला सकता हूँ कि मैं इस वक्त तुम्हारी मदद करने आया हूँ।"

अमेलिया को शायद इनकी तरफ से कुछ बहम हो गया था। वह समझ रही थी कि इस गिरफ्तारी का कारण वे ही हैं। बड़े रूखे स्वर में बोली- "सचमुच ? मेरो मदद करने आप आये हैं? यह भी तो आपही की मदद है जो मैं सरकारी मेहमान बनी बैठी हूँ।"

"तुम खामखा मुझे इल्जाम मत दो। तुम्हारे यहाँ आने की मुझे रत्ती भर भी खबर नहीं थी। उन लोगों ने यह कार्यवाही मुझे इत्तला दिये बगैर ही कर डाली। पुलिस अफसर भी ऐसा मिला है उनको जिसकी इतनी बड़ी खोपड़ी में अक्ल नाम को भी नहीं है।"

"अगर आप सच कह रहे हैं तो मैं अपनी बात वापिस लेती हूँ वरना अभी तक मुझे यही ख्याल था कि यह सारी कारगुजारी आप ही की है। चूंकि मैंने दिल खोल कर आपको सारी बातें बता दी थीं। शायद आपने वह तमाम बातें उन लोगों से कह दीं। अब वे उन्हीं बातों से मेरे खिलाफ कार्यवाही करने की तैयारी कर रहे हैं।"

"वे लोग जो कुछ कर रहे हैं उसकी बिल्कुल पर्वाह मत करो । अगर तुम बेकसूर हो तो कोई भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

"सच ? आप मुझे बहला तो नहीं रहे हैं। या बच्चों की तरह भुलावा देकर कोई और बात मालुम करना चाहते हैं। मैं बेकसूर तो जरूर हूँ मगर उन लोगों ने राइफल मेरी गाड़ी से बरामद की है।"

"करने दो ! मगर तुमने नहीं रखी इसका तो इत्मीनान है न तुम्हें।"

"जी हाँ ! सोचने की बात है मैं उसे गाड़ी में रखूँगी ही क्यों ? अगर मालिक का खून मैंने किया होता तो राइफल ऐसी जगह न रखती जहाँ हर एक उसे इतनी आसानी से पा जाता। सामने ही समुद्र था । कम्पाउन्ड में भी तीन-तीन बावड़ी हैं। मगर समझ में नहीं आता मेरी गाड़ी में वह आई कैसे ? उसी एक सबूत पर वे लोग मुझे फांसी चढ़ाने की पूरी कोशिश करेंगे। यह तो साबित हो हो गया है कि उसी राईफत्त से खून हुआ है और वह मेरी गाड़ी में मिली है तो दूसरा सबूत तलाश करने की उन्हें जरूरत ही क्या पड़ेगी ?"

"फांसी चढ़ाने की कोशिश ही तो करेंगे, देंगे तो नहीं न । अब मेरा कहना मान कर तुम इस ख्याल को थोड़ी देर के लिये दिमाग से बिल्कुल ही हटा दो।"

"कैसे हटा दूँ? कह देना आसान है करना बहुत मुश्किल ! आप कभी ऐसी मुसीबत में फँसे नहीं। इसलिये मेरी परेशानी आपकी समझ में आ भी नहीं सकती।"

"मिस कार्टर ! मैं खूब समझ रहा हूँ जो तकलीफ तुम्हें इस बक्त हो रही है शायद इससे भी ज्यादा हो सकती है मगर उससे बचने की कोशिश तो करनी ही चाहिये। इस तरह रोने, कलपने से तो कुछ हासिल होगा नहीं! अगर तुम कोई काम की बात बता नहीं सकतीं तो कम-से-कम दूसरे की बात सुन तो लो। तुम तो क्या मैं भी नहीं जानता कि किस वजह से मैं तुम्हारी मदद कर रहा हूँ। मुमकिन है इसलिये कि मेरे मन में यह बात जम गई है कि तुम बेकसूर हो। वैसे जाहिर तौर पर सारा गुनाह तुम्हीं पर साबित हो रहा है। उसके लिये तुम्हारा एक बड़ा जबरदस्त मकसद भी हो सकता है। अगर इसी शकल में यह मामला अदालत में चला जाये तो यही कहा जायगा कि करडे से तुम्हारी मोहब्बत चल रही थी। मालिक को यह बात नागवार मालूम हुई। रोकने पर तुम्हारे साथ उनकी कहा-सुनी हो गई और उसी गुस्से में तुमने उनको मार डाला।"

"मगर यह बिल्कुल झूठ है। कोरी बनावट है, साजिश है। मैंने ऐसा हर्गिज

नहीं किया।"

"तुम्हारी बात मैं मान सकता हूँ। मगर इससे यह मत समझो कि अदालत भी इसको मान लेगी और तुम्हें बरी कर देगी !',

'तो मैं क्या करूँ? आप ही बताइये!"

"उसके लिये तुम्हें सारा मसाला मेरे हवाले करना पड़ेगा । अगर ऐसा नहीं किया तो तुम्हारे मुखालिफ तुम्हें उड़ाकर रख देंगे।"

"मुझे तो आपकी जादूगरी समझ में आती नहीं। अब बत्ताइये मुझे क्या करना चाहिये ?"

"अपने मालिक के बारे में तुम जितनी भी बातें जानती हो सब बता दो मुझे। साथ ही यह भी बता दो कि अगर तुम उसको ब्लेकमेलिंग करतीं तो क्या होता ?'

"मैं और उनको ब्लेकमेलिंग करती? वर्मा जी! वह तो ब्लेकमेलिंग को भी ब्लेकमेल करने वाले आदमी थे। यह तो आपने ऐसी बात कही जिसका मुझे सपने में भी ख्याल नहीं आ सकता था।"

"ठीक है ! फिर भी मैं पूछता हूँ ऐसा हुया तो क्या होता ?"

"तो मैं समझती हूँ यह मेरी बुराई करने में कोई कसर न बाकी रखता ।"

"किस तरह की बुराई । इज्जत की, हाथ पैर की, नौकरी की।"

"जिस तरह की भी कर सकता। मैं उसे अच्छी तरह जानती थी। जिन लोगों ने किसी तरह का भी नुकसान पहुँचाया उसे, उनको मिटाने के लिये वह उनकी कब्र तक खुदवाने की फिक्र में रहता था । बाल-बच्चों तक को दर-दर भटकवा देता था ।"

"तो अब तुम अपनी उन बातों को सोचो जिनको तुम नहीं चाहती थीं कि वह जान लेता। मगर किसी तरह उसे मालूम हो ही गई। यानी वह बातें जो

तुमने मुझे भी अभी नहीं बताई हैं,

[६३

मेरा ख्याल है ऐसी बातों को वह लिखकर रखता होगा। मगर कहाँ रखता होगा, यह सवाल है।"

"दफ्तर के सेफ में या.....।"

"क्या हुआ ? क्या कोई बात याद आ गई?"

'उन्होंने मुझे एक चाभी दी थी। करीब एक हफ्ते पहले । उसे में बिल्कुल ही भूली हुई थी। इस वक्त आपके कहने से एका-एक याद आ गई।"

'किस तरह की चाभी थी। अब कहाँ है, किस चीज की है।"

"मेरा ख्याल है किसी सेफ की है। मगर वह सेफ कहाँ है यह मैं नहीं जानती।"

"क्या तुम समझती हो उसका ताल्लुक इन बातों से है। वह सेफ दफ्तर में नहीं है ?"

"नहीं ! न वह सेफ दफ्तर में है और न वह चाभी ही दफ़्तर के सेफ में लग सकती है।"

"तब उन्होंने दी क्यों तुम्हें ?"

"यह भी मैं नहीं जानती। उन्होंने कुछ बताया भी नहीं न लेते वक्त मैंने ही कुछ पूछा न यह समझा कि इसमें कोई खास बात होगी।"

"किस तरह की खास बात ?"

"उस दिन काम करते-करते एकाएक उन्होंने मुझे बुलाकर वह चाभी दी और बोले - "रख लो अपने पास जरूरत होगी तो मांग लूँगा मगर किसी से

कहना मत। मैंने भी ज्यादा पूछ-ताछ नहीं की। लेकर उसे बैग में डाल लिया।"

"और अब कहाँ है वह ?"

" बैग में ही होनी चाहिये ।"

"बेग तो तुम अपने साथ यहाँ लाई होगी ?"

"जी नहीं ! वह बैग अभी घर पर है या पुलिस ले गई होगी ?"

"इसका बहुत जल्दी पता लगाना पड़ेगा। मिस कार्टर इसी

बात को अगर तुमने पहले बता दिया होता तो अब तक कितनी मुश्किल आसान हो गई होती।"

"भूल जाने के लिए, सिवा अफसोस के और मैं कर भी क्या सकती हूँ। लेकिन साथ ही यह भी है कि मैं नहीं समझती थी कि उस चाभी के साथ भी कोई रहस्य लगा हुआ है। दूसरी बात यह कि इन दो दिनों में जो परेशानी रही उसे भी आप जानते हैं।'

वर्मा ने हार्वे का हाल सुनाया। सुनकर अमेलिया बोली-"माना कि आप सब कुछ अपनी आँखों से देख आये हैं मगर मुझे उसका बिल्कुल भरोसा नहीं। पका ढोंगी है। दूसरे को मूर्ख बनाने के लिए वह सब कुछ कर सकता है।"

"यानी अपना सर भी फोड़ सकता है ?"

"यह तो सर ही फोड़ना है। जरूरत पड़ती तो वह अपने छुरा भी मारकर दूसरे को खूनी ठहराने में पीछे न हटता ।"

"खतरनाक तो बेशक है वह मगर मैं इतना नहीं समझता था। अब तुम्हारे

कहने से खास तौर से उसके पीछे लगना पड़ेगा । इस वक्त तुम एक बात और बताओ। नई वसी-यत लिखने के पहले जो तुम्हारा मालिक कुछ दिनों के लिए बाहर गया था। कुछ बता सकती हो कहाँ गया था। क्या हमेशा जाया करता था इसी तरह ? एक मर्तबा जाने के बाद दुबारा जाने का नम्बर कितने दिनों बाद आता था ?"

"मुझे यह सब तो कुछ मालूम नहीं क्योंकि इस मामले को वह बहुत ही खुफिया रखता था। इतना जरूर जानती हूँ कि यह सफर हमेशा रेल में होता था और वह हमेशा अकेला ही जाता था। जरा ठहरिये ! एक बात और याद आई, पिछले साल भी बह इसी तरह जाता था। एक मर्तबा उसने अपनी सीट रिजर्ब कराई मगर ऐन दिन के. दिन उसको अपना जाना रोकना पड़ गया। तब उसने मुझे अपना टिकट वापिस करने भेजा ।

उस दिन मुझे मालूम पड़ा कि वह कहां जाया करता था ।"

"कहाँ का टिकट था वह ?"

"नासिक का !"

"तो तुम्हारा ख्याल है हमेशा नासिक ही जाया करता था ?"

"ऐसा नहीं ! पूना भी जाता था। पिछला सफर पूने का ही था।"

"बह भी एक झंझट ही रहा। फिर तो सवाल यह है कि पहले पूना देखा जाय या नासिक, अपने को कामयाबी कहाँ होगी। मगर यह तुमने खूब बताया कि अपना टिकट वापिस करने के लिये उसने तुम्हें भेजा। लखपती आदमी और ४-६ रुपये के लिए इतना बेसब्र !"

"ऐसे तो कितने ही काम थे जिनके लिए वह एक दमड़ी का भी मुलाहिजा करने तो तैयार नहीं था। वैसे हजारों खर्च करता बेकायदे और बेवजह कोई एक छदाम नहीं ले सकता था मगर उससे ?"

"अच्छा!" आश्चर्य से वर्मा जी बोले- "वक्त खत्म हो चुका। काम भी मेरा

करीब-करीब हो ही गया। तुम जा सकती हो। घबराना मत और ज्यादा उल्टी-सीधी बातें भी मत करना किसी से। ईश्वर पर भरोसा रखो, वे ही सारी मुश्किलें आसान करेगा। जरा इस कागज पर अपने घर का पता लिख दो, देखता हूँ वह पर्स बहाँ है या नहीं।"

अमेलिया ने पता लिखकर दे दिया। वर्मा उसे हर तरह का धीरज बँधाकर चल दिये ।

वर्मा को अब सबसे जरूरी काम था अमेलिया का फ्लैट देखना। फ्लैट था भी शिवाजी पार्क की बस्ती में जहां अभी पूरी तरह आबादी भी नहीं हुई थी। जहाँ-तहाँ एक-एक दो-दो मकान बन नवे थे। पूरी तरह रोशनी भी नहीं आई थी। अमेलिया को हिरासत में लेने के साथ ही पुलिस ने उसका फ्लैट भी अपने

कब्जे में कर लिया था और उसको सील मोहर करके बन्द कर दिया था। उसके अन्दर जाने के लिए वर्मा को आज्ञा लेने चिन्तामन के पास जाना पड़ा। आज्ञा तो उनको देनी ही पड़ती । क्योंकि वे जानते थे वर्मा की पहुँच कहां तक है। आज्ञा के साथ हो उन्होंने यशवन्त को भी वर्मा के साथ जाने का हुक्म दिया । चलने के पहत्ते वे हँसकर बोले "वर्मा इस मर्तबा तुमको अपने किये पर पछताना पड़ेगा। इतना साफ और सीधा केस है यह। इसे न मानकर तुम खामखा के लिये अपने को झंझट में डाल रहे हो। मुझे तरस आता है तुम्हारी हालत पर !"

"तुम्हारे तरस खाने में तानाकशी भी भरी हुई है मि० चिन्तामन ! उस पर भी मैं तुम्हें तो नहीं तुम्हारे ईश्वर को धन्यवाद जरूर दूँगा। भला एक केस तो ऐसा आया जिसने तुमको तरs खाना तो सिखा दिया। रहा समझने न समझने का सवाल। तो इतनी अक्ल लेकर तुम पैदा ही नहीं हुये जो किसी सही बात को समझ सको, पछताने की बात कहते हो। चलो यही सही, आखिर में अपने हिस्से का नहीं तो तुम्हारे हिस्से का भी मैं ही पछता

लूँगा। तुम तो पछताना भी नहीं जानते, चलो यशवन्त !"

यशवन्त हमेशा से वर्मा की अक्ल और दूरन्देशी को मानता आ रहा था। कितने ही मामलों में उसने इनकी भविष्य वाणी सही होते देखी थी। मगर मजबूर था कि शुरू से ही चिन्तामन केाथ रहा था इसलिए उनकी हां में हां मिलानी पड़ती थी ।

अमेलिया के फ्लैट के सामने पहुँच कर वर्मा जी ने गाड़ी खड़ी की और उतर कर पहले उस बिल्डिंग के चारों तरफ घूमकर एक-एक चीज को देखा। उस विल्डिंग के बिल्कुल सामने एक बिल्डिंग थी, उसकी दूसरी मंजिल की एक खिड़की पर एक लड़की बैठी थी।

उसे देखते ही वर्मा जी चौंके। उन्हें ख्याल हुआ कि इसको कहीं देखा जरूर है मगर बहुत कोशिश करके भी याद न आया कि कहाँ देखा । यशवन्त के साथ वे अमेलिया की बिल्डिंग में दाखिल हुये । नीचे ही भाड़े वाले गोरखा की कोठरी थी। उससे अमेलिया का फ्लैट खोलने की बात कही। वह बोला- "मालिक हैं आप लोग ! दिन में दस बार चाहें तो देख सकते हैं। बस इतना ख्याल जरूर रखियेगा कि मुझ गरीब आदमी पर कोई बात न आने पाये।"

"नहीं जी ! तुमसे क्या वास्ता इस झगड़े से ? जब तक हम लोग मौजूद हैं तुमसे कोई क्या कह सकता है। आओ हमारे साथ।"

ऊपर जाकर यशवन्त ने मोहर तोड़ कर जैसे ही ताले में चाभी लगाई तो अन्दर से ऐसी आवाज आई मानों किसी ने घबड़ाहट में खिड़की खोली हो। वर्मा जी बड़ी शीघ्रता से बोले - "जल्दी खोलो दरवाजा अन्दर कोई मालूम होता है।"

"अन्दर कौन हो सकता है!" यशवन्त ने बड़े तज्जुब से कहा - "दरवाजा तो आप ही के सामने खोला जा रहा है।"

दरवाजा खुलते ही तीनों आदमी झपट कर अन्दर गये । गोरखा ने स्विच दबाकर अन्दर रोशनी कर दी। अगले कमरे के सामने ही दूसरा कमरा था।

उसका दरवाजा खुला हुआ था और उसकी खिड़कियों पर पर्दे पड़े हुये थे। वर्मा जी लपक कर अन्दर गये और पर्दा हटाकर देखा । एक खिड़की खुली थी। बाहर झांक कर देखा लेकिन कुछ दिखाई नहीं दिया। उन्होंने घूम कर यशवन्त से पूछा- "तुम लोगों ने फ्लैट चारों तरफ से बन्द कराया होगा।"

"बेशक ! बल्कि यह काम तो मैंने ही अपने हाथों से किया था । ताज्जुब है खिड़की खुली कैसे रह गई ?"

"रह नहीं गयी बल्कि खोली गयी।" वर्मा जी बोले- "सामने

मेज पर अमेलिया का बैग पड़ा था। उसे उठाकर उन्होंने चाभी की तलाश की। मिल जाने पर बोले - "आने वाले को चाहे किसी भी चीज की तलाश रही हो मगर चाभी उसके हाथ नहीं लगी । अब, सवाल है यहाँ कोई कैसे आया ? यह भी काम मेरे लिये बढ़ ही गया ।"

"मैं इस मामले में क्या कह सकता हूँ। बहरहाल जिस चीज की तलाश में आप आये थे वह तो मिल ही गई। यह क्या कोई खास चाभी है ?" यशवन्त ने पूछा ।

"मेरा ख्याल तो कहता है कि जरूर है !"

"और खुलेगा क्या इससे ?"

"मेरे अन्दाज से तो सारा राज इसी चाभी से खुलेगा । मैं इसको अपने ही पास रखता हूँ।"

"बड़े शौक से रखिये ! मगर मैं कसम खाने के लिये भी चिंता-मन से पूछ लेना अच्छा समझता हूँ। गोरखा यहाँ कहीं पास में टेलीफोन है ?"

"सामने बिल्डिग में है हुजूर! करना हो तो मैं चलूं आपके साथ ?"

"हाँ ! जरा चलो तो !"

"मैं भी नीचे ही चलता हूँ। गोरखा ! खिड़की वगैरह जरा ठीक तरह से देख-भाल कर बंद करो। पहले की तरह इस मर्तबा नहीं खुली रहना चाहिये ।"

"खुली तो पहले भी नहीं थी साहब! मगर अब क्या कहा जाय ?"

गोरखा ने बड़बड़ाते हुये सब खिड़कियों की जाँच करके बंद कर दिया फिर सच लोग नीचे आये। यशवन्त गोरखा के साथ सामने बिल्डिंग में फोन करने गया और करोच १५ मिनः बाद हँसता हुआ लौट आया। वर्मा जी ने कारण पूछा तो बोल । -

"आपके लिये बड़ा अच्छा संदेशा लाया हूँ। कोई लड़की हर १०-१५ मिनट के बाद आपकी तलाश में आपके दफ्तर को फोन कर रही है। मिस प्रतिमा ने यह संदेशा हमारे साहब को दिया है। साहब ने मुझसे बताया कि आपसे कह दिया जाय।"

"कौन लड़की है जो इतनी बेताबी से घंटे भर में चार मर्तवे फोन कर रही है। नाम कुछ नहीं बताया उसका ।"

"नाम को मारिये गोली ! जरा उस बेचारी की बेताबी का अन्दाजा लगाइये । एक घंटे में चार मर्तबा फोन । यहाँ तो जवानी में भी कोई नहीं पूछता और लोगों को बुढ़ापे में भी..."

"बको मत फिजूल ! सीधे-सीधे उसका नाम बताओ। प्रतिमा ने नाम जरूर बताया होगा उसका। बताओ कौन थी। क्यों फोन कर रही थी।"

"आप तो उससे भी ज्यादा बेचैन हो गये। अच्छा सुनिये । उसका नाम है स्टेला बार्मर । नाम से ऐंग्लो इंडियन मालूम पड़ती है।"

"इसके अलावा कुछ नहीं बताया ?"

"जी हाँ ! बाम्बे आयल मिल में काम करती है और माहिम स्टेशन के पास किसी नई बिल्डिंग में रहती है। बिल्डिंग का नाम बेशक कुछ नहीं बताया।"

"चलो नहीं सही ! मैं जाकर पता लगा लूंगा । तुम अब कहाँ जाना चाहते हो।"

"मैं तो पहले दादर पुलिस स्टेशन जाकर यहां के लिये एक पहरे वाले का इन्तजाम करूँगा। किर वापिस चला जाऊँगा ।"

शिवाजी पार्क के चौरास्ते पर एक टैक्सी मिल गई। उसे रोककर यशवन्त वर्मा की गाड़ी से उतरते वक्त बोला- "वह लड़की इस मामले में कुछ गवाही देना चाहती है। उसने किसी आदमी को कार्टर की गाड़ी में बन्दूक रखते देखा है।"

वर्मा जी उछल पड़े, बोले- "क्या ? यह तुमसे किसने कहा ?"

"मैंने चिन्तामन से यह संदेशा सुनकर प्रतिमा जी को फोन किया था। उन्होंने ही यह बात बताई है मुझको ।"

"मगर तुमने तो चिन्तामन का नाम लिया था ।"

'वह तो अब भी ले रहा हूँ! यह कहिये कि प्रतिमा जी से बातें करने की बाबत नहीं कहा। इसलिये कि बगैर ससपेन्स के कुछ मजा नहीं आता ।"

"ससपेन्स की दुम ! चिन्तासन को तो नहीं मालूम हुई यह बात ।"

"हुई भी नहीं और होगी भी नहीं! आप बेफिक्र रहिये।"

"अच्छा तो चलते-चलाते तुम भी एक बात सुनते जाओ । मगर जितना मैं कहूँ उतना हो करना उससे ज्यादा करोगे तो सारा खेल बिगड़ जायेगा।"

"नहीं करूँगा वादा करता हूँ बताइये क्या बात है।"

"मिल मालिक का खूनी अमेलिया के फ्लैट में मौजूद है। मगर अभी उसको छेड़ने की जरूरत नहीं है।"

"यशवन्त विस्मय से आँखें फाड़ कर उनकी तरफ देखने लगा। दूसरे ही क्षण वे गाड़ी तेजी से भगाकर चले गये। यशवन्त ने वादा किया था। इसलिये चुपचाप टैक्सी में बैठ कर चल दिया।

८

चिन्तामन के कमरे में वर्मा जी जैसे ही दाखिल हुये कि उन्होंने पूछा- "कहिये मिल गई वह लड़की ?"

"कौन सी लड़की ?"

"बही जिसने इस केस के सिलसिले में कोई बात बताने के लिये आपको फोन करके बुलाया था ।"

"मगर आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं किसी लड़की के यहाँ गया हुआ हूँ।"

"मिस कार्टर का फ्लैट देखने के लिये आप और यशवन्त शाम को गये थे और अब बजे हैं रात के साढ़े ग्यारह आप में से किसी ने भी वहाँ की खबर देना मुनासिब नहीं समझा। तब मैंने आपके घर फोन किया। इत्तफाक से वहाँ प्रतिमा मौजूद थी। उसी ने यह बात बताई और यह भी बताया कि आप लोग कार्टर का फ्लैट देखकर रवाना हो चुके हैं।"

"लेकिन यशवन्त मुझसे यह कह कर चला था कि सीधा आपके पास आ रहा है। फिर मुझे फोन करने की क्या जरूरत थी।"

"खैर अब बताइये वह लड़की कौन है और केस के मुताल्लिक क्या कहना चाहती है ?"

"जो कुछ उसने कहा मैंने सुन लिया। उसे अगर पुलिस से ही कुछ कहना होता तो सीधी आपके पास आती।"

"यानी वह बात आप मुझसे भी छिपाना चाहते हैं।"

"मि० चिन्तामन ! यह केस कुछ ऐसा है कि इसमें मेरी और आपकी अक्ल का इम्तिहान होने वाला है। अब तक जो कुछ भी हम लोगों ने किया है हमें उस पर दावा है। आपने कार्टर को गिरफ्तार किया है। मैं उसको बेकसूर साबित करके छुड़ाने की फिक्र में हूँ। तब आप खुद ही समझ सकते हैं कि हम एक दूसरे पर अपनी प्वाइन्ट कैसे जाहिर कर सकते हैं। इस बात का इत्मीनान आप जरूर रख सकते हैं कि मुकदमे की कामयाबी का सेहरा आप ही के सिर चढ़ेगा ।"

"ऐसा तो तुम हमेशा ही करते हो मगर जरा पहले से कुछ बता दिया करो तो मुझे भी सोचने का मौका मिल जाया करे।"
"ओह ! यह बात है ? अच्छा आगे से ख्याल रखा करूँगा।

अब यह बताइये इस केस से ताल्लुक रखने वाले सभी लोगों का पता आप लगा चुके हैं ?"

"करीब-करीब ! थोड़ा बहुत सब के ही बारे में मालूम कर लिया है।"

"शायद यहाँ भी भूलकर रहे हैं आप। अच्छा बताइये शम-शेर के बारे में क्या रिपोर्ट है आपके पास ?"

"ऐसे क्यों पूछा तुमने ! क्या उसके ऊपर भी किसी तरह का शुब्हा करने की जरूरत है। हमारे पास तो उसके खिलाफ कुछ नहीं है।"

"मगर यह जरूरी तो नहीं है कि जिस आदमी का भी नाम आये उसके खिलाफ पहले ही से पुलिस में कोई रेकार्ड मौजूद होना चाहिये।"

"तब मैं उसके बारे में उतना ही जानता हूँ जितना पेपरों में छपा है लेकिन मैं जानता हूँ तुम्हारे इस वक्त इस तरह पूछने में कोई भेद जरूर है। क्या सचमुच ही है कोई बात जिसका जानना जरूरी है, मगर मैं नहीं जानती।"

"नहीं कोई ऐसी खास बात तो नहीं है। मैंने तो यों ही पूछ लिया मैं भी इस मामले में उतनी ही दिलचस्पी रखता हूँ जितनी कि आपको है। अब हार्वे के बारे में कुछ कह डालिये।"

"उसकी बाबत क्या कहना। वह तो है ही पुलिस का आदमी किसी वक्त वह यहाँ के पुलिस कमिश्नर का असिस्टेन्ट रह चुका है।"

"यानी सरसरी तौर पर आप उसका भी पता लगा चुके हैं।"

"सरसरी तौर से क्या मतलब ?"

"मतलब तो साफ जाहिर है ! न वह उस दर्जे पर आपके सामने था न आपका उससे कोई वास्ता पड़ा। मगर आप उसकी निस्बत थोड़ा बहुत जानते ही हैं। बिना वजह तो नहीं जानते होंगे।"

"मगर उस जानने से और मौजूदा मामले से क्या निस्बत ?"

"कुछ खास नहीं ! चलिये छोड़िये । करडे के बारे में कुछ है आपके पास ?"

"चीफ क्लर्क करडे ! उसके लिये मुझे तो एक ही रिपोर्ट मिली है। कार्टर के साथ उसका रोमांस चल रहा है बस !"

"नानसेन्स ! शायद पहली मुलाकात में आपने कहा था कि इन दोनों में बड़ी खटपट चल रही है।"

"मैंने ? ऐसा कहा था ?"

"साफ नहीं कहा मगर इशारा तो था ही उस तरफ हालांकि वह इशारा भी उसी वक्त खत्म हो गया था जब कार्टर को राइफल चुराने के कसूर में गिरफ्तार किया गया ।"

"मगर राइफल चुराई जाने की खबर तो उन्हीं लोगों ने दी थी।"

"इससे क्या होता है ! उसका फायदा तो आपने उठाया । बाद में करडे से बातें करके अपने ख्यालों को बदल दिया । मगर आपके बाल सफेद होने को आये। जग यह तो सोचिये कि इन दोनों की उमर का क्या मेल। करडे कल का जवान छोकरा । कार्टर घिसी पंजी, खेली खाई औरत । कितनी दुनिया देख चुकी है। इन दोनों को तो आप बिल्कुल तेल पानी जैसा समझिये जो एक बर्तन में रह कर भी अलग ही दिखाई देते हैं।"

"मगर वह तो कार्टर के लिये जान देता है।"

"जान देने को तो सेनिमा देखने वाले कितने ही नौजवान फिल्म स्टार पर जान देते हैं मगर देखना यह है कि वह किस पर जान देती है। इस रोमांस के ख्याल को थोड़ी देर के लिये दिमाग से बिल्कुल हटा कर ऐसा रास्ता निकालना है जो खूनी को पकड़ने में मदद दे। उन रास्तों पर जिन पर आप चल रहे हैं और खून करने का मकसद कायम कर रहे हैं। उनको देखते

:

हुये इस ख्याल को अलग हटा देना जरूरी हो जाता है।"

"वह किस तरह जरा मुझे भी समझाओ।"

"वह बात मेरे समझाने से आप नहीं समझ सकेंगे बल्कि मेरा कहना सुन कर खुद समझने की कोशिश कीजिये। करडे को अगर आप कार्टर का आशिक गिनते हैं तो उसको भी खून करने की उतनी ही गुंजायश है

जितनी कार्टर को। मगर आपने उसके खिलाफ उँगली भी नहीं उठाई। जलन की वजह से वह भी तो खून कर सकता है। आपने उसकी तरफ ध्यान क्यों नहीं दिया।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो। मैंने अभी बहुत सी बातें अपने ही तक रखी हैं। उनको बताने के लिये आज फुर्सत भी नहीं है।"

"वह तो ईश्वर करे कभी न हो ! हालांकि बाद में सुनने को यही मिलता है कि बेकार वक्त बरबाद हुआ। फिजूल की दौड़ धूप रही। बहरहाल अब मेरी एक दरख्वास्त है मान लेंगे तो आपही के हक में अच्छा होगा। कहना यह है कि दूसरी उछाल लगाने से पहले यह सोच लेना फायदेमन्द होगा कि आगे की जमीन सख्त है या पोली ।"

"लेकिन भाई, तुम्हारी बात का मतलब मेरी समझ में नहीं आता। तुम्हारी सीधी बात में भी कुछ न कुछ भेद तो होता ही है।"

"सब समझते हो मि० चिन्तामन ! मगर अजनबी बनकर अपना मतलब पूरा करने की आदत छोड़ दो। अब यह बताओ कार्टर को कब रिहा कर रहे हो ?"

"उसको छोड़ना न छोड़ना अब मेरे हाथ में नहीं है। अदा-लत ही करेगी जो कुछ करना है। पेशी के दिन पता लग जायगा ।"

"ओह हां ! मुझे तो ख्याल ही नहीं रहा। बहरहाल उसके

ऊपर चार्ज तो तुमने राइफल चुराने का ही लगाया है। पेशी है किस दिन यह तो बता सकोगे न ?"

"हां-हां, क्यों नहीं बड़ी खुशी से ?"

वर्मा यहां से अब दूसरी फिकर में बाहर निकले ।

और किसी जासूस के चार आंखें हों या न हों मगर वर्मा के तो चार क्या आठ और सोलह आँखें भी मान ली जायें तो थोड़ी है। सपने में भी कोई बात उनकी नजरों के सामने से गुजर जाये फिर क्या मजाल जो वे उसको हर पहलू से उसकी तह और चोटी देखे बिना चैन से बैठ जायें। स्टार रूम में सिगरेट के टुकड़ों के साथ उनको कागजी दिद्यासलाई की एक तीली भी मिली थी। उसी वक्त से दिमाग में यह सवाल चक्कर लगा रहा था कि यह वहाँ कैसे और क्यों आई ?

चिन्तामन के पास से उठकर वे तार घर पहुँचे और वहां से सिविल मिलेटरी क्लब के मैनेजर को फोन किया। कुछ देर उसके साथ इधर-उधर की बातें करके अपने मतलब की बात मालूम कर ली। फिर हँसते हुये आकर गाड़ी पर बैठे और तुलसीदास के घर पहुँचे। उस समय रात के ग्यारह बजे थे।

उस वक्त इनको आया देखकर वह बोला "भाई साहब! यह भी किसी शरीफ आदमी के घर आने का वक्त होता है।"

"मिस्टर ! शरीफ कई तरह के होते हैं। तुम अपना टाइप बतायो तब मैं गौर करूँ कि सचमुच मैं किसी शरीफ के घर हूँ या..."

लफंगे के घर यही कहना चाहते हो न। कोई हर्ज नहीं काम लफंगों से ही पढ़ता है तुम जैसे शरीफों का ।"

इतने ही में दोनी की बातें सुनकर तुलसी की स्त्री अन्दर से चली आई। उसने हँस कर कहा- "झगड़ा हो रहा है शरीफ और लफंगे का ?"

"झगड़ा नहीं भाभी !" वर्मा जी बोले- "मजदूरी मांग रहा है। तुम जानती हो इन लोगों का पेट तो कभी भरता है नहीं।"

तुलसी सिट पिटा कर कभी वर्मा जी की ओर कभी स्त्री की तरफ देखने लगा । कुछ क्षण के बाद संभल कर बोला- "अच्छा जी ! शरीफ साहब ! तुम जिस काम से आने हो वह पूरा करो और अपना रास्ता देखो। तुम्हें तो

आदत पड़ गई है रात भर सड़कों की मिट्टी सूंघने की। न किसी के नौकर न सिर पर कोई जिम्मेदारी। लेकिन अपने को तो सुबह आठ बजे जाना पड़ता है।"

उसी समय फोन की घन्टी बजने लगी। वर्मा जी ने रिसीवर उठा लिया। कुछ सुनकर बोले - "जी हाँ ! मैं वर्मा बोल रहा हूँ। कहिये हाँ-हाँ अच्छा ? ओह ! क्या क्यों? ओ के अभी आता हूँ। बस आया ही समझिये।"

फोन बंद करके उन्होंने एक पर्चे पर दो-चार लाइनें लिखीं और तुलसी दास को देकर बोले- "मैं यहां से सीधा सिविल मिले-टरी क्लब जा रहा हूँ। तुभ इस कागज को मेरे पीछे पढ़ लेना । अच्छा भाभी नमस्ते !"

साढ़े ग्यारह के करीब वे यहाँ से निकल कर सिविल मिलेटरी क्लब की तरफ चले। चिन्तामन के यहाँ से निकलने के बाद ही एक गाड़ी उनके पीछे लग गई थी। और जहाँ-जहाँ वे गये बरा-बर लगी ही रही। इस समय भी वह उनका पीछा कर रही थी। क्लब से करीब पौने बारह बजे निकल कर वे अपने फ्लैट की तरफ रवाना हुये। वहाँ पहुँच कर गाड़ी गैरज में बन्द दी और सीधे ऊपर चले गये। वह गाड़ी उनसे कुछ दूर पर रुक गई थी। उसके चालक ने वर्मा जी को गाड़ी बन्द करके ऊपर जाते देख लिया था।

डेढ़ बज चुका था। खिड़की के शीशों से छन कर चाँद की रोशनी कमरे के मेज पर पढ़ी हुई चीजों पर पड़ रही थी। मेज के पास ही पलंग बिछा था। वर्मा जी उसी पर सो रहे थे। चादर ओढ़ा हुआ था। मेज पर थोड़ी-सी रेजगारी और रुपयों के साथ उनका सिगरेट केस लाइटर, पाइप, गाड़ी की चाभी और कार्टर के घर से लाई हुई चाभी इत्यादि मेज पर पड़े थे। बाहर से लौट कर जेब की सारी चीजों को मेज पर डाल देने की उनकी बहुत पुरानी आदत थी। चाँद की रोशनी में वे सब चीजें बिल्कुल साफ चमक रही थी। समय बीत रहा था। सारे कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था। और उसे तोड़ने की कोशिश में शेल्फ पर रखी हुई टाइम पीस घड़ी टिक टिक कर रही थी। मगर उतने बड़े कमरे में बिचारी घड़ी की आवाज ऐसी ही थी जैसे नकारखाने में तूती की आवाज कोई माने नहीं रखती। धीरे-धीरे रोशनी कम होने लगी। चाँद ऊपर चढ़ता जा रहा था। कमरे की हर वस्तु

शान्त थी। बीच में सोया हुआ आदमी जरा हिल-जुल कर फिर शान्त हो जाता था ।

कुछ देर बाद घड़ी की टिक-टिक के साथ एक और आवाज भी आनी शुरू हो गई। मगर वह इतनी हल्की थी कि जब तक कोई उसके लिये कान ही लगाये न बैठा हो सुनाई नहीं दे सकती थी। मगर सोने वाला शान्त ही रहा। वह सुन भी कैसे सकता था। कुछ क्षण के बाद वही आवाज फिर हुई। इस बार जरा साफ-साफ सुनाई दी। जिससे यह समझ में आया कि बाहरी दरबाजे में कोई चाभी लगा कर खोलने की कोशिश कर रहा है। कुछ क्षण के बाद वह आवाज रुक कर फिर शुरू हो गई फिर रुकी और फिर होने लगी। इसी तरह चार-छह बार हो जाने के बाद वह आबाज दूसरी आवाज में बदल गई। यह आवाज थी दर-बाजा खुलने की जिसे कोशिश के साथ बहुत धीरे-धीरे खोला जा रहा था। इस आवाज के बाद ही पैरों की खस-खस सुनाई देने लगी । सोया हुआ व्यक्ति एक बार हिला । दरवाजा खोलनो

वाला ठिठक कर रह गया। कुछ क्षण बाद आने वाला कुछ कदम बढ़ा। उसके हाथ में एक डंडा था। बहुत ही मजबूत शायद लोहे का डन्डे वाला हाथ ऊँचा उठा कर वह पलंग की तरफ बढ़ा ।

पलंग से पहले मेज थी। उस व्यक्ति ने मेज पर रखी हुई सब चीजों को ध्यान से देखा और कार्टर वाली चाभी को उठा कर अपनी जेब में डाल लिया। अब वह फिर पलंग की तरफ बढ़ा । पास पहुँच कर पूरी ताकत से एक हाथ सोये हुये व्यक्ति के मारा। अगर चीख पुकार कुछ नहीं हुई। सोया हुआ व्यक्ति केवल एक बार हिल कर रह गया। फिर लगातार तीन-चार बार डंडा ऊपर उठा और सोये हुए व्यक्ति पर गिरा। हड्डियों के टूटने जैसी चर-चराहट हुई। मारने वाला खुश हो गया और सोये हुये व्यक्ति का हिलना-डुलना बिल्कुत्त बन्द हो चुका था ।

अभी तक कमरे में चांद की हल्की रोशनी आ रही थी। एकाएक एक तरफ से तेजी के साथ निकल कर एक व्यक्ति ने स्विच दबा कर कमरे में रोशनी

कर दी। यह व्यक्ति और कोई नहीं वर्मा जी ही थे जिनके हाथ में इस वक्त पिस्तौल भी था । उन्होंने गरज कर कहा- "खूनी कुत्ते ! तुम तो बहुत कुछ कर चुके मगर अब मेरी बारी है। डाल दो डन्डा वहीं ! जरा भी इधर-उधर हुये तो गोली मार दूँगा। शाम ही से तुम मेरी आंखों में धूल झोंकने की कोशिश कर रहे हो मगर यह नहीं जानते कि वर्मा के दो आँखें आगे हैं तो चार पीछे भी हैं।"

इसी समय वह आदमी तड़प कर घूमा। लेकिन एक कदम भी बढ़ने से पहले वर्मा जी ने उसके हाथ में गोली मार दी। वह हाय करके जमीन पर बैठ गया। उन्होंने लपक कर उसके ऊपर रस्सी का फन्दा डाल कर जकड़ दिया। इसी समय किसी ने बाहर से दरवाजे की घंटी बजाई। वर्मा जी दरवाजा खोलने के लिये चले ।

****

"सुबह के चार बजे मुझे सोते. से जगाने का इरादा तो शायद पुलिस कमिश्नर भी नहीं करेंगे वर्मा!" कहते हुए चिन्तामन ने वर्मा जी के फ्लैट में पैर रखा। मगर तुम्हारा यह रमेश पूरा दूत्त है यमराज का। कितना समझाया। पर क्या मजाल जो वह किसी तरह टल जाय । दस तरीके से टालने की कोशिश की। पर वह कब सुनता है किसी की..."

रमेश पीछे ही था, फौरन ही बोल उठा- "यह आपका कसूर नहीं है मि० चिन्तामन ! जब किसी को यह मालूम हो जाता है कि कोई उसके नखरे उठाने वाला मौजूद है तो वह ऐसी-ऐसी अदायें दिखाता है कि जिसका जवाब नहीं ।"

"ठीक है ! एक तो किसी को आधी रात के वक्त सोते से जगा कर परेशान करना। फिर उल्टी सीधी बातें भी सुनाना। ये ही शोभा देता है तुम दोनों गुरू चेलों को। बहरहाल अब तो बताओ। क्यों लाये हो मुझे बुला कर इस वक्त सुबह-सुबह ! जरूरत क्या पड़ गई मेरी ?"

"जरूरत हमारी नहीं ! तुम्हारी ही है मि० चिन्तामन ! तुम्हारी ही जरूरत पूरा कराने के लिये तुम्हें यहाँ बुलाया गया है। मैंने तुम्हारा खूनी तलाश कर

लिया है।" वर्मा जी ने बड़े धीरज से कहा।

"क्या कर लिया ? खूनी तलाश कर लिया। वह कैसे ?"

"जरा तसल्ली रखिये ! धीरज से काम लीलिये। मुझे तो शुरू में ही पूरा अन्दाजा हो गया था कि खूनी कौन है। मगर उसको उसी वक्त हिरासत में ले लेने से वो बातें जो अब जाहिर होती जा रही है हर्गिज न होने पाती।"

"आखिर नाम तो बताओ उसका ! कुछ नाम तो होगा ही ?"

"नाम भी बता दूँगा। जब सारी बातें बताऊगा तो नाम क्या छिपा थोड़े ही रहेगा। आप जरा सब के साथ सुनते जाइये। खून करने वाले का एक मकसद होता है जिसकी वजह से वह किसी का खून करता है। हमें सबसे पहले उसी को देखना चाहिये। एक मकसद को कायम करके तो आपने अमेलिया कार्टर को गिरफ्तार कर लिया। आपके लिये वह काम कुछ मुश्किल भी नहीं था। मगर उस पर मुझे संतोष नहीं हुआ और मैं इसकी गहराई तलाश करता रहा और उस वक्त तक लगा रहा जब तक कि मुझे इसकी असलियत का पता नहीं चल गया।"

"उस असलियत को मालूम करके तुम पहुँचे किस तनीजे पर ?"

"सिर्फ एक ! खूनी को रुपये की जरूरत थी।"

"बस ? इसी पर तुम अपने बुद्धिमान होने का दम भरते हो ? वर्मा जी वह मकसद तो तुम हर मामूली आदमी के साथ भी लगा सकते हो। आज दिन रुपये की जरूरत है किसको नहीं।"

"रुपये की जरूरत होना और बात है मि० चिन्तामन ! मगर उसके लिये किसी का खून कर देना और बात है। शायद हर आदमी तो ऐसा करने की कोशिश नहीं करेगा। मगर जिसने कर डाला है मैं उसी की बात कहता हूँ।"

"मेरी राय मानो तो तुम थोड़ा सा जादू मन्तर करना और सीख लो। फिर

जासूसों के खलीफा बनने में कुछ कसर नहीं रह जायेगी।"

"थेङ्क यू ! बहरहाल आप सुनते तो जाइये। मिल मालिक के मारे जाने का सारा राज उस वसीयतनामे में छिपा पड़ा है जो उसने मरने से कुछ ही दिन पहले लिखा था। जो थोड़ी देर पहले खोई हुई या बरबाद की गई समझी जा रही थी।"

"और अब तुम जानते हो कि वह वसीयतनामा कहाँ है ?"

"जानता ही नहीं मि० चिन्तामन। जेब में रखता हूँ।" कह

[१११

कर वर्मा जी ने जेब से पांच छै कागजों का लपेटा हुआ एक पुलिन्दा निकाल कर चिन्तामन के हाथ में दे दिया और बोले-"यह है वह वसीयतनामा जिस पर हार्वे और कार्टर ने सालि-सीटर के सामने दस्तखत किये थे ।"

"मगर यह तुम्हारे पास कैसे आया ?"

"खूनी इसको अपनी जेब में रखे फिरता था। बड़ी मुश्किल से बहुत कुछ ऊँचा-नीचा समझाने के बाद खूनी ने इसको मेरे इवाले किया ।"

"म समझता हूँ वर्मा जी! जो कुछ तुम कह रहे हो उस पर तुम्हारा पूरा दावा भी होगा और साथ ही साथ उसके सबूत भी.....।"

"मुझसे पूछने की बजाय अगर आप इस वसीयत को पढ़ बालें तो ज्यादा बेहतर होगा।"

चिन्तामन ने सरसरी तौर पर वसीयत का पहला पेज पढ़ डाला फिर बोले - "शायद मुझे यह मान लेना चाहिये कि तुम अपने सोचे हुये फैसले के बहुत करीब पहुँच गये हो।"

"अगर आप ऐसा समझते हैं तब तो मुझे ताज्जुब होना चाहिये । अब पूरी

बात सुन लीजिये। इस वसीयत से पहले की लिखी तमाम वसीयत बेकार हो जाती हैं। इसकी लिखत के मुताबिक सारी जायदाद तीन हिस्सों में बँट जाती है, हलांकि पहली वसीयत के हिसाब से सारी मिल्कियत का मालिक अकेला शमशेर ही माना गया था।"

"मगर मैं समझता हूँ आज तक मुझे तो क्या शहर में किसी को भी नहीं मालूम होगा कि उस बूढ़े नैपाली के शमशेर के अलावा भी कोई औलाद होगी ।"

"उस औलाद का पूरा हाल यानी उसकी जड़ बुनियाद सहित आपको इस वसीयत में लिखा हुआ मिलेगा। कुछ बातें ऐसी भी हैं जिनको खूनी ने जबानी बताने की मेहरबानी की है।"

"मगर ताज्जुब है खूनी ने इतनी आसानी से सारी बातें तुमको बता कैसे दी ?"

"और वह कर भी क्या सकता था। खेल तो सारा खत्म हो ही चुका था। इसको जब खूनी ने समझ लिया तब उसे हथियार डालने के सिवा रह ही क्या गया था।"

'जरा साफ-साफ बताने की मेहरबानी करोगे।"

"सब साफ-ही-साफ है मि० चिन्तामन ! केश बेशक ऐसा है जो अक्सर देखने में नहीं आता। उसकी वजह यह है कि खूनी बहुत ही तजुर्बेकार है। उसकी हर तरकीब सांचे में ढली हुई थी मगर आप जानते हैं, गलत काम का नतीजा भी वैसा ही होता है। हम लोगों को यही जानकारी थी बुड्ढे की एक शमशेर ही औलाद है जिसकी मां नैपाल ही में मर चुकी है। इसी शमशेर को लेकर वह वहां आया था। यहाँ आकर चार पैसे पैदा किया। लड़के को पढ़ने के लिए विलायत तक भेजा पैसा होता है तब आदमी को अच्छी और बुराई दोनों ही सूझती है। लड़के को विलायत भेजने के बाद बुड् ढे ने यहां एक मराठिन औरत से शादी कर ली जिसको उसने नासिक में रखा। उससे दो लड़के पैदा हुये । उन्हीं दोनों का नाम इस नई वसीयत में लिखा है और शनाख्त (पहचान) के लिये दोनों के फोटो भी इसमें लगे

हुये हैं। किसी वजह से वह शमशेर से हमेशा नाराज ही रहता था। हालांकि इतना खर्च बर्दाश्त करके उसे विलायत भेजा। फिर भी वह उससे खुश नहीं था जैसा कि इस वसीयत से साबित होता है। इसी ख्याल के मुताबिक उसने उस मराठिन की औलादों को पढ़ा-लिखाकर नौकर करा दिया ताकि उन्हें मालूम हो जाये कि पैसा कमाने के लिये कितनी मेहनत व मुसीवत उठानी पड़ती है। इसके बाद आती है वह ईरानी लड़की

जिसकी मोहब्बत में दीवाना होकर बुडडे ने हजारों रुपया पानी को तरह बहा दिया। इस वसोयत से यह साबित होता है कि इस लड़की को उसने डाक्टरी कराकर इस लायक बना दिया था कि उसके औलाद हो ही न सके। उसका ख्याल था औलाद होने से औरत की खूबसूरती बिगड़ जाती है। इस ईरानी लड़की को इसने थोड़े दिन तो यहाँ ही रखा फिर पूने में एक बंगला बनवाकर वहां भेज दिया ।

हर महीने के शुरू में वह निकलता और एक हफ्ते में पूना और नासिक दोनों का चक्कर लगाकर लौट आता। मराठिन के लड़कों को उसने हर तरह से अपनी मर्जी के माफिक पाया तब उसे यह ख्याल आया कि इन लड़कों का भी उसकी जायदाद पर उतना ही हक है जितना कि शमशेर का । हलांकि शमशेर को विलायत पांच बरस रखकर वह काफी खर्च कर चुका था। इस वसीयत को लिखने से पहले वह नासिक और पूना का चक्कर लगाकर आया था। आते ही उसने अपना इरादा शमशेर को जाहिर किया। इस पर बाप-बेटे में खूब झगड़ा हुआ । होना वाजिब भी था। कहां तो सारी जायदाद का वह अकेला मालिक होता था और कहां उसके पांच हिस्से होने की नौबत आ गई। शमशेर किसी हालत में राजी नहीं हुआ । मगर उसके राजी न होने से बुड् ढे की मर्जी में कोई फर्क पड़ने की गुंजायश नहीं थी ।

ये बातें हालांकि एक बन्द कमरे में हुई थी फिर भी एक आदमी ने छिपकर सारी बातें सुन भी लीं और बाद में वसोयत भी गायब कर दी। उसके बाद जरूरी था कि बुडडे को खत्म कर दिया जाय क्योंकि अगर उसको वसीयत का गायब होना पता लग जायगा तो वह उसका दूसरा इन्तजाम कर देगा ।"

"ओह, अब मैं समझा। शमशेर ने ही उस वसीयत को गायब करके बाप का खून कर दिया। क्योंकि सबसे ज्यादा नुकसान तो उसी का होता था। सच कहना, है न ऐसी ही बात ?"

चिन्वामन की बात सुनकर वर्मा जी हूँ से और अन्दर की तरफ पुकार कर कहा - "बाबू तुलसीदास ! ले आओ भाई अपने मेह-मान को।"
फिर भी चिन्तामन बोले- "अरे तुमने यहीं रख छोड़ा है उसे कमाल के आदमी हो तुम। शमशेर जैसे आदमी को इस तरह बन्द कर रखा है तुमने....."

"मैंने खूनी को बन्द कर रखा है मि० चिन्तामन ! मगर बदकिस्मती से वह शमशेर नहीं है।"

इतने ही में दरवाजा खुला और तुलसीदास एक आदमी को ठेलता हुआ बाहर लाया। तब वर्मा जी बोले- "लीजिये खूनी आपके सामने खड़ा है मगर शमशेर नहीं ये हैं मि० हार्वे, मिल मैनेजर ! जिनको आप पुलिस का आदमी और गवाह नं० एक समझते थे ।"

चिन्तामन दोनों हाथों से माथा पकड़ के बैठ गये और बोले- "वर्मा जी इसका तो मुझे सपने में भी ख्याल नहीं था।"

"यह कोई नई बात तो है नहीं। करीब-करीब हर केस में ऐसा ही होता है। खून की शाम को हार्वे का बुड्ढे के साथ झगड़ा भी हुआ था मगर इसकी धमकियों का बुड्ढे पर कुछ असर नहीं हुआ ।"

"किस तरह की धमकी दी थी इसने उसको ?"

"उस वसीयत में लिखी सब बातें जाहिर कर देने की !"

"और असर क्यों नहीं हुआ उस पर ?"

"इसलिये कि जिस वक्त हार्वे साहब पुलिस सार्जेन्ट थे इन्होंने कई चोरियाँ

कराई और उनमें हिस्से भी लिये। सबसे आखिरी केस में,

जिससे घबरा कर हार्वे ने पुलिस की नौकरी छोड़ दी थी। उससे एक आदमी का खून भी हो गया था। ये सारे करम बुड्ढे को मालूम हो चुके थे इसीलिये उसने इनकी बातों की परवाह नहीं की। उसी रात इन्होंने गोली मार दी उसको..."

'मगर यह तो बड़े शर्म की बात है कि एक मर्डर का पता पब्लिक को हो और पुलिस को न हो।"

"होती कैसे ! जिस इलाके में वारदातें होतीं उसके इन्चार्ज हार्वे ही थे। फिर पूछताछ करता ही कौन ?"

"और उस बुड्ढे को कैसे मालूम हो गई ?"

"हावे को किसी ने उससे मिला दिया था। वह रहता था औरतों के चक्कर में। सोचा ऐसी हरकतों से बचने के लिये अगर थोड़े से पैसों में एक पुलिस अकसर खरीदा जा सकता है तो हर्ज क्या है। यह उसके जाल में फंस गये। वह रूपया देकर इनसे काम लेने के साथ ही इनकी सारी बातें भी मालूम कर लेता था ।"

"उन सिगरेट के टुकड़ों के लिये क्या मालूम हुआ ?"

"हार्वे की नियत अमेलिया पर बहुत बुरी तरह बिगड़ी हुई थी। अगर उसका रोमांस बुढ्ढे तक ही रहता तब तो गनीमत था मगर चूँकि करडे से भी हसना बोलना शुरू हो गया तब यह भी उम्मीदवारों में खड़े होने लगे। एक दिन उन्होंने कुछ दस्तन-दाजी की जिसके जवाब में अमेलिया ने इनके तमाचा लगा दिया दफ्तर का मामला था इसीलिये यह कुछ कह तो न सके । मगर बैर का बीज बो दिया गया था। खून को शाम को इन्होंने ही अमेलिया की मेज से वह टुकड़े उठाकर यहाँ डाल दिये मगर उसके साथ ही एक बहुत बड़ी गलती भी कर डाली। वह भी बड़ी होशियारी के साथ।"

"वह क्या ?"

११६

"इन्होंने खुद भी उस कमरे में सिगरट पी। उस सिगरट का निशान तो इन्होंने मिटा दिया मगर अधजली माचिस का इन्हें ध्यान नहीं आया। वह थी भी ऐसी जगह की जहाँ औरत पहुँच ही नहीं सकती थी मैंने पत्ता लगा लिया सिविल मिलेटरी क्लब के ये मेम्बर हैं"

"अच्छा उस लड़की ने बुलाकर क्या कहा तुमसे ?"

"वह भी मिल में ही काम करती है। नीचे मंजिल में छोटे-छोटे कमरे बने हुये हैं जिनमें छुट्टी के वक्त में लड़कियाँ खाना वगैरह खाती हैं। उस दिन खून हो जाने की बजह से किसी को घर तो जाने दिया नहीं गया। वह लड़की नीचे के कमरे में बैठी थी उसकी खिड़की के सामने ही कार्टर की गाड़ी खड़ी थी। उसने देखा कि हार्वे ने गाड़ी के अन्दर पिछली सीट उठाकर कुछ किया।"

चिन्तामन कुछ देर तक सोचते रहे फिर बोले- "मि० हार्वे ! तुमने वर्मा जी की सारी बातें सुनी। अगर इनमें तुम्हें कुछ एत-राज है तो बोलो ?"

जमीन की तरफ देखते हुये हार्वे ने जबाब दिया- "मि० वर्मा बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। मुझे अपने गुनाह मंजूर हैं। मैं किसी तरह का एतराज नहीं उठाता ।"

थोड़ी देर बाद चिन्तामन हार्वे को लेकर रवाना हो गये-वर्मा जी उसी दम कार्टर को छुड़वाने का हुक्म निकलवाया और एक ही हफ्ते के अन्दर मिल से उसकी नौकरी छुड़ा कर दूसरी जगह नौकर रखवा दिया।

***** समाप्त *****

sjeet

Bhayankar Jasoos Price 60 nP.
(Regd. No. 2317/57 of Registrar of Newspapers for India)

मूँछें कई प्रकार की होती हैं !

१. हिटलरी मूँछ : जिसका अस्तित्व नहीं रह गया।

२. चीनी मूँछ : जो सदैव मरे चूहे की दुम की भाँति नीचे झुकी रहती है।

३. भारतीय मूँछ : जो सदैव ऊपर उठी हुई अपने आन, बान व शान की प्रतीक है।

लेकिन इन सबसे भिन्न एक मूँछ और; उसका रहस्य

भयंकर भेदिया

के फरवरी अंक "विशेषांक" में पढ़िये !

मूछों का रहस्य

- एक असाधारण कहानी जिसमें रहस्य, रोमांच एवं रोमांस का अभूतपूर्व सङ्गम दिखाई पड़ेगा।
- इसके एक-एक पृष्ठ में रोमांचकारी घटनायें, एक-एक परिच्छेद में है दिल को दहला देने वाले घटनाचक्र।

और जो पिछले विशेषांकों से अधिक रोचक, रहस्यमय रोमांचकारी व मनोरंजक होगा।

पृष्ठ संख्या २००] [मूल्य १) मात्र

मुद्रक—शारदा प्रसाद, देश सेवा प्रेस, प्रयाग। संपादक—'जनार्दन'
प्रकाशक— भयंकर जासूस कार्यालय, विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद-१
A. H. W. February 63